ज्ञान भारती

१

"ज्ञान भारती" के सम्बन्ध में

अपनी बात

इस पुस्तक का संकलन और सम्पादन दिल्ली-प्रशासन के शिक्षा-विभाग के नये पाठ्यक्रम के अनुसार सीमित शब्दावली के आधार पर किया गया है।

पाठों का चुनाव करते समय विद्यार्थियों की अवस्था, उनके बौद्धिक विकास और रुचि का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। इसके अतिरिक्त यथासम्भव रोचक तथा ज्ञानवर्धक पाठों का ही संकलन किया गया है। हमारा विश्वास है कि इन पाठों को पढ़ने से विद्यार्थियों में अनुशासन, सच्चरित्रता, नागरिकता, देश-प्रेम, सेवाभाव, कर्मठता और स्वावलम्बन की भावना जाग्रत होगी।

पाठों के क्रम में इस बात का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है कि उनकी भाषा सरल और मुहावरेदार हो। पाठों के क्रम में सरलता पर विशेष ध्यान रखा गया है। उत्तरोत्तर भाषा और विषय का क्रमिक विकास होता गया है।

विषयों की विविधता, उपयोगिता और उपरलिखित बातों का ध्यान रखते हुए अपने-अपने विषय के विद्वान् लेखकों की रचनाओं को ही प्रस्तुत संकलन में संकलित किया गया है। कविताओं के चयन में भी सरलता और सरसता का ध्यान रखा गया है।

गद्य-पाठों में कहानी, नाटक, नागरिकता, इतिहास, भूगोल, जीवनी यात्रा, साहसिक कार्य, विज्ञान, नीति-सदाचार, संस्कृति, संस्मरण, बड़ों का बचपन और देश-प्रेम आदि विषयों का समावेश है। कविता-पाठों में देश-गीत, प्रयाण-गीत, कविता-कहानी, प्रकृति-वर्णन आदि विषयों का समावेश है।

विषय से सम्बन्धित चित्रों ने इसे और भी उपयोगी बना दिया है। प्रत्येक पाठ के अन्त में विस्तृत अभ्यास दिये गये हैं। अभ्यासों को विषय, भाषा, व्याकरण और रचना इन चार शीर्षकों में बाँट दिया गया है।

विषय सम्बन्धी प्रश्न मौखिक अभ्यास के लिए हैं। वे पाठ की आवृत्ति का काम देंगे।

भाषा शीर्षक के अन्तर्गत कठिन शब्दों के अर्थ, उनका वाक्यों में प्रयोग, मुहावरों और लोकोक्तियों सम्बन्धी प्रश्न हैं। वे लिखित अभ्यास के लिए हैं। इनसे विद्यार्थियों के शब्द-ज्ञान और अभिव्यक्ति-शक्ति में यथेष्ठ वृद्धि होगी।

व्याकरण सम्बन्धी प्रश्नों में एक क्रमिक योजना है। कक्षा के निर्धारित व्याकरण सम्बन्धी सभी प्रश्न एक विशेष क्रम द्वारा दिये गये हैं। पिछली कक्षा में पठित व्याकरण की पुनरावृत्ति करते हुए ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ा गया है।

रचना सम्बन्धी प्रश्नों में पाठ से ही सम्बन्धित विषयों पर लिखने के लिए कहा गया है। उनमें कहीं-कहीं अध्यापक के निर्देशन की भी आवश्यकता है।

ये अभ्यास पाठ को हृदयंगम कराने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ से बाहर का किन्तु पाठ से सम्बन्ध रखने वाली बातों के बारे में बताते रहें, इससे विद्यार्थियों की जिज्ञासा और कल्पना-शक्ति को बल मिलेगा।

हम उन विद्वान लेखकों, कवियों और पत्र-पत्रिकाओं के आभारी हैं, जिनकी रचनाओं द्वारा इस पुस्तक को यशस्वी काया-कलेवर मिला।

यदि यह पुस्तक अपनी निर्दिष्ट और परिमित सीमा में शिक्षा के पुनीत कार्य में उपयोगी सिद्ध हो सकी तो हम अपने प्रयत्न को सफल समझेंगे।

—सम्पादक

ज्ञा न भा र ती

भाग १

(कक्षा ६ के लिए)

सम्पादक
सन्तराम वत्स्य

रामप्रसाद एण्ड संस : आगरा

This book is approved by the Delhi Administration for use as text-book for Class VI, Subject Hindi Text and the approved price is Re. One and Twenty-one n. p. only. Any charge in excess of the approved price shall be treated as a breach of the Agreement entered into by the Publishers with the President of India.

मूल्य : एक रुपया इक्कीस नये पैसे

नयु ईरा आफसेट प्रेस दिल्ली ६

पाठ-सूची

पाठ	लेखक	पृष्ठ
१ भारतवर्ष (कविता)	मोहनलाल द्विवेदी	१
२ बच्चों के बापू	रामनाथ सुमन	३
३ भारतमाता	[संकलित]	८
४ भारत के कोने-कोने से (कविता)	डा० हरिवंशराय 'बच्चन'	११
५ समय की पाबन्दी	[संकलित]	१३
६ सबसे बड़ा शिल्पी	श्री विष्णु प्रभाकर	१९
७ एक कहानी (कविता)	मैथिलीशरण गुप्त	२३
८ राष्ट्र-ध्वज	डी० एल० आनन्दराव	२७
९ जब हम सड़क पर चलते हैं	डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	३१
१० गाँव की संध्या (कविता)	भगवतप्रसाद उपाध्याय	३६
११ राष्ट्रीय अनुशासन योजना	कृष्णकुमार गर्ग	३८
१२ बालक चन्द्रगुप्त	जयशंकर 'प्रसाद'	४२
१३ सरिता (कविता)	गोपालशरणसिंह	४६
१४ हरिजनोद्धार कार्य	डा० राजेन्द्रप्रसाद	४९
१५ क्यू	डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	५३
१६ जैसे को तैसा (कविता)	श्री सुदर्शनाचार्य	५७
१७ भगवान् बुद्ध	भदन्त आनन्द कौसल्यायन	६०
१८ संसार का विचित्र चिड़ियाघर	किशोर गर्ग, एम० ए०	६७
१९ आगे कदम (कविता)	रघुवीरशरण मित्र	७३
२० हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे ?	पं० जवाहरलाल नेहरू	७५
२१ टेलीविजन	राजमणिकम	७९
२२ दिन जल्दी-जल्दी ढलता है (कविता)	डा० हरिवंशराय 'बच्चन'	८२

पाठ		लेखक	पृष्ठ
२३	खनिज तेल की खोज	केशवदेव मालवीय	८४
२४	चन्द्रलोक की यात्रा	सुशीलकुमार	९२
२५	बापू (कविता)	श्री "स्वर्ण सहोदर"	९६
२६	क्रिकेट	[संकलित]	९८
२७	महाराणा प्रतापसिंह और भामाशा	[संकलित]	१०२
२८	राखी (कविता)	श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान	१०९
२९	हमारा पड़ोसी—नेपाल	[संकलित]	११२
३०	झाँसी वाली रानी (कविता)	श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान	११७
३१	एक साध पूरी, दूसरी अधूरी	पद्मश्री आरती साहा	१२१
३२	तब याद तुम्हारी आती है (कविता)	श्री रामनरेश त्रिपाठी	१२९
३३	समाचार-पत्र	[संकलित]	१३२
३४	सर जमशेदजी नसरवानजी ताता	परिपूर्णानन्द वर्मा	१३८
३५	जमीन दो (कविता)	दिनकर	१४५
३६	रूस में पंचायती खेती	राहुल सांकृत्यायन	१४८
३७	दोहा मानसरोवर (कविता)	[संकलित]	१५३
३८	हार की जीत	श्री सुदर्शन	१५६
३९	भिखारी (कविता)	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	१६४
४०	दो चीनी यात्री	मन्मथनाथ गुप्त	१६६
४१	हमारे राष्ट्र के उद्देश्य	श्री इन्द्र, एम० ए०	१७२
४२	मेरा गाँव (कविता)	श्री शम्भूनाथसिंह	१७७
४३	मेरी कैलाश यात्रा	स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	१८०
४४	वीर शिवाजी की चतुराई	सुरेन्द्र शर्मा	१८४
४५	ईमानदार लड़का	विष्णु प्रभाकर	१९१
४६	राष्ट्रीय गान		२०२

: १ :

भारतवर्ष

[सोहनलाल द्विवेदी]

यह भारतवर्ष हमारा है।
हमको प्राणों से प्यारा है।।

है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ,
सन्तरी सरीखा अड़ा हुआ,
गंगा की निर्मल धारा है।
यह भारतवर्ष हमारा है।।

क्या ही पहाड़ियाँ हैं प्यारी,
जिनमें सुन्दर झरने जारी,
शोभा में सबसे न्यारा है।
यह भारतवर्ष हमारा है।।

है हवा मनोहर डोल रही,
वन में कोयल है बोल रही,
बहती सुगन्ध की धारा है।
यह भारतवर्ष हमारा है।।

जन्मे थे यहीं राम सीता,
गूँजी थी यहीं मधुर गीता,
यमुना का श्याम किनारा है।
यह भारतवर्ष हमारा है।।

तन मन धन प्राण चढ़ायेंगे,
हम इसका मान बढ़ायेंगे,
जग का सौभाग्य सितारा है।
यह भारतवर्ष हमारा है॥

अभ्यास

विषय

१. हिमालय को भारत का सन्तरी क्यों कहा है ?

२. हमें अपने देश के लिए क्या करना चाहिए ?

भाषा

३. तन मन धन का क्या अर्थ है ?

४. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ :—
निर्मल, मधुर, श्याम, न्यारा।

व्याकरण

५. नीचे लिखे वाक्य में से संज्ञा और क्रिया शब्द छाँटो :—
यह भारतवर्ष हमारा है।

६. नी लिखे शब्दों में संज्ञा-भेद बताओ :—
हिमालय, कोयल, सीता, किनारा।

रचना

७. इस कविता का आशय अपनी भाषा में लिखो।

: २ :

बच्चों के बापू

[रामनाथ सुमन]

जरा उधर देखो। एक बूढ़ा आदमी लँगोटी पहने चला जा रहा है। उसके हाथ में लाठी है। सिर ऊँचा उठा हुआ है। इधर-उधर दो लड़कियाँ उसे सहारा दिये हुए हैं। आगे-पीछे छोटे-छोटे बच्चे उछलते-कूदते उसके साथ चले जा रहे हैं। कोई कूदकर जरा आगे निकल जाता है और फिर आकर उसकी लाठी छू लेता है। बच्चे ऐसे खुश हैं कि क्या पूछना !

क्या तुम बता सकते हो कि यह कौन है ? तुममें से कुछ ने इनको देखा होगा और बहुत ज्यादा बच्चों ने इनकी तस्वीर अपने

घरों में लगी या किसी पत्र-पत्रिका में छपी देखी होगी । बहुत थोड़े ऐसे होंगे, जो इनको पहचानते न हों । ऐसे बच्चे अपने साथियों से उनका नाम पूछेंगे तो वे आसानी से बता देंगे कि यह गांधी बाबा हैं, जिन्हें देश प्रेम एवं आदर से 'बापू' कहता है ।

तुम सब ने सुना होगा कि एक पागल ग्रादमी ने उनको भगवान् की पूजा-उपासना की जगह पर रिवाल्वर चलाकर मार दिया । मरते समय उनके मुँह से सिर्फ 'हे राम' निकला । राम के भगवान् के ऐसे भक्त की हत्या के समाचार से सारी दुनिया में खलबली मच गई । जिसने सुना, 'हाय-हाय' कर उठा । हमारे देश में तो उस दिन किसी के घर चूल्हा तक नहीं जला ।

बापू में बहुत-से गुण थे, जिनके लिए लोग उनका बखान करते हैं । वह कभी झूठ नहीं बोले, सदा सच बोलते और सचाई का व्यवहार करते थे । किसी को दुःख देने या जोर-जबरदस्ती से कोई काम करने-कराने के वे विरोधी थे । मार-पीट, लड़ाई-झगड़े में फायदा मालूम पड़ता हो, तो भी उसका विरोध करते थे । पर सबसे बड़ी बात यह थी कि वह बच्चों को बहुत प्यार करते थे । अपने माता-पिता के पास भी बच्चे उतने खुश नहीं रहते थे जितना उनके पास रहते थे । उनमें वह ऐसे घुल-मिल जाते थे कि कोई यह समझ न सकता था कि यही इतने बड़े नेता और महात्मा हैं । एक बार मैं अपने एक बच्चे को उनके पास पहली बार ले गया और कमरे के दर-वाजे में घुसते ही उससे कहा कि "देखो, यही बापू हैं ।" उसको आश्चर्य हुआ । विश्वास ही न होता था । आश्चर्य से उसके मुख से इतने ही शब्द निकले—"अरे ! यह बुड्ढा !" लेकिन थोड़ी देर में बापू ने उसे ऐसा अपना लिया कि वह वहाँ से हटने का नाम ही न लेता था ।

एक बार की बात है कि बापू अपने कमरे में बैठे कोई जरूरी काम कर रहे थे। एक बच्चा आता और दरवाजे के अन्दर झाँक-कर 'कू' करता और भाग जाता। बापू ने देख लिया और दोनों में प्रेम की होड़ लग गई। जब वह 'कू' कहता तो बापू जी भी 'कू' कहते और मानो किसी दूसरे ने कहा हो, ऐसा मुँह बनाकर काम में लग जाते। बहुत देर तक उन दोनों मित्रों में यह खेल होता रहा और अन्त में बच्चा थक गया।

बच्चों से वह जो चाहते, करा लेते थे। एक बार एक बच्चा उनके पास प्रणाम करने आया। प्रणाम करके उसने कुछ भेंट आगे रखी। उसके कान में सोने के गहने थे। बापू ने उसे प्यार से बैठाया। फिर पूछा, "कान छिदाने में तुम्हें आराम तो खूब मिला होगा ?" लड़का सकपकाया, बोला—"नहीं बापू जी दर्द तो खूब हुआ।" बापू बोले—"तुम्हारे कई साथी ऐसे होंगे, जिनके तन पर पूरे कपड़े भी नहीं। तुम तो अच्छे लड़के हो। क्या तुम्हें अच्छा लगता है कि तुम्हारा सखा नंगा-भूखा रहे और तुम सोना डालने के लिए कान छिदाओ ?" बच्चा बोला—"मैं क्या करूँ बापू जी ! माँ ने यह सब कराया।" गांधीजी ने माँ की ओर देखा—वह बेचारी संकोच से सिमट-सी गई थी। बापू ने बच्चे से कहा—"भाई, यह तो ठीक, पर तुम्हें अपनी गलती मालूम हो जाय, तो क्या करोगे ?" बच्चा बोला—"गलती दूर कर दूँगा।" बापू बोले—"तब क्या तुम खुशी-खुशी यह कान का आभूषण हमें उन लोगों के लिए दे सकते हो जो नंगे-भूखे हैं ?"

बच्चे ने कहा—"जरूर", और निकाल कर उनके चरणों में धर दिया।

बापू ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा—"इसी तरह

अपने दुखिया भाइयों का ख्याल रखना। तुम अच्छे लड़के हो।" बच्चा हँसता हुआ घर लौटा।

× × × ×

जब बापू हरिजनों के लिए देश का दौरा कर रहे थे तब की बात है। मैं भी उनके साथ था। शायद इटारसी की बात है। मुझे जगह की ठीक याद नहीं है। एक स्कूल में उनको मानपत्र तथा एक टोकरी सन्तरे भेंट किये गये। लोग जानते थे कि बापू फल खाते हैं, इसलिए फल लाये गये। बापू ने प्रबन्धक को बुलाया और कहा—बच्चों को बुलाओ। सब को एक-एक, दो-दो बाँट दिये। प्रबन्धक ने कहा—आप इनमें से कुछ तो अपने लिए ले लें। वह बोले मेरा पेट भर गया। बच्चों ने खाया तो मैंने ही खाया।

इस तरह की कितनी ही घटनाएँ उनके जीवन में भरी पड़ी हैं। वह बच्चों को बहुत प्यार करते थे; उनमें मिलकर उन जैसे हो जाते थे और बच्चे उनके साथ घर-बार, माता-पिता को भूल जाते थे। आज वह नहीं हैं तब उनकी बड़ी याद आती है। उनकी याद में तुमको मन में निश्चय कर लेना चाहिए कि तुम भी उनकी तरह बनने की कोशिश करोगे—बनकर रहोगे। उनकी तरह सदा सच बोलोगे, सचाई का पालन करोगे, नीच-ऊँच, जाति-पाँति, धर्म, देश का भेद-भाव हटाकर सब को प्रेम करोगे और ऐसे बनोगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे देश को अभिमान हो और तुमसे सब को लाभ पहुँचे।

अभ्यास

विषय

१. गांधीजी को बापू क्यों कहते थे ?

२. गांधीजी में क्या-क्या गुण थे ?

३. गांधीजी ने बच्चे के सोने के गहने क्यों माँगे ?

४. इस पाठ के आधार पर लिखो कि बापू बच्चों को बहुत प्यार करते थे ।

भाषा

५. वाक्यों को पूरा करो :—

(क) मरते समय उनके मुँह से सिर्फ——निकला ।

(ख) इसी तरह अपने——का ख्याल रखना।

व्याकरण

६. नीचे लिखे वाक्यों में उद्देश्य और विधेय बताओ :—

(क) उसके हाथ में लाठी है ।

(ख) बच्चा हँसता हुआ घर लौटा ।

(ग) बापू ने उसकी पीठ थपथपाई ।

७. इस पाठ के अन्तिम अनुच्छेद से संज्ञा शब्द छाँटो ।

रचना

८. 'बापू' का चित्र देखकर उनके शरीर और पहनावे का वर्णन करो ।

: ३ :

भारत-माता

[संकलित]

एक बार पं० जवाहरलाल नेहरू पंजाब के देहातों में घूम रहे थे। वहाँ के किसान उनका स्वागत करने आये थे। वे 'भारत-माता की जय' बोलते थे। जवाहरलाल जी ने उनसे पूछा, "यह भारत-माता कौन है, जिसकी तुम 'जय' बोलते हो ?" सवाल सुनकर लोग जवाहरलाल जी का मुँह ताकने लगे। कोई भी ठीक जवाब नहीं दे सका। उन अनपढ़ देहातियों की तरह हम में से भी कितने ही लोग असल में यह नहीं जानते कि 'भारत-माता' क्या है ?

हमारी माता की तरह भारत-माता कोई स्त्री नहीं है। वह कोई मंदिर में या स्वर्ग में रहने वाली देवी भी नहीं है। हम सब भारत में पैदा हुए हैं, यहाँ का अनाज खाते हैं, यहाँ का पानी पीते हैं, यहाँ की हवा में साँस लेते हैं, यहाँ की हवा, पानी, अनाज से ही हमारा पालन-पोषण होता है। हमारी मातृ-भूमि मानो अपनी माता की तरह हम सबका लालन-पालन करती है। इसलिए हम अपने भारत को 'भारत-माता' कहते हैं। हम जैसे गरीब चालीस करोड़ लोग इस 'माता' के पुत्र हैं। इन पुत्रों में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई आदि धर्मों के लोग हैं। इन सब धर्मों के लोगों ने अपनी मातृ-भूमि के वैभव को बढ़ाने में हाथ बँटाया है।

इसका इतिहास सबसे पुराना है। दुनिया के सबसे पहले 'वेद' नाम के ग्रन्थ लिखने वाले ऋषि-मुनि यहीं पैदा हुए। प्रभु रामचन्द्र

और भगवान् श्रीकृष्ण ने यहीं जन्म लिया। ग्रीस के बादशाह सिकन्दर को हराने वाले चन्द्रगुप्त, दुनिया में बौद्ध धर्म का प्रसार करने वाले सम्राट् अशोक इस भारत-माता के ही सुपुत्र हैं। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी ने भारत-माता की कीर्ति और भी बढ़ा दी है। जिस भूमि में संसार के ये सर्व-श्रेष्ठ व्यक्ति पैदा हुए, वही है हमारी भारत-माता !

प्रकृति देवी भारत-माता पर प्रसन्न है। हिमालय जैसा दुनिया का सबसे ऊँचा पहाड़ इसके सिरहाने खड़ा है। कश्मीर तो इतना सुन्दर है कि उसे 'दुनिया का नन्दनवन' कहा जाता है। दक्षिण के मलयालम का सौन्दर्य भी अनोखा है। दुनिया में सबसे ज्यादा बरसात इसी के एक कोने में—असम में—होती है। सब तरह के अनाज, फल और फूल, वनस्पतियाँ और धातुएँ यहाँ मिलती हैं। गिरसप्पा जैसा दुनिया का सबसे ऊँचाई से गिरने वाला झरना इसी में है।

अजन्ता की गुफाओं, दक्षिण के मन्दिरों और ताजमहल जैसे शिल्पकला के नमूने दुनिया में और कहीं देखने को नही मिलेंगे। यहाँ का वैभव, सौन्दर्य और दौलत देखकर तो दुनिया इस भूमि को 'सुवर्ण-भूमि कहती थी। यही 'सुवर्ण-भूमि' है हमारी 'भारत-माता'।

मगर बीच के जमाने में हम सुस्त रहे। आपस की फूट, अज्ञान, लापरवाही आदि के कारण इसके पुत्रों को हार खानी पड़ी। अंग्रेजों ने उनको गुलाम बनाया। मगर दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी जैसे सुपुत्रों ने उसकी आजादी के लिए आन्दोलन किया। सब लोगों ने उनका साथ दिया और १५ अगस्त १९४७ को भारत-माता आजाद हुई।

अब भारत की हमें उन्नति करनी चाहिए। उसका वैभव

फिर से बढ़ाना चाहिए। जब हम अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे, तभी भारत-माता का सम्मान सारी दुनिया करेगी।

अभ्यास

विषय

१. बताओ, भारत-माता कौन है, जिसकी तुम जय बोलते हो ?
२. भारत में पुराने समय में कौन-कौन से महापुरुष हुए हैं ?
३. भारत कैसे और कब स्वतन्त्र हुआ ?

भाषा

४. "मुँह ताकना"—इस मुहावरे का भावार्थ बताओ।
५. वैभव, कर्त्तव्य, सम्मान, अज्ञान, वनस्पति—इन शब्दों के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण

६. नीचे लिखे शब्दों के बहुवचन रूप लिखो :—
उसका, वह, यह, मुझे।
७. नीचे लिखे अधूरे वाक्यों में संज्ञा शब्द जोड़ो :—
(क)——कोई स्त्री नहीं है।
(ख)——ने यहाँ जन्म लिया।
(ग)——ने उनसे पूछा।

रचना

८. "मेरा देश" विषय पर १० पंक्तियाँ लिखो।

भारत के कोने-कोने से

[डा० हरिवंशराय 'बच्चन']

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आये हैं।
नई उमंगों आशाओं का हम संदेशा लाये हैं॥

हम गिरि की ऊँचाई लाये
हम सागर की गहराई
हम पूरब से आये, लाये
प्रात-किरण की अरुणाई।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आये हैं।
नई उमंगों आशाओं का हम संदेशा लाये हैं॥

हम पच्छिम से आये, लाये
आग - राग राजस्थानी,
हम लाये हैं गंग-जमुन के
संगम का निर्मल पानी।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आये हैं।
नई उमंगों आशाओं का हम संदेशा लाये हैं॥

कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलायेंगे,
भारत के ऊँचे माथे को
ऊँचा और उठायेंगे।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आये हैं।
नई उमंगों आशाओं का हम संदेशा लाये हैं॥

अभ्यास

विषय

१. गंगा-यमुना का संगम किस स्थान पर होता है ?

२. हिमालय किस दिशा में है ?

३. भारत के पूर्व में कौन-सा प्रदेश है ?

४. "भारत के ऊँचे माथे को, ऊँचा और उठायेंगे।" इससे क्या समझते हो ?

भाषा

५. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो :—

गिरि, उमंग, अरुणाई, प्रात-किरण ।

६. 'ऊँचा उठाना' का भावार्थ बताओ ।

व्याकरण

७. जैसे राजस्थान से राजस्थानी शब्द बना है, ऐसे पाँच शब्द बनाओ ।

८. नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम बताओ :—

हम संदेशा लाये हैं।

हम पच्छिम से लाये ।

: ५ :

समय की पाबन्दी

[सम्पादक]

गोसाईं तुलसीदास जी ने कहा है—"का बरखा जब कृषी सुखाने।" खेती सूखकर नष्ट हो गई, अब यदि मेंह बरसा तो किस काम का !

आपका प्रयत्न, आपका परिश्रम तभी सफल होगा, यदि आप उसे समय पर करेंगे। आपने देर की, आप चूके कि बात बिगड़ी। हर काम का समय होता है, हर बात का समय होता है। जो लोग समय को नष्ट करते हैं, समय उनको नष्ट कर देता है और जो समय को बचाते हैं—उसका पूरा-पूरा उपयोग करते हैं—समय उन्हें बचा लेता है।

आप एक बार अपनी आदत बना लीजिए कि मैं कभी किसी काम को अगले दिन के लिए टालने का यत्न नहीं करूँगा, आज का काम आज ही समाप्त कर दूँगा। फिर देखिए कि आपके पास कितना समय बच जाता है और सारे काम कितने अच्छे ढंग से पूरे होते हैं। समय पर काम करने वाला मनुष्य समय गँवाकर काम करने वाले की अपेक्षा दुगुना-चौगुना काम कर लेता है।

हममें कुछ ऐसी ढिलाई आ गई है, आदतें कुछ ऐसी बिगड़ गई हैं कि हम नियम-पालन को एक झंझट समझते हैं। हममें से कुछ ऐसे मूर्ख भी हैं, जो समझते हैं कि समय पर काम करने का कुछ भी महत्त्व नहीं है। उल्टे वे इसमें अपना अनादर समझते हैं। शाम के चार बजे एक सभा होने वाली है। व्याख्यान देने

वाले महाशय जी को ठीक चार बजे व्याख्यान करने के लिए कह रखा है। जलसे के प्रोग्राम का ढिंढोरा पिटवा दिया गया है।

ठीक चार बजे लोग आ गये। किन्तु व्याख्यानदाता महाशय का कुछ पता नहीं। प्रबन्धकों की परेशानी का अनुमान लगाइए। वे बार-बार माइक पर आकर जनता से कहते हैं—बस, अब प्रोग्राम शुरू होने वाला है। वक्ता महानुभाव आते हैं आध घण्टे बाद। वह समझते हैं कि हमारी बड़ाई इसी में है कि लोग बैठे बे-सबरी से इन्तजार करें। प्रबन्धक परेशान हों। और फिर देर बाद जब वे आयें, लोग उनके लिए पलकें बिछा दें। ऐसा विचार केवल मूर्खता प्रकट करता है।

कुछ छात्र कभी समय पर पाठशाला नहीं पहुँचते, समय पर पुस्तकालय की पुस्तकें नहीं लौटाते। बस या गाड़ी पर कहीं जाना हो तो समय पर नहीं पहुँचते। जब देखें, तभी लेट। ऐसे लोगों को जब देखो, भागते नजर आयेंगे। पर शायद वे नहीं जानते कि "दौड़ना बेकार है। मुख्य बात तो समय पर निकलना है।"

मेरे एक परिचित हैं। उन्होंने अपनी इसी बुरी आदत के कारण अपनी टाँगें तुड़वा ली हैं। अब बेचारे जीवन भर के लिए दूसरों के मोहताज हो गये हैं। हुआ यह कि उन्हें एक आवश्यक कार्य से दूसरे शहर जाना था। उन्हें गाड़ी के छूटने का समय मालूम था। पर समय के वे कभी पाबन्द नहीं हुए और रेलगाड़ी देर से आने वालों के लिए रुकती नहीं। वे प्लेटफार्म पर पहुँचे ही थे कि गाड़ी छूट गई। उन्होंने भागकर चलती गाड़ी पर चढ़ने का प्रयत्न किया और गिर पड़े। दोनों टाँगें कुचली गईं। अब पछताते हैं।

जो वायदा करो, मन में जो निश्चय करो, उसे अवश्य

पूरा करो। आप किसी से कहते हैं कि मैं कल १० बजे आपके पास आऊँगा। किन्तु पहुँचते नहीं। उधर दूसरा आदमी बैठा ११ बजे तक आपकी प्रतीक्षा करता रहता है। दूसरे दिन आप याद न रहने का बहाना करके क्षमा माँगने लगते हैं। यह अच्छी बात नहीं है।

बहुत से लोग. यदि उन्हें किसी काम में देर हो जाती है तो कहने लगते हैं कि इस बार देर हो गई, किन्तु मैं भविष्य में कभी देर नहीं करूँगा। यह पहला अवसर था, इस बार तो क्षमा कीजिए। ऐसे लोग भूल करने और क्षमा माँगने के अभ्यस्त हो जाते हैं। वे हर बार भूल करेंगे और हर बार क्षमा माँगने लगेंगे।

इस प्रकार झूठे वायदों से खुद को और दूसरों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

यदि जीवन में कुछ बनना चाहते हो, कुछ कर दिखाना चाहते हो तो जिस काम के लिए जो समय निश्चित करो, उसी समय उसे कर डालो। यदि प्रातः ५ बजे उठने का निश्चय करके सोते हो, तो ठीक ५ बजे बिस्तर छोड़ दो। यदि किसी से ५ बजे मिलने का प्रोग्राम है तो ठीक ५ बजे पहुँच जाओ। न पहले न पीछे।

आज हमारे देश की यह दशा है कि कोई भी कार्यक्रम हो, उसका प्रोग्राम बनाते समय प्रबन्धक सोचते हैं कि ठीक प्रोग्राम शुरू होने के समय से एक घण्टा पहले का समय जनता को बताया जाये क्योंकि लोग प्रायः घण्टा भर लेट आते हैं। दूसरी ओर लोग सोचते हैं कि जो समय लिखा है, उस समय तो प्रोग्राम शुरू होगा नहीं, घण्टा भर लेट ही शुरू होगा, इसलिए आगे जाकर क्या करेंगे। प्रबन्धकों को व्याख्यान देने वालों और श्रोताओं पर भरोसा नहीं है कि वे समय पर आ जायेंगे। व्याख्यान देने

वालों को प्रबन्धकों और श्रोताओं पर विश्वास नहीं है। और श्रोताओं को प्रबन्धकों और व्याख्यान देने वालों के समय पर कार्यक्रम चालू करने का विश्वास नहीं है। यह है हमारे देश-वासियों का राष्ट्रीय चरित्र! कितनी लज्जा की बात है कि हम एक-दूसरे को झूठा समझते हैं, और एक-दूसरे का विश्वास नहीं करते। हमारे कुछ साथी तो जब किसी काम में घण्टे-दो घण्टे की देर करते हैं और उन्हें कहा जाता है कि ऐसा क्यों किया ?' तो हजरत बड़ी शान से फरमाते हैं कि यह देशी टाइम है। समय पर काम न करना जैसे हमारे राष्ट्रीय चरित्र का अंग हो !

मेरे एक सहकर्मी हैं, वे हमेशा हर काम में लेट हो जाते हैं किन्तु इसका कारण वे सदा यही बताते हैं कि उनके पास घड़ी नहीं है। घड़ी हो तो वे कभी लेट न हों। इनसे एक दिन मैंने पूछ हीं लिया—मित्र, घडी न होने से कभी-कभी ऐसा भी तो होना चाहिए कि समय से बहुत पहले ही आ पहुँचो। पर वे क्यों मानने लगे। बाद में उन्हे कुछ सुविधा हुई तो उन्होंने घड़ी खरीद ली। और कहने लगे—अबैं देखना, अब मैं ठीक समय पर आया करूँगा। किन्तु फिर भी लेट। मैंने पूछा—मित्र, अब सुनाओ, अब लेट आने का क्या कारण है ? तो चुप।

कहने और दिखाने के लिए आज हजारों लोगों के पास घड़ियाँ हैं। परन्तु कितने ऐसे है जो उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाते हों ?

छात्रावस्था में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि सब काम ठीक समय पर किये जायँ। पढ़ने-लिखने का, खाने-पीने का, खेलने-कूदने का, टहलने-घूमने का और सोने-जागने का समय निश्चित कर लेना चाहिए।

यह मानी हुई बात है कि जो छात्र अपना कार्य निश्चित समय पर करते हैं, वे कभी फेल नहीं होते।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमारे सामने दो काम होते हैं। उनमें एक काम करना आवश्यक होता है और दूसरे को करने को जी चाहता है। अब हम सोचते हैं कि पहले कौन-सा करें ? ऐसे अवसर पर बिना किसी सोच-विचार के हमें आवश्यक कार्य को करने के पक्ष में फैसला करना चाहिए।

मान लीजिए कि आपको गणित कम आता है और हिन्दी बहुत अच्छी आती है।

आपने एक समय-विभाग बनाया। उसमें प्रातः सात से आठ बजे तक का समय हिन्दी के लिए रखा और आठ से नौ तक का गणित के लिए। परन्तु जब आठ बजते हैं और गणित का समय आता है तो आपका मन उसे पढ़ने को नहीं करता।

हिन्दी की पुस्तकों में मन खूब लगता है और उन्हें छोड़ने को जी नहीं चाहता। आप हिन्दी पढ़े जाते हैं और सोचते हैं कि यह पाठ पूरा हो जाय तो फिर गणित पढ़ूँगा या आज तो हिन्दी में खूब मन लग रहा है, इसलिए आज हिन्दी पढ़ लेता हूँ, कल उतना ही अधिक समय गणित पढने में लगा दूँगा। दूसरे दिन भी कोई नया बहाना ढूँढ़ लेते हैं और दूसरे दिन सोचते हैं कि खैर, आज का दिन तो गया, पर कल से गणित शुरू करेंगे। और प्रतिदिन ऐसा ही होता है। जिस विषय में रुचि नहीं होती, वह पीछे पड़ता जाता है और बाद में वह छात्र भी अपने सहपाठियों से पिछड़ जाता है। जब जिस काम का समय आये, बाकी सब कामों को छोड़कर उस समय उसमें लग जाना चाहिए। कुछ दिन लगातार इस तरह करते रहने से मन अपने आप लगने लगता है।

अभ्यास

विषय

१. समय पर काम करने से क्या लाभ हैं ?

२. किसी कार्यक्रम के बारे में प्रबन्धक, व्याख्याता और श्रोता क्या सोचते हैं और क्यों ?

३. हमें पहले आवश्यक काम करना चाहिए या अपनी पसन्द का ?

भाषा

४. "दौडना बेकार है, मुख्य बात तो समय पर निकलना है।" इसकी व्याख्या करो।

५. "जो समय को नष्ट करते हैं, समय उनको नष्ट कर देता है।" इसका भावार्थ बताओ।

६. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—

अनादर, मूर्खता, प्रतीक्षा, अवसर, अभ्यस्त।

व्याकरण

७. नीचे लिखे शब्दों में संज्ञा-भेद बताओ :—

मूर्खता, देश, घड़ी, तुलसीदास।

८. नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम बताओ :—

(क) यह अच्छी बात नहीं है।

(ख) उन्हें गाड़ी छूटने का समय मालूम था।

रचना

९. 'समय की पाबन्दी' विषय पर एक छोटा-सा निबन्ध लिखो।

: ६ :

सबसे बड़ा शिल्पी

[विष्णु प्रभाकर]

सुलेमान का प्रसिद्ध मन्दिर बनकर तैयार हो चुका था। उसके उपलक्ष में अब भोज की तैयारियाँ हो रही थीं। वह भोज मन्दिर का निर्माण करने वाले सभी प्रमुख कारीगरों और शिल्पियों के सम्मान में दिया जाने वाला था। भोज के लिए जो स्थान चुना गया था वह उन्हीं के अनुरूप भव्य और कला-पूर्ण था। नील-गगन के नीचे एक विस्तृत और सुरम्य चँदोबा लगाया गया था और महाराज के सिंहासन के दोनों ओर कुमुदिनी तथा दाड़िम से अंकित काँसे के स्तम्भ थे। पदार्थों के चुनाव में भी सुरुचि, स्वास्थ्य और स्वाद का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था। सौन्दर्य और कला के प्रतीक मन्दिर की भाँति वह भोज भी सुलेमान के वैभव का प्रतीक था।

प्रायः सभी अतिथि आ चुके थे और वातावरण मौन गूँज से गुंजारित था। सभी प्रसन्न थे और एक-दूसरे का हार्दिक अभिवादन कर रहे थे; परन्तु इस हर्ष और प्रफुल्लता के बीच उनकी दृष्टि रह-रह कर एक विशिष्ट दिशा की ओर उठ जाती थी। महाराज के दाहिनी ओर एक स्थान अभी खाली था। वह सबसे प्रतिष्ठित कलाकार के लिए सुरक्षित था। इसलिए अपने आपको सुवासित भोज्य-पदार्थों के बीच पाकर भी अतिथियों की जिज्ञासा शान्त नहीं हुई थी, वे रह-रह कर फुसफुसा उठते थे और उस फुसफुसाहट का अर्थ था—इस स्थान पर कौन भाग्यशाली बैठेगा ?

निर्जीव पत्थरों में दिव्यदूतों को अंकित करने वाला संगतराश सोचने लगा—"क्या मैं ही इस प्रतिष्ठा का अधिकारी नहीं हूँ ?"

"यह स्थान सम्भवतः मेरे लिए सुरक्षित है।"—स्वर्ण की छत बनाने वाले ने मन-ही-मन कहा।

इसी प्रकार सुन्दर दीवारों का निर्माण करने वाला और वह जिसने देवदार के आभूषण बनाये थे और सब दूसरे शिल्पी अपने-अपने को ही सर्वश्रेष्ठ शिल्पी मानने लगे।

और भोज का क्रम चल रहा था।

सहसा द्वार पर आहट हुई। शान्त वातावरण आलोड़ित हो उठा।

"कौन है ?"—सुलेमान ने पूछा।

उत्तर में एक विचित्र और भद्दे-से व्यक्ति ने वहाँ प्रवेश किया। सभी की दृष्टि उसकी ओर उठी और दूसरे ही क्षण तिरस्कार की भावना से झुक गई। त्यौरियाँ चढ़ाकर महाराज ने क्रुद्ध स्वर में पूछा—"तुम कौन हो ?"

आगन्तुक ने उत्तर दिया—"श्रीमान् ! मैंने सुना है, आप सबसे बड़े शिल्पी की खोज में हैं। मैं उसी सम्बन्ध में आया हूँ।"

सभा पर जैसे वज्रपात हुआ। दृष्टियाँ फिर उठीं। उनमें कौतूहल था, विस्मय था, तिरस्कार था और था भस्म करने वाला क्रोध। पवित्र देवदूतों को जिसने अंकित किया था, सबसे पहले वही घृणा से भरकर बोला—"मैं इसे नहीं जानता।"

"और मैं भी नहीं।"—सोने की छत बनाने वाले ने उसी तीव्र घृणा से कहा।

"मैं भी नहीं।"—सुन्दर दीवारों का निर्माण करने वाला और भी तीव्रता से चिल्लाया।

देवदार के आभूषण बनाने वाला भी नहीं चूका। उसने भी चिल्लाकर कहा—"नहीं, मैं भी नहीं।"

फिर तो एक के बाद एक तीव्र और घृणा-भरे स्वर चीख उठे—"नहीं, हम इसे नहीं जानते।"

महाराज क्रोध से काँप उठे। बोले—"मैं पूछता हूँ, तुम्हें पत्थरों और कोड़ों से क्यों न मार डाला जाय ?"

वह विचित्र व्यक्ति इन बातों से जरा भी विचलित नहीं हुआ। महाराज का प्रश्न सुनकर वह उसी विश्वास के साथ आगे बढ़ा और बोला—"यहाँ पर सभी प्रसिद्ध कारीगर और शिल्पी उपस्थित हैं। मैं उनसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

क्षणिक सन्नाटे के बाद महाराज ने कहा—"पूछो, क्या पूछना चाहते हो ?"

"मैं पूछना चाहता हूँ, आपके इन शिल्पियों के वे औजार, जिनसे इन्होंने इस भवन का निर्माण किया है, किसने बनाये थे ?"

"किसने बनाये थे ?" कई शिल्पी एक साथ बोल उठे—"वाह, वह तो लुहार है।"

आगन्तुक उसी शान्ति से बोला—"तो मैं वही लुहार हूँ। यदि मैं अपनी धुएँ से भरी हुई भट्टी के पास बैठकर मेहनत न करता तो आप लोग सौन्दर्य और कला को कैसे रूप दे पाते !"

दृष्टियाँ फिर उठीं, पर इस बार उनमें न विस्मय था, न क्रोध, और न तिरस्कार। उनमें थी पराजय और थी उसकी महानता की मूक-स्वीकृति।

सुलेमान ने क्षण भर विस्मय और हर्ष से आगन्तुक को देखा और फिर गुरु गम्भीर स्वर में कहा—"आओ, और मेरे दाहिनी ओर इस खाली जगह पर बैठ जाओ।"

(एक हिब्रू गाथा)

अभ्यास

विषय

१. बादशाह सुलेमान लुहार को देखकर पहले क्रुद्ध क्यों हुआ और फिर उसे अपनी दाहिनी ओर क्यों बिठाया ?

२. सुलेमान ने भोज किस लिए दिया ?

भाषा

३. "यह भोज भी सुलेमान के वैभव का प्रतीक था।" इस वाक्य का अर्थ बताओ।

४. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोश में देखकर अपनी कापी में लिखो :—

सुरुचि, हार्दिक, प्रतिष्ठित, निर्जीव।

व्याकरण

५. इस पाठ में से दस क्रियाएँ ढूंढ़कर कापी में लिखो।

६. 'सबसे बड़ा शिल्पी'—इस वाक्य में सर्वनाम, विशेषण और संज्ञा शब्द बताओ।

७. सर्वनाम किसे कहते हैं, बताओ।

रचना

८. इस कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखो।

: ७ :

एक कहानी

[मैथिलीशरण गुप्त]

"माँ, कह एक कहानी"
"बेटा समझ लिया क्या तूने
मुझ को अपनी नानी ?"
"कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी,
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी ?"
"राजा था या रानी
माँ, कह एक कहानी।"
"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।"
"जहाँ सुरभि मनमानी ?
हाँ, माँ, यही कहानी।"
"वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिन्दु झिले थे,
हलके झोंके हिले मिले थे,
लहराता था पानी।"
"लहराता था पानी ?
हाँ, हाँ, यही कहानी।"

"गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा विद्ध होकर खर-शर से,
हुई पक्ष की हानि !"

"हुई पक्ष की हानि ?
करुणा-भरी कहानी !"

"चौंक उन्होंने उसे उठाया
नया जन्म-मा उसने पाया,
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य-सिद्धि का मानी ।"

"लक्ष्य-सिद्धि का मानी ?
कोमल-कठिन कहानी ।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी,
तब उसने, जो था खग भक्षी,
हठ करने की ठानी ।"

"हठ करने की ठानी ?
अब बढ़ चली कहानी ।"

"हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी ।"

"सुनी सभी ने जानी ?
व्यापक हुई कहानी ।"

"राहुल, तू निर्णय कर इसका,
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका
सुन लूँ तेरी बानी।"

"माँ, मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी।"

"कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे ?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।"

"न्याय दया का दानी ?
तू ने गुनी कहानी।"

अभ्यास

विषय

१. हंस को बचाने वाले और तीर से घायल करने वाले में झगड़ा क्यों हुआ ?

२. तुम्हारे विचार में हंस किसे मिलना चाहिए और क्यों ?

भाषा

३. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—

चेटी, मानधन, उपवन, तात, सुरभि, खग, खर-शर।

४. नीचे लिखे पद्यांश की व्याख्या करो :—

इतने में आखेटक आया
लक्ष्य सिद्धि का मानी

व्याकरण

५. नीचे लिखे दो-दो शब्दों में विशेषण और विशेष्य बताओ :—

आहत पक्षी, कलकल स्वर, करुण कहानी ।

रचना

६. इस कविता में वर्णित कहानी को अपने शब्दों में लिखो ।

निर्देश

भगवान् बुद्ध की जीवनी पुस्तकालय से लेकर पढ़ो ।

: ८ :

राष्ट्र-ध्वज

[डी० एल० आनन्दराव]

प्रत्येक देश का एक झण्डा होता है। वह झण्डा उस देश के गौरव और मान का प्रतीक होता है। जब तक उस देश में शक्ति होती है वह झण्डा शान से लहराता है। जब देश शक्ति-हीन और गुलाम हो जाता है तो उसे अपना झण्डा फहराने का अधिकार नहीं रहता।

भारतवर्ष को जब स्वतन्त्रता मिली तो उसके साथ उसे यह अधिकार भी मिला कि उसका राष्ट्रीय झण्डा उन सभी स्थानों पर लहरायेगा जहाँ अंग्रेजों का यूनियन जैक था।

भारतीय जनता को अपना झण्डा देने का श्रेय विश्ववंद्य बापू को ही है। प्रथम महायुद्ध के बाद गांधीजी ने व्यथित भारत को धैर्य और आत्म-सम्मान का ज्ञान दिया। उन्होंने चरखा-मंडित लाल, हरा और सफेद रंग का तिरंगा झण्डा राष्ट्र को प्रदान किया, जिसमें देश ने अपना खोया हुआ वैभव पाया।

भारत में राष्ट्रीय झण्डा बनाने के प्रयत्न में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने लाल और हरे रंग का झण्डा बनाया। लाल रंग हिन्दुओं का था और हरा रंग मुसलमानों का, क्योंकि भारत में हिन्दू-मुस्लिम एकता की बड़ी आवश्यकता थी।

लेकिन जब भारतीय राजनीति में गांधीजी आये, उस समय भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम ने नया रूप धारण किया। गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। यूनियन जैक

पहले ही हट चुका था, लेकिन अब दूसरे झण्डे की आवश्यकता थी, जो देश की आजादी की लड़ाई में फहराता। इसलिए राष्ट्रीय झण्डे के सम्बन्ध में काँग्रेस ने विचार किया और लाल, सफेद और हरे रंग का तिरंगा झण्डा बनाया गया। साथ ही झण्डे के बीच में चरखा बनाया गया जो भारत के गरीब किसान-मजदूरों का चिह्न था। सन् १९३१ तक वही झण्डा काँग्रेस का झण्डा बना रहा। काँग्रेस के आन्दोलन इस झण्डे के नीचें हुए। इस झण्डे के लिए काँग्रेस ने सत्याग्रह भी किया।

सन् १९३१ के कराँची अधिवेशन में काँग्रेस ने देश का एक झण्डा नियत करने का निश्चय करने के उद्देश्य से झण्डे का निर्माण करने के लिए एक कमेटी बनाई। इस कमेटी ने जिस झण्डे की रूप-रेखा बनाई, उसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग थे। बीच में सफेद रंग था जिस पर चरखा बना था, जो सन् १९३१ के ३१ अगस्त को समस्त भारत में फहराया गया। यह झण्डा तब से १४ अगस्त, १९४७ तक भारत का राष्ट्रीय झण्डा रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर राष्ट्रीय झण्डे का प्रश्न फिर उठा। चरखे के स्थान पर अशोक-चक्र के चिह्न को रखते हुए स्वतन्त्र भारत की सरकार ने तिरंगे झण्डे को देश का राष्ट्रीय झण्डा घोषित किया। चक्र सारनाथ के अशोक-स्तम्भ से लिया गया है। अशोक-स्तम्भ ईसा से ३०९ वर्ष पूर्व बना था। महाराजा अशोक ने अहिंसा, शान्ति, न्याय और धर्म के सिद्धान्तों पर अपना साम्राज्य स्थापित किया था। इस प्रकार राष्ट्रीय झण्डे पर जो चक्र है उसका सांस्कृतिक महत्त्व है। वह हमारे अतीत के गौरव की याद दिलाता है।

चक्र का यदि आधुनिक अर्थ लिया जाय तो वह प्रगति

का चिह्न है। वर्तमान वैज्ञानिक काल में, जबकि तीव्र गति से संसार बढ़ रहा है, और नये-नये आविष्कारों द्वारा समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, उस समय यह चक्र हमें याद दिलाता है कि गति ही जीवन है। इसलिए आगे बढ़ते चलो, बढ़ते चलो !

इस चक्र में जो शलाकाएँ हैं वे सूर्य की किरणों के समान हैं। अतः ये जीवन में प्रकाश के स्वरूप हैं और हमें सदा इस बात के लिए प्रोत्साहित करती हैं कि हम अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर अग्रसर हों।

२२ जुलाई, सन् १९४७ को विधान परिषद् में झण्डा प्रस्तुत करते हुए माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू ने अत्यन्त मार्मिक शब्दों में कहा था—"यह झण्डा स्वतन्त्रता का सच्चा प्रतीक है। यह हमारे लिए ही नहीं, बल्कि सब के लिए स्वतन्त्रता का सूचक है। जहाँ भी यह झण्डा जायगा, इसके द्वारा स्वतन्त्रता, आशा और बन्धुत्व का सन्देश हम संसार के विभिन्न देशों में पहुँचायेंगे। इस झण्डे के द्वारा हम यह सन्देश देंगे कि भारत सारे संसार का मित्र होकर रहना चाहता है, और जो देश गुलाम हैं, उन्हें आजाद होने में सहायता पहुँचाना चाहता है। यह झण्डा आजादी, दोस्ती, आशा और बन्धुत्व का प्रतीक है। यह झण्डा हमारा गौरव है।"

अभ्यास

विषय

१. हमारे देश के झण्डे में जो अशोक-चक्र है, उसका क्या अभिप्राय है ?

२. चक्र वाला झण्डा कब बना ?

३. झण्डे में कौन-कौन से रंग हैं और उनका क्या अभिप्राय है ?

४. झण्डे का महत्त्व बताओ ।

भाषा

५. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ :—

गौरव, प्रतीक, व्यथित, आत्म-सम्मान, एकता ।

६. इस पाठ के अन्तिम पैराग्राफ की व्याख्या करो ।

व्याकरण

७. सहायता, प्रगति, परिषद्—इन शब्दों का वाक्यों में इस तरह प्रयोग करो कि इनका लिंग स्पष्ट हो जाय ।

८. मैं, तू, वह—इनके बहुवचन के रूप लिखो ।

९. इस पाठ में से पाँच सर्वनाम शब्द ढूँढ़ो ।

रचना

१०. देश के झण्डे के सम्बन्ध में १५ पंक्तियाँ लिखो ।

: ६ :

जब हम सड़क पर चलते हैं

[डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी]

हमने एक शिक्षाप्रद कहानी पढ़ी है। एक बार एक पतले-से पुल पर दो बकरियाँ चली जा रही थीं। वे आमने-सामने यानी विपरीत दिशाओं में जा रही थीं। रास्ता एक ही के चलने योग्य था। यदि दोनों साथ-साथ चलने की चेष्टा करें तो दोनों ही नीचे नदी में जा गिरें। तुरन्त ही एक लेट गई और दूसरी उसके ऊपर होकर निकल गई।

ऐसे अवसर पड़ने पर जानवर भी बुद्धिमत्ता और सहनशीलता से काम लेते हैं; परन्तु हम मनुष्य अपने अधिकारों के मिथ्या अभिमान में पड़कर झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं।

सड़क पर चलते समय हम शायद ही कभी और लोगों का ध्यान रखते हों। मुँह उठाये बेफिक्री के साथ चाहे जिस प्रकार आड़े-तिरछे चलते चले जाते हैं। न यह देखते हैं कि सामने से कौन आ रहा है और न यह सुनते हैं कि हमारे पीछे इक्के अथवा ताँगे वाला चिल्ला रहा है या मोटर वाला भोंपू बजा रहा है। इस प्रकार लापरवाही से चलने के कारण अथवा बिना देखे-भाले सड़क पार करते समय बहुत-सी दुर्घटनाएँ भी घट जाती हैं। बड़े-बड़े शहरों में, जहाँ यातायात बहुत रहता है, शायद ही कोई दिन जाता हो जिस दिन इस प्रकार की दुर्घटनाओं के कारण ४-५ मौतें न हो जाती हों।

सवारी हाँकने वाले हमसे अधिक लापरवाह होते हैं। जितनी बड़ी सवारी होगी, उसका चलाने वाला उतना ही

अधिक लापरवाह और बेफिक्री से चलने वाला होगा। साइकिल वाले पैदल चलने वालों को कुछ नहीं समझते, चाहे जितनी भीड़ में साइकिल चलाते चले जाते हैं। ५० आदमियों के बीच में होकर साइकिल पर चढ़कर जाना वे गर्व की बात समझते हैं। ताँगे वाला साइकिल वाले को कुछ नहीं समझता। ताँगा दायें-बायें किधर ही चले और किधर ही मुड़े—हटे साइकिल वाला, क्योंकि दोनों की टक्कर होने पर ताँगे का कुछ भी न बिगड़ेगा। इसी प्रकार मोटर के सामने से ताँगा हटे और बैलगाड़ी अथवा मोटर ठेले के रास्ते में से मोटर हटे। बैलगाड़ी और मोटर ठेले में कौन हटे हम नहीं कह सकते, क्योंकि दोनों की टक्कर बराबर की है। इस प्रकार पग-पग पर हम पशु-बल का प्रदर्शन करते चलते हैं। हम अधिक बलवान् हैं, अत. हमारे सामने कोई न आवे, चले तक नहीं। बहुत-से अवसरों पर साँड़ भले ही गाय के लिए रास्ता छोड़ दे, परन्तु हम अपने से निर्बल व्यक्ति को आसानी से न जाने देंगे। आपने तगड़े व्यक्तियों को सड़क पर चलते देखा होगा। वे किस प्रकार झूम-झूम कर हाथ-पैर हिलाते तथा कुंडे तौलते हुए चलते हैं। इस प्रकार चलते हुए किसी में हाथ लग जाना तो एक साधारण-सी बात है।

हमारी समझ में नहीं आता कि हम लोगों ने क्यों अपने व्यवहारों को इतना अनुत्तरदायित्वपूर्ण बना रखा है? जब नागरिक नियम है कि सब अपने बायें हाथ की ओर चलें तो क्या आवश्यकता है कि हम बीच सड़क पर ऊपर की ओर मुँह उठा कर चलें अथवा सड़क के सीधी ओर अपना ताँगा ले जायें? इसका केवल एक ही कारण है: हमने नागरिकता के नियमों का सम्मान करना कुछ नहीं सीखा है। बाजार में

अथवा किसी अन्य सड़क पर जब मैं कुत्ते अथवा गायों की भाँति आदमियों को इधर-उधर चाहे जिधर चलते अथवा भागते हुए देखता हूँ तो मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि— "पशुओं पर जड़ता अथवा नीचता का आरोप हम क्यों करते हैं, जब सड़क पर चलते समय गाना गाकर अथवा सीटी बजा कर हम जानवरों की सी सड़क पर चिल्लाने वाली दूसरी मनोवृत्ति का परिचय दे देतें हैं।"

आपने देखा होगा कि बहुत-से व्यक्ति तनिक-सा मौका पाकर तुरन्त ही इधर-उधर रखी हुई अथवा पड़ी हुई चीजों को गायब कर देते हैं। चुगी की लालटेनों की चिमनी तथा उन लालटेनों के तेल की अक्सर चोरी हुआ करती है और इस काम को बड़े-बड़े शरीफ कहलाये जाने वाले व्यक्ति तक कर डालते हैं। बिजली के बल्बों तक हम आसानी से पहुँच नहीं पाते, तो ईंट मारकर तोड़ ही डालते हैं। जानवरों की भी यही दशा होती है। जो चीज मिली, उसमें मुँह डाला अथवा लेकर भागे; कुछ भी न बन पड़ा, तो उसे गिरा दिया अथवा फोड़ दिया। कुत्ता, बिल्ली, बन्दर, चूहे, गाय, बकरी आदि में किसी को देख लीजिए। तब हम तथाकथित सभ्य मानवों और पशुओं में सिवाय स्वरूप के क्या भेद रह जाता है?

वस्तुतः हम यह जानते ही नहीं हैं कि चार आदमियों में किस प्रकार बोलें, किस प्रकार चलें, किस प्रकार उठें-बैठें, आदि। हमारा तो यह निश्चित मत है कि एक सभ्य एवं योग्य नागरिक बनना हमारा सबसे बड़ा धर्म और सबसे पहला कर्त्तव्य है। बिना इसके हमारा कल्याण सम्भव नहीं। "देश के प्रत्येक निवासी की नागरिकता देश के नैतिक स्तर का निर्माण करती है।" यह बात हमें हर समय याद रखनी चाहिए। "हमारे

ही अकेले के करने से क्या होता है ?" यह विचारधारा भ्रामक एवं घातक है। यदि सभी व्यक्ति ऐसा सोचकर चुप बैठ जायें तो, और ऐसा विचार कर सभी करने लग जायें तो, इन दो बातों में आकाश-पाताल का अन्तर है। हमें चाहिए कि ऐसा वातावरण उत्पन्न करें कि प्रत्येक व्यक्ति यह समझने लगे कि मुझे औरों से क्या, मैं तो अपना कर्त्तव्य करके आदमीयत का दावा पूरा कर दूँ। यदि अन्य लोग आदमी नहीं रहना चाहते तो मैं भी क्यों जानवर बन जाऊँ ?

हमारे देश की व्यवस्था सैकड़ों वर्षों से बिगड़ी हुई है। अतएव कार्य कठिन है परन्तु असम्भव नहीं। बम्बई प्रान्त में इस ओर पिछले १५ वर्षों से ध्यान दिया गया है। वहाँ के निवासी निश्चित रूप से अपेक्षाकृत अधिक योग्य नागरिक हैं।

अभ्यास

विषय

१. सड़क-दुर्घटनाओं का क्या कारण होता है ?
२. सड़क पर चलते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।
३. यातायात के साधनों की सूची बनाओ।

भाषा

४. व्याख्या करो :—
"देश के प्रत्येक निवासी की नागरिकता देश के नैतिक स्तर का निर्माण करती है।"
५. अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो :—
विपरीत, सहनशीलता, दुर्घटना, यातायात।

व्याकरण

६. क्रिया की विशेषता बताने वाला शब्द क्रिया-विशेषण होता है। इस पाठ में से तीन क्रिया-विशेषण ढूंढ़ो।
७. मैं, कौन, यह—इन शब्दों के सर्वनाम-भेद बताओ।

रचना

८. "हमारे ही अकेले के करने से क्या होता है ?" इस विचार को दस पंक्तियों में गलत साबित करो ।

९. पुल पार करने वाली दो बकरियों की कहानी को अपने शब्दों में लिखो ।

: १० :

गाँव की संध्या

[भगवतप्रसाद उपाध्याय]

आ गई सुखद संध्या ललाम
दिन भर चलकर थक गया सूर्य, लेता है पश्चिम में विराम।
आ गई सुखद संध्या ललाम ॥

जो दूर गये थे वे पंछी नीड़ों को अपने लौट चले।
धुँधली पगडण्डी से आते "टुन-टुन, टुन-टुन" के बोल भले ॥
ये किन पाँवों से उठी धूल, छा गई, दिशाएँ हुई श्याम।
आ गई सुखद संध्या ललाम ॥

है कहीं सुलगती वृक्षों के नीचे कण्डों की मन्द आग।
कुछ थके बटोही दिन भर के हैं बना रहे रोटियाँ साग ॥
ये रोटी उनको राजभोग, तरु-छाया उनको स्वर्ग-धाम।
आ गई सुखद संध्या ललाम ॥

कैसा उन दूर झरोखों से आ रहा उजाला छन-छनकर।
बज रहे शंख-घड़ियाल कहाँ, आ रहा कहाँ से मिलकर स्वर ?
हो रही आरती मन्दिर में, गा रहे भक्त-जन राम-नाम।
आ गई सुखद संध्या ललाम ॥

अभ्यास

विषय

१. शाम को सूर्य और पंछी कहाँ जाते हैं ?
२. पगडण्डी से 'टुन-टुन' की आवाज किस चीज की आ रही है ?

भाषा

३. ललाम, विराम, तरु-छाया, सुखद—इन शब्दों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करो।

४. "यह किन पाँवों से उठी धूल, छा गई, दिशाएँ हुईं श्याम" तथा "कैसा उन दूर झरोखों से आ रहा उजाला छन-छनकर।" इन दोनों पद्यांशों का भाव स्पष्ट करो।

व्याकरण

५. 'टुन-टुन' निरर्थक ध्वनिवाचक शब्द है। ऐसे तीन शब्द और बताओ।

६. "आ गई सुखद संध्या ललाम"—इस वाक्य में संज्ञा, विशेषण और क्रिया बताओ।

रचना

७. सायंकाल का वर्णन बीस पंक्तियों में करो।

: ११ :

राष्ट्रीय अनुशासन योजना

[कृष्णकुमार गर्ग]

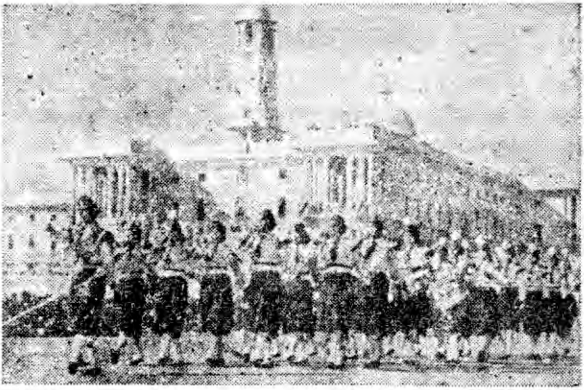

बच्चे कुम्हार की गीली मिट्टी के समान होते हैं; इनको जो चाहो बना लो, किन्तु तभी तक, जब तक बच्चे हैं। जैसे पका हुआ बर्तन यदि टेढ़ा है तो टेढ़ा ही रहेगा, इसी प्रकार बच्चों को तो माता-पिता और अध्यापकगण अच्छे से अच्छा रूप दे सकते हैं; किन्तु यदि बचपन में इन्हें ठीक रूप से संभाला न जाय तो यह टेढ़े बर्तन आयु भर टेढ़े ही रहेंगे और सभी को दुःख देंगे। इसलिए अनुशासन के नियमों का पालन करना वैसे तो हरेक व्यक्ति के लिए आवश्यक है, लेकिन बच्चों के लिए यह अमूल्य है क्योंकि बच्चे जो कुछ 'अब' और 'आज' सीख सकते हैं, वह शायद 'कल' इतनी आसानी से न सीख पायेंगे।

कल अपने देश की बागडोर इन्हीं छोटे-छोटे बच्चों के

हाथ में होगी। यही बात चाचा नेहरू ने १९५४ में राष्ट्रीय छात्र सैनिक दल के सामने भाषण देते हुए कही थी। राष्ट्रीय अनुशासन योजना का जन्म उसी दिन से हुआ माना जाता है। इस विचार के आधार पर उस समय के पुनस्संस्थापन उप-मंत्री श्री भोंसले ने इस योजना को जन्म दिया। श्री भोंसले जब जापान में थे तो उन्होंने देखा था कि वहाँ छात्रों को किस प्रकार अनुशासन सिखाया जाता है और अनुशासन से ही उनमें स्वदेशाभिमान, त्याग और बलिदान के संस्कार पड़ते हैं।

राष्ट्रीय योजना का ध्येय है बच्चों में अच्छे शहरी बनने की अभिलाषा उत्पन्न करना, उनमें स्वदेश-प्रेम, त्याग और बलिदान जैसे महान् भाव पैदा करना, जिससे कि बड़े होकर वे देश की सेवा कर सकें, देशवासियों की संकट के समय सहायता कर सकें। उनमें देश के हित के लिए नये-नये कार्य सोचने और करने की शक्ति हो, तथा वे एक-दूसरे के साथ प्रेम से मिलकर रहना सीखें।

सबसे पहले इस योजना को दिल्ली के 'कस्तूरबा निकेतन' में लागू किया गया। १९५४ में जब प्रधान मन्त्री ने वहाँ के बच्चों की परेड देखी तो वे बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने इस योजना को सारे देश में चालू करने का सुझाव दिया। धीरे-धीरे इस योजना को दिल्ली, पंजाब, बंगाल, बम्बई, मध्य प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों में चालू किया गया। योजना-आयोग ने भी इसके महत्त्व को समझा और इसके विस्तार के लिए दूसरी पंचवर्षीय योजना में ५० लाख रुपया नियत किया। आज हजारों स्कूलों के लाखों छात्र-छात्राएँ इस योजना के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

छात्र इस योजना में बड़े चाव से भाग ले रहे हैं। इसका कारण यह है कि उनको डण्डे के जोर से अनुशासन नहीं सिखाया जाता, बल्कि खेलते कूदते, परेड करते, गोष्ठियों में भाषण देते हुए उन पर से अध्यापक का शासन कम कर, उनको स्वयं ही अनुशासन में रहना सिखाया जा रहा है।

इस योजना की सफलता अध्यापकों पर विशेष रूप से निर्भर है। इसलिए इस योजना के अनुसार शिक्षा देने वाले अध्यापक तैयार करने के लिए दिल्ली के मालवीय नगर और फरीदाबाद में दो शिविर चलाये गये हैं। वहाँ से सैकड़ों अध्यापक ३-३ महीने का पाठ्य-क्रम पूरा करके निकलते हैं।

हाल ही में अमरीका के एक अध्यापकमण्डल ने जो कि संसार भर का दौरा कर रहा है, भारत में चालू इस योजना की बड़ी सराहना की। उसके सदस्यों ने तो यहाँ तक कहा कि ऐसी अच्छी योजना न तो हमने अपने और न किसी अन्य देश में ही देखी है।

अभ्यास

विषय

१. बच्चों के लिए अनुशासन क्यों आवश्यक है ?

२. राष्ट्रीय अनुशासन योजना को किसने जन्म दिया ?

३. इस योजना में छात्रों को अनुशासन कैसे सिखाया जाता है ?

भाषा

४. "बच्चे कुम्हार की गीली मिट्टी के समान होते हैं।" इस वाक्य की व्याख्या करो।

५. अर्थ बताओ :—

स्वदेशाभिमान, व्यक्ति, त्याग, बलिदान।

व्याकरण

६. इस पाठ में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ ढूँढ़ो ।

७. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो :—

कुम्हार, बर्तन, नियम, छात्र, सैनिक ।

रचना

८. अनुशासन के महत्त्व पर बीस पंक्तियाँ लिखो ।

: १२ :

बालक चन्द्रगुप्त

[जयशंकर 'प्रसाद']

'पाटलिपुत्र' नगर के प्रान्त में पिप्पली कानन के मौर्य सेनापति का एक विभवहीन गृह था। महापद्मनन्द के अत्याचार से मगध काँप रहा था। मौर्य सेनापति के बन्दी हो जाने के कारण उनके कुटुम्ब का जीवन किसी प्रकार कष्ट से बीत रहा था।

एक बालक उसी घर के सामने खेल रहा था। कई लड़के उसकी प्रजा बने थे और वह था राजा। उन्हीं लड़कों में से वह किसी को घोड़ा और किसी को हाथी बनाकर चढ़ता और दण्ड तथा पुरस्कार आदि देने का राजकीय अभिनय करता।

उसी ओर से एक ब्राह्मण जा रहे थे। उनका नाम था 'चाणक्य'। वे बड़े बुद्धिमान् थे। उन्होंने उस बालक की राज-क्रीड़ा बड़े ध्यान से देखी। उनके मन में कुतूहल भी हुआ और कुछ विनोद भी सूझा। उन्होंने ठीक-ठीक ब्राह्मण की तरह उस बालक राजा के पास जाकर याचना की, "राजन्! मुझे दूध पीने के लिए गऊ चाहिए।"

बालक ने राजोचित उदारता का अभिनय करते हुए, सामने चरती हुई गायों को दिखाकर कहा, "इनमें से जितनी इच्छा हो, तुम गायें ले लो।"

ब्राह्मण ने हँसकर कहा, "राजन्! ये जिसकी गायें हैं वह मारने लगे तो—"

बालक ने सगर्व छाती फुलाकर कहा, "किसका साहस है

जो मेरे शासन को न माने । जब मैं राजा हूँ, तब मेरी आज्ञा अवश्य मानी जायगी ।"

ब्राह्मण ने आश्चर्य से बालक से पूछा, "राजन् ! आपका शुभ नाम क्या है ?"

तब तक उसकी माँ वहाँ आ गयी और ब्राह्मण से हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, यह बड़ा धृष्ट लड़का है, इसके किसी अपराध पर ध्यान न दीजिएगा ।"

चाणक्य ने कहा, "कोई चिन्ता नहीं, यह बड़ा होनहार बालक है । इसकी मानसिक उन्नति के लिए तुम इसे किसी प्रकार राजकुल में भेजा करो ।"

उसकी माँ रोने लगी । बोली, "हम लोगों पर राजकोप है और हमारे पति राजा की आज्ञा से वन्दी किये गये हैं ।"

ब्राह्मण ने कहा, "बालक का कुछ अनिष्ट न होगा, तुम इसे अवश्य राजकुल में ले जाओ ।"

इतना कहकर बालक को आशीर्वाद देकर वह चला गया । उसकी माँ, बहुत डरते-डरते, एक दिन अपने चंचल और साहसी लड़के को लेकर राज-सभा में पहुँची ।

'नन्द' एक निष्ठुर, मूर्ख और त्रासजनक राजा था । उसकी राजसभा बड़े-बड़े चापलूस मूर्खों से भरी रहती थी ।

पहले राजा लोग एक-दूसरे के बल, बुद्धि और वैभव की परीक्षा लिया करते थे और इसके लिए वे तरह-तरह के उपाय रचते थे ।

उसी समय, जब बालक माँ के साथ राज-सभा में पहुँचा, किसी राजा के यहाँ से नन्द की राज-सभा की बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लोहे के पिंजड़े में मोम का सिंह बनाकर

भेजा गया था और उसके साथ यह कहलाया गया था कि पिंजड़े को खोले बिना ही सिंह को निकाल लीजिए।

सारी राज-सभा इस पर विचार करने लगी। पर उन चाटुकार मूर्ख सभासदों को कोई उपाय नहीं सूझा।

अपनी माता के साथ वह बालक यह लीला देख रहा था। वह भला कब मानने वाला था। उसने कहा, "मैं निकाल दूँगा।"

सब लोग हँस पड़े। बालक की ढिठाई भी कम न थी। राजा नन्द को भी आश्चर्य हुआ। नन्द ने कहा, "यह कौन है ?"

मालूम हुआ कि यह लड़का राजबन्दी मौर्य सेनापति का पुत्र है। फिर क्या था, नन्द की मूर्खता की अग्नि में एक और आहुति पड़ी। क्रुद्ध होकर वह बोला, "यदि इसे न निकाल सकेगा, तो तू भी इस पिंजड़े में बन्द कर दिया जायगा।"

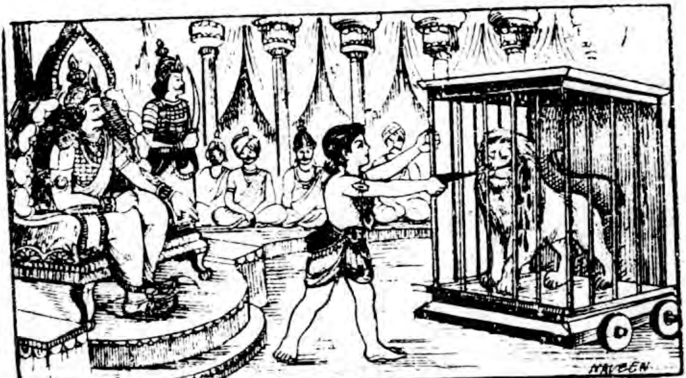

उसकी माता ने देखा कि यह कहाँ से विपत्ति आयी। परन्तु बालक निर्भीकता से आगे बढ़ा, और पिंजड़े के पास जाकर उसको भली-भाँति देखा। फिर लोहे की शलाकाओं को गरम करके उस सिंह को गलाकर पिंजड़े को खाली कर दिया।

सब लोग चकित रह गये । राजा ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

उसने कहा, "चन्द्रगुप्त ।"

फिर राजा ने उस पर प्रसन्न होकर उसे तक्षशिला के विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा, और आगे चलकर यही बालक उसी ब्राह्मण 'चाणक्य' की सहायता से चक्रवर्ती सम्राट् "चन्द्रगुप्त मौर्य" हुआ, जो ईसा के ३२१ वर्ष पहले मगध में पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर बैठा और अपने बाहुबल से सिकन्दर के यूनानी साम्राज्य के आतंक से भारत को स्वतन्त्र किया ।

अभ्यास

विषय

१. बालक घर के सामने क्या खेल रहा था ?
२. चाणक्य ने बालक से क्या माँगा ?
३. चाणक्य ने बालक की माता से क्या कहा ?
४. बालक ने पिंजड़े से शेर कैसे निकाला ?

भाषा

५. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोश में देखकर कापी में लिखो:—
विभव, याचना, धृष्ट, अनिष्ट, आतंक ।

६. नीचे लिखे वाक्य की व्याख्या करो:—
"नन्द की मूर्खता की अग्नि में एक और आहुति पड़ी ।"

व्याकरण

७. "तुम्हारा नाम क्या है ?" इस वाक्य में आये सर्वनाम शब्दों के भेद बताओ ।

८. बन्दी, प्रजा, हाथी, आज्ञा—इन शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग करो कि इनका लिंग स्पष्ट हो जाय ।

रचना

९. पुस्तकालय से इतिहास की पुस्तक लेकर सिकन्दर और चन्द्रगुप्त का वृत्तान्त पढ़ो ।

१०. बड़ों के बचपन की घटनाएँ पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ो ।

: १३ :

सरिता

[गोपालशरणसिंह]

यह लघु सरिता का बहता जल !
कितना शीतल, कितना निर्मल !

हिमगिरि के हिम से निकल-निकल,
यह विमल दूध-सा हिम का जल,
कर-कर निनाद कलकल-छलछल,
बहता आता नीचे पल-पल,
तन का चंचल, मन का विह्वल,
यह लघु सरिता का बहता जल !

निर्मल जल की यह तेज धार,
करके कितनी शृङ्खला पार,
बहती रहती है लगातार,
गिरती उठती हैं बार-बार !
रखता है तन में इतना बल !
यह लघु सरिता का बहता जल !

करके तरु-मूलों का सिंचन,
लघु जल-धारों से आलिंगन,
जल-कुण्डों में करके नर्तन,
करके अपना बहु परिवर्तन,
आगे बढ़ता जाता केवल,
यह लघु सरिता का बहता जल !

ऊँचे शिखरों से उतर-उतर,
गिर-गिर गिरि के चट्टानों पर,
कंकड़-कंकड़ पैदल चलकर,
दिन-भर, रजनी-भर, जीवन-भर,
धोता बसुधा का अन्तस्तल,
यह लघु सरिता का बहता जल !

मिलता है इसको जब पथ पर,
पथ रोके खड़ा कठिन पत्थर,
आकुल, आतुर, दुःख से कातर,
सिर पटक-पटककर, रो-रोकर,
करता है कितना कोलाहल,
यह लघु सरिता का बहता जल !

हिम के पत्थर वे पिघल-पिघल,
बन गये धरा के वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकल,
पी-पीकर अंजलि-भर मृदु जल,
नित जलकर भी कितना शीतल !
यह लघु सरिता का बहता जल !

अभ्यास

विषय

१. नदी का जल कहाँ से आता है और कैसा होता है ?
२. बहते जल की ध्वनि किन शब्दों में व्यक्त की जाती है ?
३. नदी की धारा के रास्ते में क्या-क्या आता है ?
४. नदी के जल को "तन का चंचल, मन का विह्वल" क्यों कहा है ?

भाषा

५. अर्थ बताओ :—

सरिता, हिम, गिरि, निनाद, तरु, सिंचन ।

व्याकरण

६. ऊपर लिखे शब्दों में कारकों के नाम बताओ :—

सरिताका, कुँडोंमें, पथपर, इसको ।

रचना

७. 'नदी'—इस विषय पर बीस पंक्तियाँ लिखो ।

: १४ :

हरिजनोद्धार का कार्य

[डा० राजेन्द्रप्रसाद]

हरिजन लोग गरीब हैं। उनकी वृत्ति ऐसी है जिससे उच्च वर्ग के लोग घृणा करते हैं। वे उस काम को भी नहीं करते हैं। हरिजनों में अशिक्षा है। उन्हें जीवन की साधारण बातें भी ज्ञात नहीं हैं। अशिक्षा, अज्ञान सब बुराइयों का जनक होता है। लेकिन हमें उनकी अवस्था में सुधार करना होगा। यदि हरिजनों की अवस्था का सुधार न किया गया तो हमारी अवस्था भी नहीं सुधरेगी।

सबसे पहले यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने में यह विश्वास उत्पन्न करे कि वह छुआछूत में विश्वास नहीं करता। यदि उच्च वर्ण के सब व्यक्ति यह निश्चय कर लें कि छुआछूत को स्थान नहीं देंगे और वे इस बात की प्रतिज्ञा कर लें, तो हरिजनोद्धार की समस्या ही हल हो जाय। हरिजनों में ही बहुत-सी ऐसी जातियाँ हैं जो एक-दूसरे से छुआछूत रखती हैं। अतः सबसे पहले हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम छुआछूत नहीं मानेंगे। हाँ, गन्दगी और घृणित वस्तुओं से हमें अवश्य परहेज करना चाहिए। उन्हें अपने से सदा दूर रखना चाहिए। परन्तु किसी व्यक्ति-विशेष या जाति-विशेष से उसके पेशेमात्र के कारण हमें घृणा नहीं करनी चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हरिजन स्वेच्छ रहें, साफ-सुथरा जीवन व्यतीत करें, तो हमें उनके साथ रहकर उन्हें शिक्षा देनी होगी।

कानून, नियम की सहायता से हरिजनों के लिए कुछ

सुविधाएँ अवश्य प्रदान की जा सकती हैं, लेकिन समाज के हृदय में उनके लिए स्थान नहीं उत्पन्न किया जा सकता। हमें यदि हरिजनों के लिए सहानुभूति उत्पन्न करनी है, तो उच्च जाति के बीच हरिजनोद्धार की भावना का प्रचार करना होगा। ऊँची जाति के लोगों को हमें शान्तिपूर्वक समझाना होगा कि संसार में कोई ऊँची-नीची जाति नहीं है। समाज में सब जातियों का समान रूप से महत्त्व है, और सब की सेवा से समाज की भलाई होती है। ऊँची जातियों के सामने इस प्रकार के उदाहरण रखकर तथा समाज के कल्याण की भावना का महत्त्व समझाकर उन्हें इस ओर प्रवृत्त करना चाहिए।

सामाजिक जीवन में हरिजनों को समान अधिकार दिये जाने चहिए। किसी लोकतन्त्रात्मक देश के नागरिकों के अधिकारों में किसी प्रकार की कमी नहीं की जाती। अब भारत में लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था है। देश गणतन्त्र हो गया है। बालिग मताधिकार द्वारा सब को अपना मत देने का अधिकार है। सब के मत का समान मूल्य तथा महत्त्व है। बिना किसी भेद-भाव के अब कोई भी व्यक्ति ऊँचे से ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित किया जा सकता है। सब को अपनी योग्यतानुसार उन्नति करने का समान अवसर प्राप्त है। किसी वंश अथवा जाति को किसी प्रकार की विशेष सुविधा नहीं प्रदान की जा सकती। देश का जो नया विधान बना है, उसके अनुसार जो सामाजिक अथवा राजनीतिक अधिकार एक ब्राह्मण को प्राप्त हैं वही एक भंगी अथवा चमार को भी प्राप्त हैं। कुछ प्रान्तों ने हरिजनों के सामाजिक जीवन को उन्नत बनाने के लिए कुछ कानून भी बनाये हैं। इन नियमों द्वारा हरिजनों को समान सामाजिक अधिकार प्राप्त हो गये हैं।

देश में बहुत-से स्थान ऐसे थे जहाँ उच्च वर्ण के लोग अपने कुओं पर हरिजनों को पानी नहीं भरने देते थे। उनके लड़कों को शिक्षालयों में पढ़ने का भी अधिकार नहीं था। इतना ही नहीं, इन सवर्णों अथवा सनातनियों की अपनी सड़कों पर अन्त्यज चल भी नहीं सकते थे। लेकिन अब ये बातें सम्भव नहीं। इस प्रकार की सुविधाओं में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना अब अपराध समझा जाता है। इन क्षेत्रों में भारतीय सरकार ने ऐसे नियम बना दिये हैं कि हरिजनों को भी कुओं और शिक्षालयों आदि की सुविधा प्राप्त हो सके। अब इन स्थानों पर हरिजनों के बच्चे सवर्ण लोगों के बच्चों के साथ बैठकर पढ़ते-लिखते हैं।

शिक्षा के अभाव में हरिजनों के सामाजिक जीवन में उन्नति नहीं की जा सकती। यदि आन्दोलनों द्वारा कुछ थोड़ी बहुत उन्नति हो भी जायगी तो शिक्षा का प्रभाव न रहने पर वे पुनः उसी स्थिति में अपना जीवन व्यतीत करने लगेंगे। अतः उनके जीवन में किसी प्रकार का सुधार करने के पहले उन्हें शिक्षित करने का भी कार्य हमें करना होगा। महात्मा गांधी के आदर्शों के प्रभाव के कारण काँग्रेस का संघटन बिना किसी भेद-भाव के हुआ है। आज काँग्रेस द्वारा संघटित सरकारों में अन्त्यजों को भी ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त करने का अवसर है। लगभग सभी प्रान्तों में तथा केन्द्र में भी हरिजन मन्त्री हैं। सभी प्रान्तों में अनेक अन्त्यज धारा-सभाओं के सदस्य भी हैं। शिक्षित न होने के कारण अन्त्यज सदस्य अपने-अपने अधिकारों का भी ठीक से उपयोग नहीं कर पाते हैं। अतः शिक्षा के बिना समान अधिकार का कोई महत्त्व नहीं।

शिक्षालयों में हरिजनों आदि के लिए पृथक् छात्रावास

आदि की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। अन्य जाति के बच्चों के साथ उन्हें भी रहने का अवसर देना चाहिए। यदि उनके लिए पृथक् व्यवस्था रहेगी तो भेद-भाव की भावना दूर न होगी। साथ-साथ रहने, उठने-बैठने और खाने-पीने से एकता की भावना उत्पन्न होती है। परन्तु सहभोज आदि कार्यों में जबर्दस्ती भी नहीं की जानी चाहिए। यदि हम इतना भी कर सकें तो हमारे भारतीय समाज का आदर्श रूप में संघटन सम्भव हो सकेगा।

अभ्यास

विषय

१. हरिजनों की बुरी दशा के क्या-क्या कारण हैं ?

२. हरिजनों की दशा सुधारने के लिए क्या करना चाहिए ?

३. हरिजनों की दशा सुधारने के लिए क्या-क्या कानून बने हैं ?

भाषा

४. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :—

(क) हरिजन लोग······हैं।

(ख) हरिजनों में······है।

(ग) अशिक्षा, अज्ञान सब बुराइयों का······होता है।

व्याकरण

५. हरिजन, बात, स्थान, पेशा, सुविधा—इन शब्दों के बहुवचन रूप लिखो।

६. जातियाँ, उनको, वस्तुओं, कानूनों—इन शब्दों के एकवचन रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

७. छुआछूत की बुराई के सम्बन्ध में पन्द्रह वाक्य लिखो।

क्यू (Queue)

[डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी]

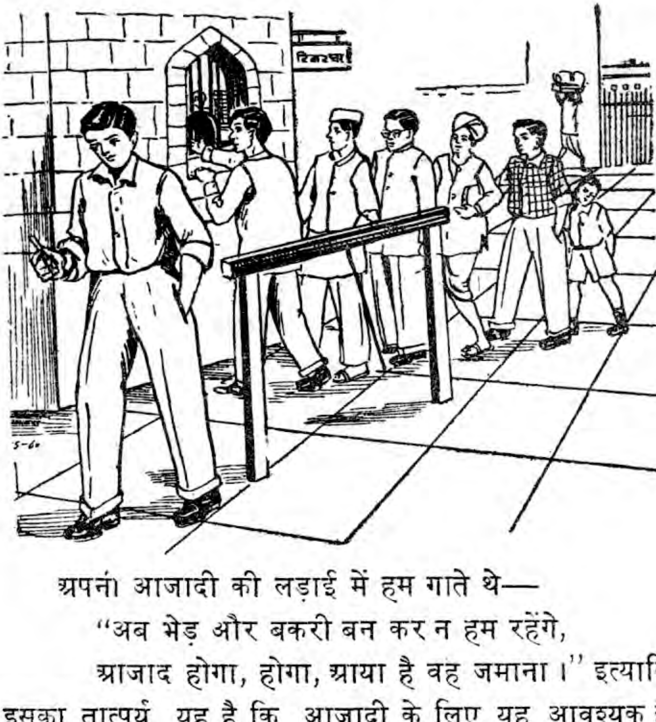

अपनी आजादी की लड़ाई में हम गाते थे—

"अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे,

आजाद होगा, होगा, आया है वह जमाना।" इत्यादि

इसका तात्पर्य यह है कि आजादी के लिए यह आवश्यक है कि हम भेड़ और बकरियों की तरह व्यवहार करना छोड़ दें, अथवा स्वतन्त्र देश के निवासियों को कहीं भी किसी भी सूरत में भेड़ और बकरियों जैसे व्यवहार नहीं करने चाहिए। परन्तु स्थिति यह है कि जिस तरह भेड़ और बकरियाँ बिना समझे-

बूझे एक दूसरे के पीछे हो लेती हैं अथवा रास्ते में बे-तरतीब से चलती हैं, ठीक उसी तरह हम लोग भी बे-तरतीब काम करते हैं।

सम्भव है हमारा उक्त कथन बहुतों को अरुचिकर हो, परन्तु वास्तव में बात ऐसी ही है। उक्त कथन के अर्थ की व्यावहारिकता हम पर अक्षरशः लागू होती है।

हम कहीं जावें, हर जगह हम अपने को भेड़ और बकरियों की तरह व्यवहार करते हुए पायेंगे। रेल में देखें तो चढ़ते-उतरते समय हम एक-दूसरे को धक्का देते हैं। रेलवे अथवा सिनेमा के टिकटघर पर जायें तो देखेंगे कि हम में से हरेक आदमी धक्का देकर सब के आगे जाकर सबसे पहले टिकट लेने की चेष्टा करता है। यहाँ तक कि अगर आप मन्दिर और मस्जिदों में जायें तो वहाँ भी देखेंगे कि सब लोग एक-दूसरे के साथ धक्का-मुक्की कर रहे हैं। इतना ही नहीं, अगर आप किसी सामाजिक उत्सव में ही जायें तो वहाँ भी आप लोगों को धक्का देकर सबसे आगे बढ़ जाने की चेष्टा करते हुए पायेंगे। रेल में यात्रा करते समय तो आप यह देखेंगे कि जिस डिब्बे में एक यात्री चढ़ता है, उसी में तमाम लोग चढ़ने लग जाते हैं और फिर आस-पास के अन्य यात्री इस तरह की बातें करने लग जाते हैं कि 'इस देश में तो भेड़-चाल है, जहाँ एक जायगा वहीं सब जायेंगे,' आदि।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे अन्दर व्यवहार की इतनी कमी है कि दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में सचमुच हम भेड़-बकरियों ही जैसे बने हुए हैं।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इस तरह के व्यवहारों के कारण हम लोगों का कितना वक्त खराब होता है,

तथा कितने आपसी झगड़े होते हैं। आप देखेंगे कि इस तरह की बेतरतीब धक्का-मुक्की में प्रायः लोगों का सामान चोरी हो जाता है, जेब कट जाती है तथा अन्य अनेक प्रकार के नुकसान हो जाया करते हैं।

इस सम्बन्ध में मैंने दो-तीन ऐसे सज्जनों से बात की है जो पश्चिमी देशों की यात्रा कर आये हैं। वे बताते हैं कि वहाँ के निवासी अपने व्यवहार में बड़े ही नियन्त्रित रहते हैं। टिकट लेते समय, रेल तथा ट्राम आदि में चढ़ते समय वे लोग एक कतार में खड़े हो जाते हैं। जो पहले आ गया वह आगे है, जो पीछे आया वह पीछे है। इस तरह एक कतार में खड़े होकर काम करने में बड़ी सहूलियत रहती है, बहुत-से कष्टों से बचते हैं तथा हम सभ्य व सुसंस्कृत मालूम होते हैं; और यही कार्य (सभ्य लगना) हमें जानवरों से अलग कर देता है।

भारतवर्ष में लोगों का इस ओर ध्यान नहीं है, सो बात नहीं है। बहुत-से डाक्टरों के यहाँ मरीज लोग क्रमशः टिकट लेते जाते हैं और डाक्टर साहब उन्हें बारी-बारी से देखते जाते हैं। इतना ही नहीं, बहुत से टिकटघरों पर मैंने पुलिस के सिपाहियों को लोगों को लाइन में खड़ा करते देखा है, आदि। परन्तु खेद का विषय यह है कि जैसे ही सिपाही वहाँ से हटता है, वैसे ही लोगों की फिर वही हालत (इधर-उधर धक्का-मुक्की, खेंचातानी आदि) हो जाती है। बस, यहीं पर हमारी नागरिकता का प्रश्न आ जाता है।

हम चाहते हैं कि हमारी डंडों से हाँके जाने वाली आदत खत्म हो जाय और स्वयं ही अपने-अपने कर्त्तव्य समझ कर एक सभ्य नागरिक जैसा व्यवहार करना सीख जायें। स्वतन्त्र भारत में इन सब बातों की बड़ी आवश्यकता है,

क्योंकि इन्हीं दिन-प्रतिदिन के व्यवहारों से मिल कर हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण होता है। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि इस देश के निवासी एक स्वतन्त्र देश के निवासी होने के नाते अब भेड़ और बकरियों जैसा व्यवहार करना छोड़ दें। जहाँ कहीं भी हों, वे अपनी व्यावहारिकता के कारण एक सभ्य देश के नागरिक होने की बात रख सकें। इसी में हमारा मान है तथा इसी में हमारा कल्याण है। आप स्वयं सोचते होंगे कि जब अन्य लोग इस तरह का व्यवहार करते हैं, हमें पीछे हटा कर अपना काम हमसे पहले बना ले जाते हैं तो हमें कितना बुरा लगता है। इस तरह पशु-बल का प्रयोग तथा अमानुषी व्यवहार सचमुच हमें शोभा नहीं देता।

अभ्यास

विषय

१. 'क्यू' बनाने के लाभ बताओ।

२. बे-तरतीब खड़े होने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?

३. डण्डों से किन्हें हाँका जाता है ?

भाषा

४. 'भेड़चाल'—इस मुहावरे का अर्थ बताओ।

५. अर्थ बताओ :—

तात्पर्य, उक्त, उत्सव, सामाजिक, क्रमशः।

व्याकरण

६. इस पाठ में से संज्ञा शब्द छाँटो और उन्हें नीचे दिये अपने-अपने खाने में लिखो :—

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक

: १६ :

जैसे को तैसा

[श्री सुदर्शनाचार्य]

(१)

एक बार गड़ गया सिंह के पंजे में काँटा भारी।
जिससे वह बीमार पड़ गया हुई शिथिल काया सारी॥
देख सिंह को दुखी थे मन में सुखी यद्यपि जीव सभी।
तो भी दिखलाने को जाते उसे देखने कभी-कभी॥
सिवा लोमड़ी के उससे मिलने को सारे जाते थे।
मुँह देखी बातें कर कर के उसका जी बहलाते थे॥
उनमें एक भेड़िया भी था चुगुल और चालाक।
सदा खैरख्वाही दिखलाता, बोला मौका ताक॥

(२)

"महाराज के दर्शन लेने सारी प्रजा यहाँ आती।
पर घमंड में भरी लोमड़ी कभी नहीं मुँह दिखलाती"॥
सुनकर क्रोधित हुआ सिंह यों बोला, "देखा जायेगा।
जो जैसा आचरण करेगा वह वैसा फल पायेगा"॥
सुना भेड़िये ने जब ऐसा मन में हुआ प्रसन्न बड़ा।
चुगली खाने लगा और भी हाथ जोड़कर खड़ा-खड़ा॥
वहीं लोमड़ी के साथी ने सुन पाई यह बात।
उसी समय जाकर कह दी उसने की थी जो घात॥

(३)

चतुर लोमड़ा यह सुनते ही शीघ्र सिंह सम्मुख आकर।
बड़ी नम्रता से प्रणाम कर बोली कुछ समीप जाकर॥

"महाराज जब से दासी ने बीमारी की बात सुनी ।
जहाँ कहीं सुन पाया मैंने कोई वैद्य हकीम गुनी ।।
वहाँ गई मैं दौड़ी-दौड़ी दवा पूछने को स्वामी ।
आखिर मिला आज मुझको एक बूढ़ा वैद्य बड़ा नामी ।।
उसने मुझको एक दवा बतलाई है अक्सीर ।
जिसे लगाते ही हजूर की भाग जाय सब पीर ।।

(४)

पर उसके कहने में मेरी जीभ रुकी सी जाती है ।
क्योंकि उसे लाने में स्वामिन्, जान मित्र की जाती है ।।
यह सुन जो दरबारी थे वे स्वामि-भक्ति दिखलाने को ।
कहने लगे लोमड़ी से आग्रह कर दवा बताने को ।।
"अजी लोमड़ी जी, हकीम जी ने जो दवा बताई हो ।
शीघ्र कहो हम तो लावेंगे चाहे जो कठिनाई हो ।।
जान एक की क्या, दस की भी जावे तो क्या सोच ।
स्वामी के हित प्राणदान में हमें नहीं संकोच" ।।

(५)

देख समय अनुकूल लोमड़ी यों बोली चतुराई से ।
"पाँव आपका अच्छा होगा, केवल एक दवाई से ।।
लेप भेड़िए के गुर्दे का उसने मुझे बताया है ।
जिसके कहने में मेरा जी अब लों यों सकुचाया है" ।।
इतना सुनते ही दो चीते ड्योढ़ी पर जो रहे खड़े ।
देख भेड़िया पास उसी का गुर्दा लेने टूट पड़े ।।
पलक मारते में कर डाला उसका काम तमाम ।
सत्य कहा है—"जैसे को तैसा फल देते राम" ।।

अभ्यास

विषय

१. सिंह को बीमार देखकर जंगल के जीव मन में खुशी क्यों थे ?

२. भेड़िये ने शेर से क्या चुगली खाई ?

३. लोमड़ी ने भेड़िये से चुगली खाने का बदला कैसे लिया ?

४. दो चीते भेड़िये पर क्यों टूट पड़े ?

भाषा

५. "मुँह देखी बात करना", "जैसे को तैसा"—इन मुहावरों का अर्थ बताओ।

६. अर्थ बताओ :—

शिथिल, क्रोधित, सम्मुख, नम्रता।

व्याकरण

७. इस पाठ में से आठ क्रियाएँ ढूँढ़ो और उन्हें नीचे दिये अपने-अपने खाने में लिखो :—

अकर्मक	सकर्मक

रचना

८. इस कविता में दी गई कहानी को अपनी भाषा में लिखो।

: १७ :

भगवान् बुद्ध

[भदन्त आनन्द कौसल्यायन]

ईसा के जन्म से छ: सौ तेईस वर्ष पहले, इस समय जहाँ नेपाल राज्य की दक्षिणी सीमा है, वहाँ रोहिणी नदी के पश्चिम छोर पर, शाक्यों की कपिलवस्तु नाम की राजधानी थी। वहाँ शुद्धोधन शाक्य राज्य करते थे। उनके दो रानियाँ थीं, माया और प्रजापति। राजा की ४५ वर्ष की आयु थी। मायादेवी गर्भवती हुई। प्रसव का समय समीप आया देख मायादेवी ने

अपने मायके कोलियों की राजधानी देवदह जाना चाहा। राजा ने कपिलवस्तु से देवदह तक की यात्रा का वैसा ही प्रबन्ध किया जैसा एक रानी की यात्रा के लिए होना चाहिए था। रानी देवदह पहुँचने भी न पाई थीं कि रास्ते में लुम्बिनी वन में शाल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ का जन्म हुआ। पुत्रोत्पत्ति के बाद मायादेवी अधिक दिन इस लोक में न रहीं। एक सप्ताह के भीतर ही वह परलोक-गामिनी हो गईं।

बालक सिद्धार्थ बचपन ही से होनहार, चिन्ताशील और एकान्तप्रेमी था। राजा शुद्धोधन अपने पुत्र की चिन्ताशील प्रकृति से डरता था कि न जाने यह उसे किस ओर ले जाय? उसने मन्त्रियों की सलाह से जल्दी ही कुमारी यशोधरा से उसका ब्याह कर दिया। एक ओर था एक समृद्ध परिवार का विलासमय जीवन और दूसरी ओर थी सिद्धार्थ की विचारपूर्ण प्रवृत्ति। विलासमय जीवन चिन्ताशील प्रवृत्ति को न बदल सका।

एक दिन सिद्धार्थ अपने रथ में बैठकर भ्रमण के लिए जा रहे थे। उन्होंने देखा, रास्ते में एक श्वेत केश, जीर्णकाय व्यक्ति लकड़ी के सहारे अत्यन्त धीरे-धीरे चल रहा है। सिद्धार्थ ने सारथी से पूछा—"छन्नक ! इस व्यक्ति को क्या हुआ है? यह ठीक क्यों नहीं चल रहा है? इसके केश श्वेत क्यों हैं? यह काँप क्यों रहा है?"

"कुमार ! यह व्यक्ति हमेशा ऐसा नहीं था। बचपन में इसने भी माता का दूध पिया है, जवानी में इसने भी धनुन को टंकारा है, लेकिन अब बुढ़ापे में यह ऐसा हो गया है।"

"छन्नक ! क्या यह बुढ़ापा इसी को प्राप्त हुआ है, अथवा सब को होता है?"

"कुमार ! सब को।"

"छन्नक ! तो रथ को वापस करो। चित्त में यह दुःखद वेदना लेकर मैं उद्यान की सैर न कर सकूँगा।"

इसी प्रकार दूसरे अवसरों पर एक रोगी तथा एक मृत व्यक्ति के दर्शन ने कुमार के हृदय पर वह छाप लगा दी कि वह दिन-रात यही सोचने लगा—"इस बुढ़ापे से, इस व्याधि से, तथा इस मृत्यु से मुक्ति का मार्ग है अथवा नहीं ? यदि है तो कौन-सा ?"

इसी बीच में उन्हें एक शान्त, प्रसन्नमुख संन्यासी के दर्शन हो गये। इसका परिणाम हुआ सिद्धार्थ के मन में एक दृढ़, किन्तु मौन संकल्प। वह उस पर निरन्तर विचार करने लगे।

इस समय गौतम की आयु २८ वर्ष की हो चुकी थी। यशोधरा देवी से उनके राहुल नाम का एक पुत्र था। संन्यासी के दर्शन के बाद से गौतम दिन-रात यही सोचते थे कि वह अपने परिवार की ममता और महलों के सुखमय जीवन को छोड़ किस प्रकार जंगल का रास्ता लें। उनके मन में कितना बड़ा संघर्ष हुआ होगा ? एक ओर यशोधरा की पति-भक्ति, राहुल का पुत्र-स्नेह तथा महलों का विलासपूर्ण जीवन, और दूसरी ओर थी एक आदर्श की धुँधली झलक ! 'श्रेय' ने 'प्रेय' पर विजय पाई। एक रात चुपके से अपने 'कन्यक' घोड़े पर चढ़, छन्नक सारथि के साथ राजकुमार कपिलवस्तु से विदा हुए।

शाक्यों के देश से मल्लों के देश में घूमते-घूमते यह अकिंचन् राजकुमार विद्यार्थी गंगा को पार कर राजगृह पहुँचा। मार्ग में अनेक साधु-महात्मा मिले। किन्तु न तो किसी के कर्म-काण्डी जीवन ने और न किसी के सूखे दर्शन-शास्त्र ने कुमार के हृदय की प्यास बुझाई। राजगृह में बिम्बसार नरेश ने आग्रह किया—"तुम्हारी यह वन-वन घूमने की अवस्था नहीं।

तुम या तो अपने माता-पिता के पास लौट जाओ या मेरे साथ ही राज्य के हिस्सेदार बनकर रहो।"

कुमार को जंगलों के क्षुत्पिपासा-मय जीवन का पर्याप्त अनुभव हो चुका था; लेकिन तब भी राजा विम्बसार का आग्रह उन्हें अपने प्रण से न डिगा सका। उनका एक ही उत्तर था–"जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गृह-त्याग किया है, उस उद्देश्य की पूर्ति होकर रहेगी, या उस प्रयत्न में शरीर उत्सर्ग होकर रहेगा।"

राजगृह से चलकर सिद्धार्थ गया के पहाड़ी जंगलों का ओर बढ़े। वहाँ नैरंजरा नदी के किनारे, उरुवेल नामक स्थान पर, छः वर्षों तक तपस्या करते रहे। सत्य और ज्ञान की प्राप्ति के लिए जितने भी मार्ग उस समय ज्ञात थे, कुमार ने सब की परीक्षा की। आहार-त्याग से शरीर को कृशता की अन्तिम सीमा तक पहुँचा दिया और इस क्रम को तव तक जारी रखा, जब तक यह निश्चय नहीं हो गया कि इन्द्रियों को सुखा देने मात्र से मन का शमन नहीं हो सकता। उनका निश्चय था—"चाहे मेरा चमड़ा नहीं, हड्डियाँ ही क्यों न बाकी रह जायँ, चाहे शरीर, माँस, रक्त क्यों न सूख जायँ, सम्यक् सम्बोधि को प्राप्त किये बिना इस आसन को नहीं छोड़ूँगा।"

आर्यवर सिद्धार्थ गौतम अनेक परीक्षाओं के बाद, अपने चित्त की बुरी वासनाओं पर विजय प्राप्त कर, वैशाखी पूर्णिमा की पुण्य तिथि को अमरवोधि-वृक्ष के नीचे, बुद्धत्व को प्राप्त हुए। उन्हें मनुष्य-जीवन का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया। इसी कारण वे बुद्ध कहलाये।

यदि गौतम केवल अपनें वोध ही से सन्तुष्ट हो जाने वाले व्यक्ति होते, तो उनके जीवन का आदर्श पूरा हो गया था।

लेकिन उन्हें शान्ति कहाँ ? उनका हृदय तो समस्त संसार के कल्याण की कामना से तड़प रहा था। वे सोचने लगे, सर्व-प्रथम किसे यह ज्ञानामृत पान कराया जाय ? ख्याल आया कि उन्हीं पाँचों साथियों को उपदेश दिया जाय जो बुद्धगया में रहते समय गौतम को पथभ्रष्ट हुआ समझ अकेला छोड़ आये थे। बुद्ध उनकी खोज में गया से ऋषिपत्तन, मृगदाव (बनारस) आये। उन पाँचों साधुओं पर बुद्ध की तेजस्विता का प्रभाव पड़ते देर न लगी। तथागत* ने उपदेश दिया—

"भिक्षुओ ! संन्यासी को चाहिए कि वह अत्यन्त हीन, अनार्य और अनर्थकर जीवन न बिताये, और दूसरे शरीर को व्यर्थ ही पीड़ा न पहुँचाये।" इन दोनों बातों को त्यागकर तथागत ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया है।

उन दिनों बनारस में एक बड़ा सेठ रहता था जिसके लड़के का नाम था यश। पिता ने अपने प्रिय पुत्र के लिए विलास की सब सामग्री जुटा रखी थी। लेकिन यश उन नव-युवकों में से था, जिन्हें ऊँचे आदर्शों की प्रेरणा विलासमय जीवन में फँसने नहीं देती। विलासी जीवन से उसको सन्तोष न हुआ। ऊब कर तथागत के पास गया और उनका सन्देश सुनकर उन्हीं के पास भिक्षु हो गया।

अब दिनों-दिन गौतम की ख्याति फैलने लगी। युवकगण एक-एक करके उनकी भिक्षु-मण्डली में सम्मिलित होने लगे। जब भिक्षुओं की संख्या ६० तक पहुँची, तब तथागत ने उनसे कहा—"भिक्षुओ ! अब तुम लोग जाओ, घूमो। जनता के हित के लिए, जनता के सुख के लिए, देवों और मनुष्यों के

---

* बुद्ध अपने लिए 'तथागत' शब्द का व्यवहार करते थे।

कल्याण के लिए जाओ, घूमो। दो भिक्षु एक तरफ न जाओ। तुम लोग उस धर्म का उपदेश करो, जो आदि में कल्याणकारी है, मध्य में कल्याणकारी है और अन्त में भी कल्याणकारी है।''

भगवान् बुद्ध नित्य ही उरुवेल, राजगृह, कपिलवस्तु, वैशाली, जेतवन, कौशाम्बी आदि स्थानों में किसी न किसी जगह की यात्रा करते थे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण जिस प्रकार केवल लोक-हित में व्यतीत होता था उसका दूसरा उदाहरण नहीं।

अन्तिम समय भगवान् बुद्ध ने अपने साथी भिक्षुओं को उपदेश दिया—"संसार की सभी चीजें बनी हैं, इसलिए बिगड़ने वाली हैं, नश्वर हैं। तुम अपने लक्ष्य की प्राप्ति में प्रमाद न करना।''

वह भुवन-प्रदीप संसार से सदा के लिए बुझ गया। तथागत महापरिनिर्वाण को प्राप्त हो गये।

अभ्यास

विषय

१. सिद्धार्थ का जन्म कहाँ हुआ ?

२. भ्रमण के लिए जाते समय सिद्धार्थ ने रास्ते में क्या देखा ?

३. सिद्धार्थ ने घरबार क्यों छोड़ा ?

४. सिद्धार्थ 'बुद्ध' क्यों कहलाये ?

भाषा

५. नीचे लिखे शब्दों का दो-दो वाक्यों में प्रयोग करो :—
सीमा, यात्रा, राजा, यशोधरा।

६. नीचे लिखे वाक्यों के लिए एक शब्द बताओ :—
(क) जिसके केश श्वेत हो गये हों।
(ख) जिसकी काया जीर्ण हो गई हो।
(ग) जो विलास से पूर्ण हो।

व्याकरण

७. नीचे लिखे पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप बताओ :—

पुत्र, राजकुमार, पहाड़, चमड़ा, साथी।

८. इस पाठ में से पाँच पुरुषवाचक सर्वनाम ढूँढ़ो।

रचना

९. भगवान् बुद्ध का चित्र बनाओ।

१०. भगवान् बुद्ध की जीवन-कहानी संक्षेप में लिखो।

: १८ :

संसार का विचित्र चिड़ियाघर

[किशोर गर्ग]

"कम्पाला लौटकर हम लोग विक्टोरिया झील के उत्तरी किनारे होकर केनिया देश की ओर बढ़े। जिजा नामक स्थान पर झील का पानी किनारे से फूट निकलता है और यही नील नदी का उद्‌गम है। जिजा के निकट पहले दो जल-प्रपात थे। झील का किनारा काटकर नदी की धारा कई फुट ऊँचे से गिरती थी। इसी का नाम रिपन जलप्रपात था। दूसरा जल-प्रपात कई मील नीचे है और इसका नाम ओविन जलप्रपात है। किन्तु अब ओविन जलप्रपात पर ऊँचा बाँध बँध जाने के कारण विक्टोरिया झील के पानी की सतह कई फुट ऊँची हो गई है और रिपन जलप्रपात पानी में डूबकर अपना अस्तित्व ही खो बैठा है।

"मैदान, झाड़ी, जंगल, पठार, झील सभी महाद्वीपों में हैं। किन्तु अफ्रीका की अपनी विशेषता है। दूसरे महाद्वीपों में सैकड़ों मील की यात्रा करने पर भी पृथ्वी का रूप कम-बढ़ एक-सा ही रहता है। किन्तु अफ्रीका में तो कदम-कदम पर सीनरी बदलती जाती है। मैदान, झाड़ी, जंगल, पहाड़, पठार, झील और फिर मैदान, झाड़ी, जंगल, पहाड़, पठार, झील का ताँता लगा रहता है। और अफ्रीका की इस विविध सीनरी का एक विचित्र नमूना है किसूमू-नाइरोबी मार्ग।

"विक्टोरिया झील पर बसे केनिया के बन्दरगाह किसूमू और केनिया की राजधानी नाइरोबी के बीच २२० मील की

दूरी है। किसूमू का धरातल समुद्र-तल से ३७०० फुट ऊँचा है और नाइरोबी का ५५००। इतनी दूरी में इतना अन्तर साधारण-सी बात है। किन्तु दोनों नगरों के बीच पड़ती है महान् दरार, जिसकी दीवारें दस हजार फुट तक ऊँची हैं और उनके बीच दरार की घाटी है जिसका धरातल केवल ६००० फुट है। झूले की तरह ऊँची-नीची जाती इस सड़क पर यात्रा करना और दरार की तली में फलैमिंगो वाली झीलें और जीवित, मृत अनेकों ज्वालामुखी देखना, और सब कुछ एक ही दिन की यात्रा में, एक अनूठा अनुभव है।

"आखिरकार मैं उस नगर में पहुँच गया जिसके बारे में इतना कुछ सुन चुका था। नाइरोबी पूर्वी अफ्रीका का सबसे बड़ा नगर ही नहीं, संसार का सबसे बड़ा शिकार-केन्द्र भी है। शिकार नाइरोबी के जीवन की धुरी है। जिधर देखो, शिकार की चीजें, जिधर सुनो शिकार की बातें। नगर का अधिकांश व्यवसाय शिकार और शिकार की माँगें पूरी करने में लगा रहता है। कोई बन्दूक ठीक कर रहा है, तो कोई भुस भर कर खाल को फिर से जानवर का रूप देने में लगा है। कहीं तम्बू बन रहे हैं, तो कहीं यात्रा में जरूरी बर्तन बन रहे हैं।

"मरे जानवरों के अवशेषों का, उनके बाल, खाल, हड्डी का एक अनूठा उद्योग है नाइरोबी में! नगर के मुख्य बाजार डिलामेयर एवेन्यू की दुकानों के शो-केसों में बड़ी-बड़ी विचित्र चीजें दिखाई देती हैं—जानवरों की खालों के कोट, वासकट, रजाई, गद्दे, जेब्रे के खुर के लैम्प, जेब्रे और घड़ियाल की खाल के जूते, हाथी के पैर का छाता-स्टैण्ड, हिप्पो की खाल की प्लेटें, गैंडे के पैर का सिगार-डिब्बा, चीते की खाल का तम्बाखू-डिब्बा, अजगर की खाल के टोप और शेर की मूँछों के बाजूबन्द।

"और ऐसे अनूठे शहर का चिड़ियाघर भी अजीब है संसार के सभी बड़े-बड़े नगरों में चिड़ियाघर हैं जिनमें जानवर पिंजड़ों और बाड़ों में बन्द रखे जाते हैं। नाइरोबी का चिड़ियाघर नाइरोबी राष्ट्रीय पार्क है। चालीस वर्ग मील में फैला यह छोटा-सा राष्ट्रीय पार्क नगर के इतना निकट है और इसमें दर्शकों की ऐसी भीड़-भाड़ रहती है कि इसे नगर का चिड़ियाघर ही समझना चाहिए। किन्तु ऐसा अनूठा चिड़ियाघर जिसमें दर्शक मोटर-रूपी कठहरों में बन्द रहते हैं और जिसमें जानवर, सिंह, तेंदुए, हाथी, गैंडे, जिराफ, जेब्रे और हिरन स्वतन्त्र विचरते हैं। संसार में कोई दूसरा नगर ऐसा नहीं जिसके इतने निकट ऐसे जंगली जानवर दिन-रात घूमते-फिरते हों, जिसके हवाई अड्डे के मैदान पर दिन-दहाड़े जानवर निकल आते हों, जिसकी गलियों में सैकड़ों लकड़बग्घे हर रात को कूड़ेदान कुरेदते नजर आते हों।

"दूसरे दिन दोपहर बाद हम अपनी लारी में राष्ट्रीय पार्क की ओर चले और लगभग पन्द्रह मिनट में ही गेट पर जा पहुँचे। पार्क के भीतर जेब्रे, नू, टामी, ग्रांटी आदि काफी संख्या में नजर आते थे। जिराफों का एक झुण्ड भी हमने देखा। इस जानवर को देखते-देखते मन कभी नहीं अघाता। जितनी भी बार मैंने जिराफ देखा उसकी लम्बी गरदन, छोटा-सा सिर और बेढंगी चाल पर मुझे हर बार हँसी आई। हम लोग कई घण्टे तक पार्क के भीतर घूमते फिरे। किन्तु दुर्भाग्य से उस दिन कोई शेर दिखाई न दिया।

"अब तक शाम हो चुकी थी और पार्क से बाहर जाने का समय हो गया था। हम लोग पार्क के गेट से कई मील दूर थे और अब गेट की ओर लौट रहे थे कि सहसा बाईं ओर

की झाड़ियों के पीछे से एक इम्पाला हिरनी लम्बी-लम्बी कुलाँचें भरती सड़क पर आ गई और लारी के आगे-आगे सड़क पर दौड़ने लगी। अभी इम्पाला पर नजर भी न टिकी थी कि उसी ओर से एक शेरनी निकली और वह भी सड़क पर आकर हमारी लारी के आगे-आगे दौड़ने लगी।

"कितना अद्भुत दृश्य था! हमारी लारी से लगभग पचास-साठ गज आगे हिरनी दौड़ी जा रही थी और उसके बीस-पच्चीस गज पीछे शेरनी, और शेरनी के पीछे हमारी लारी। हिरनी को केवल शेरनी की परवाह थी और शेरनी को केवल हिरनी की जरूरत थी। हम मनुष्यों से और हमारी लारी से उन्हें कोई सरोकार न था। जंगली जानवरों में मनुष्य के प्रति ऐसी उदासीनता केवल राष्ट्रीय पार्कों में ही सम्भव है, विशेषकर ऐसे राष्ट्रीय पार्कों में जहाँ हर रोज बहुत-से दर्शक आते हों। अब जानवर बार-बार मोटर देखते हैं और समझ लेते हैं कि यह विशाल जानवर (मोटर) उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाता, तो मोटर उनके जीवन का अंग बन

जाती है, वह चौंकने या सन्देह करने की चीज नहीं रहती। जानवरों की इस उदासीनता की पराकाष्ठा अफ्रीका के दो राष्ट्रीय पार्कों में है, एक तो दक्षिणी अफ्रीका का क्रूगर राष्ट्रीय पार्क और दूसरा नाइरोबी राष्ट्रीय पार्क।

"नाइरोबी राष्ट्रीय पार्क में तो ऐसा भी होता है कि आठ-दस शेरों का झुण्ड किसी पेड़ की छाया में लेटा पड़ा होता है और उनके चारों ओर बीसों मोटरें घेरा बनाकर खड़ी हो जाती हैं। कारों में बैठे आदमी और बच्चे उन्हें देख-देखकर खुश होते हैं, ताली बजाते हैं, बातें करते हैं, और शेर बिलकुल चुपचाप लेटे पड़े रहते हैं।"

"दिलीप," रमेश बोला, "उस दौड़ का क्या नतीजा निकला—हिरनी, शेरनी और मोटर की दौड़ का?"

"सौभाग्य कहिए या दुर्भाग्य, नतीजे को तो हम देख न सके। दो-तीन मिनट तक दोनों जानवर हमारी लारी के आगे-आगे सड़क पर ही दौड़ते रहे।

"किसी इम्पाला हिरन को दौड़ में पकड़ लेना शेर के बस की बात नहीं। किन्तु यह हिरनी अभी बच्ची ही थी। अतः शेरनी उसके पास आती जा रही थी। जब शेरनी उसके बिलकुल निकट पहुँच गई तो उसने एक लम्बी छलाँग लगाई कि हिरनी को दबोच ले। किन्तु ठीक उसी क्षण हिरनी ने भी एक ऊँची छलाँग लगा दी। शेरनी हिरनी के नीचे होती कई कदम आगे बढ़ गई और हिरनी हवा में ही मुड़ कर जमीन पर आई और दाईं ओर के मैदान में दौड़ने लगी। शेरनी भी मुड़ कर उसके पीछे हो ली और हमारे देखते-देखते दोनों जानवर झाड़ियों के पीछे ओझल हो गये।"

अभ्यास

विषय

१. नाइरोबी नगर की क्या विशेषता है ?

२. नाइरोबी के बाजारों में अधिकतर किस तरह की चीजें बिकती हैं ?

३. दिल्ली के चिड़ियाघर और नाइरोबी के चिड़ियाघर में क्या अन्तर है ?

४. नाइरोबी राष्ट्रीय पार्क के जानवर मोटरों को देख कर क्यों नहीं चौंकते ?

भाषा

५. तुम्हें कितने जंगली जानवरों के नाम मालूम हैं ? सूची बनाओ।

६. जल-प्रपात, पठार, महाद्वीप, मैदान, जंगल—ये शब्द भूगोल से सम्बन्धित हैं। इतिहास से सम्बन्ध रखने वाले ऐसे ही पाँच शब्द बताओ।

व्याकरण

७. 'बैठना' और 'खाना' क्रिया के भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल के एक बचन के पुल्लिग रूप लिखो :—

भूत	भविष्यत्	वर्तमान

८. इस पाठ में से पाँच निश्चयवाचक सर्वनाम ढूँढ़ो।

रचना

९. दिल्ली के चिड़ियाघर को देखकर उसका वर्णन लिखो।

: १९ :

आगे क़दम

[रघुवीरशरण मित्र]

आगे कदम बढ़ाया है।
आगे कदम बढ़ाया हमने
आगे कदम बढ़ाया है।
हमें आग पर चलना आता,
हम सूरज के बेटे हैं।
उस मिट्टी से हमें प्यार है
जिस मिट्टी में लेटे हैं।
मिट्टी सोना कर देंगे हम
सुख के फूल खिलाएँगे।
सबको साथ बढ़ाएँगे हम
सबको गले मिलाएँगे।
सोता विश्व जगाया हमने
सोता विश्व जगाया है।
आगे कदम बढ़ाया हमने
आगे क़दम बढ़ाया है।
आगे कदम बढ़ाया है।

अभ्यास

विषय

१. 'हमें आग पर चलना आता'—इसका भावार्थ लिखो।

भाषा

२. नीचे लिखे शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :—
आगे, बढ़ाया, प्यार, सुख ।

व्याकरण

३. 'आगे कदम बढ़ाया है ।' व्याकरण के अनुसार इस वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के भेद बताओ ।

४. इस कविता में जितनी संज्ञाएँ आई हैं, उन्हें नीचे अपने-अपने खानों में लिखो :—

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक

: २० :

हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे ?

[जवाहरलाल नेहरू]

आर्यों को हिन्दुस्तान आये बहुत जमाना हो गया। सब के सब तो एक साथ आये नहीं होंगे, उनकी फौजों पर फौजें, जाति पर जाति और कुटुम्ब पर कुटुम्ब सैकड़ों वर्ष तक आते रहे होंगे। सोचो कि वे किस तरह लम्बे काफिलों में सफर करते हुए, गृहस्थी की सब चीजें गाड़ियों और जानवरों पर लादे हुए, आये होंगे। वह आजकल के यात्रियों की तरह नहीं आये। वे फिर लौटकर जाने के लिए नहीं आये थे। वे यहाँ रहने के लिए या लड़ने और मर जाने के लिए आये थे। उनमें से ज्यादातर तो उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियों को पार करके आये, लेकिन शायद कुछ लोग समुद्र से ईरान की खाड़ी होते हुए आये और अपने छोटे-छोटे जहाजों में सिन्धु नदी तक चले गये।

ये आर्य कैसे थे ? हमें उनके बारे में उनकी लिखी हुई किताबों से बहुत-सी बातें मालूम होती हैं। उनमें से कुछ किताबें, जैसे वेद, शायद दुनिया की सबसे पुरानी किताबों में से हैं। ऐसा मालूम होता है कि शुरू में वे लिखी नहीं गई थीं। उन्हें लोग

जबानी याद करके दूसरों को सुनाते थे। वे ऐसी सुन्दर संस्कृत में लिखी हुई हैं कि उनके गाने में मजा आता है। जिस आदमी का गला अच्छा हो और वह संस्कृत भी जानता हो उसके मुँह से वेदों का पाठ सुनने में अब भी आनन्द आता है। हिन्दू वेदों को बहुत पवित्र समझते हैं। लेकिन "वेद" शब्द का मतलब क्या है? इसका मतलब है "ज्ञान"। और वेदों में वह सब ज्ञान जमा कर दिया गया है जो उस जमाने के ऋषियों और मुनियों ने हासिल किया था। उस जमाने में रेलगाड़ियाँ और तार और सिनेमा न थे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उस जमाने के आदमी मूर्ख थे। कुछ लोगों का तो यह ख्याल है कि पुराने जमाने में लोग जितने अक्लमन्द होते थे, उतने अब नहीं होते। लेकिन चाहे वे ज्यादा अक्लमन्द रहे हों या न रहे हों, उन्होंने बड़े मार्के की किताबें लिखीं जो आज भी बड़े आदर से देखी जाती हैं। इसी से मालूम होता है कि पुराने जमाने के लोग कितने बड़े थे।

मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि वेद पहले लिखे नहीं गये थे। लोग उन्हें याद कर लिया करते थे और इस तरह वे एक पुश्त से दूसरी पुश्त तक पहुँचते गये। उस जमाने में लोगों की याद रखने की ताकत भी बहुत अच्छी रही होगी। हम में से अब कितने आदमी ऐसे हैं जो पूरी किताबें याद कर सकते हैं।

जिस जमाने में वेद लिखे गये उसे वेदों का जमाना कहते हैं। पहिला वेद ऋग्वेद है। इसमें वे भजन और गीत हैं जो पुराने आर्य गाया करते थे। वे लोग बहुत खुशमिजाज रहे होंगे, रूखे और उदास नहीं; बल्कि जोश और हौसले से भरे हुए। अपनी तरंग में वे अच्छे-अच्छे गीत बनाते थे और अपने देवताओं के सामने गाते थे।

: २० :

हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे ?

[जवाहरलाल नेहरू]

आर्यों को हिन्दुस्तान आये बहुत जमाना हो गया। सब के सब तो एक साथ आये नहीं होंगे, उनकी फौजों पर फौजें, जाति पर जाति और कुटुम्ब पर कुटुम्ब सैकड़ों वर्ष तक आते रहे होंगे। सोचो कि वे किस तरह लम्बे काफिलों में सफर करते हुए, गृहस्थी की सब चीजें गाड़ियों और जानवरों पर लादे हुए, आये होंगे। वह आजकल के यात्रियों की तरह नहीं आये। वे फिर लौटकर जाने के लिए नहीं आये थे। वे यहाँ रहने के लिए या लड़ने और मर जाने के लिए आये थे। उनमें से ज्यादातर तो उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियों को पार करके आये, लेकिन शायद कुछ लोग समुद्र से ईरान की खाड़ी होते हुए आये और अपने छोटे-छोटे जहाजों में सिन्धु नदी तक चले गये।

ये आर्य कैसे थे ? हमें उनके बारे में उनकी लिखी हुई किताबों से बहुत-सी बातें मालूम होती हैं। उनमें से कुछ किताबें, जैसे वेद, शायद दुनिया की सबसे पुरानी किताबों में से हैं। ऐसा मालूम होता है कि शुरू में वे लिखी नहीं गई थीं। उन्हें लोग

उन्हें अपनी जाति और अपने आप पर बड़ा गरूर था। "आर्य" शब्द के माने हैं "शरीफ आदमी" या "ऊँचे दर्जे का आदमी"। और उन्हें आजाद रहना बहुत पसन्द था। पुराने जमाने के आर्य मौत को गुलामी या बेइज्जती से अच्छा समझते थे।

वे लड़ाई के फन में बहुत होशियार थे, और कुछ-कुछ विज्ञान भी जानते थे। मगर खेती-बाड़ी का ज्ञान उन्हें बहुत अच्छा था। खेती की कद्र करना उनके लिए स्वाभाविक बात थी, और इसीलिए जिन चीजों से खेती को फायदा होता था उनकी भी वे बहुत कद्र करते थे। बड़ी-बड़ी नदियों से उन्हें पानी मिलता था इसलिए वे उन्हें प्यार करते थे और उन्हें अपना दोस्त और मुरब्बी समझते थे। गाय और बैल से भी उन्हें अपनी खेती में और रोजमर्रा के कामों में बड़ी मदद मिलती थी; क्योंकि गाय दूध देती थी जिसे वे बड़े शौक से पीते थे। इसलिए वे इन जानवरों की बहुत हिफाजत करते थे और उनकी तारीफ के गीत गाते थे। उसके बहुत दिनों बाद लोग यह तो भूल गये कि गाय की इतनी हिफाजत क्यों की जाती थी और उसकी पूजा करने लगे। भला सोचो तो इस पूजा से किसका क्या फायदा था! आर्यों को अपनी जाति का बड़ा घमण्ड था और इसलिए वे हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों में मिलजुल जाने से डरते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे कायदे और कानून बनाये कि मिलावट न होने पाये। इसी वजह से आर्यों को दूसरी जातियों में विवाह करना मना था। बहुत दिनों के बाद इसी रिवाज ने आजकल की जातियाँ पैदा कर दीं। अब तो यह रिवाज बिलकुल ढोंग हो गया है। कुछ लोग दूसरों के साथ खाने या उन्हें छूने से भी डरते हैं। मगर यह बड़ी अच्छी बात है कि यह रिवाज अब कम होता जा रहा है।

अभ्यास

विषय

१. आर्यों की पुरानी किताबों के नाम बताओ।

२. आर्य गाय, बैल और नदियों से क्यों प्यार करते थे ?

३. आर्य हिन्दुस्तान में किस-किस रास्ते से आये थे ?

भाषा

४. खुशमिजाज, पुश्त दर पुश्त, ज्यादातर, तारीफ, हासिल— इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो।

५. 'आर्य' शब्द के क्या अर्थ हैं ?

व्याकरण

६. इस पाठ में से निजवाचक सर्वनाम ढूंढ़ो।

७. जिन शब्दों का रूप कभी नहीं बदलता उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे और, कि, जो। इस पाठ में से पाँच अविकारी शब्द ढूँढ़ो !

: २१ :

टेलीविजन

[राजमणिकम]

१५ सितम्बर, १९५९ को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने आकाशवाणी के टैलीविजन कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। यह कार्यक्रम प्रयोग के तौर पर शुरू किया गया है। आप जानना चाहेंगे कि टेलीविजन पर चित्र कैसे प्रसारित होते हैं? टेली-विजन का अर्थ है दूर के दृश्य को आँखों के सामने उपस्थित करना। हमें देखना है कि यह चमत्कार कैसे होता है!

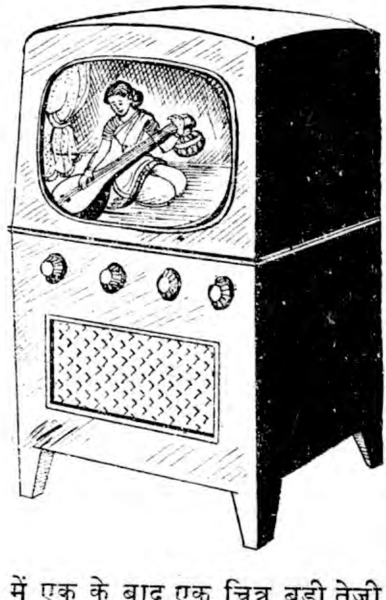

जब हमारी आँखें किसी वस्तु को देखती हैं, तो हमें उसकी पाँच चीजें दिखाई देती हैं—उस वस्तु का आकार (लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि), चमक, गति, रंग और अन्य वस्तुओं में उसकी स्थिति।

टेलीविजन में जो तस्वीरें आती हैं, उसमें केवल तीन बातें होती हैं—वस्तु का आकार यानी लम्बाई-चौड़ाई, चमक और गति। सिनेमा में एक के बाद एक चित्र बड़ी तेजी

से हमारी आँखों के सामने से गुजरते जाते हैं । पहले चित्र का प्रभाव हमारी आँखों के पर्दे पर से मिट नहीं पाता कि दूसरा चित्र सामने आ जाता है, अतः हमें लगता है कि हम अलग-अलग चित्र नहीं बल्कि पूरा दृश्य, जीती-जागती, चलती-फिरती तस्वीरें देख रहे हैं ।

टेलीविजन में चित्र और भी सूक्ष्म टुकड़ों में बँट कर हमारे सामने पर्दे पर आता है, पर ये टुकड़े इतनी तेजी से आते हैं कि हमें पर्दे पर जुड़ते हुए दिखाई नहीं पड़ते और हमें लगता है कि पूरा दृश्य ही हमारे सामने आया है । इसी प्रकार एक के बाद एक चित्र हमारे सामने आता रहता है और हम दूर के दृश्य को उसी रूप में देख पाते हैं । टेलीविजन कैमरा दृश्य-तरंगों द्वारा इन चित्रों को सेट पर फेंकता है ।

टेलीविजन सेट में एक रिसीवर लगा होता है, जो इन दृश्य-तरंगों को पकड़ता है । रेडियो रिसीवर और टेलीविजन रिसीवर में तरंगों के फैलाव का अन्तर होता है । टेलीविजन रिसीवर में रेडियो रिसीवर से यह फैलाव ५०० गुना ज्यादा होता है । रिसीवर से तरंगें चित्र-नली में जाती हैं ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि दृश्य को ठीक वैसा ही टेली-विजन के पर्दे पर दिखाने के लिए यह आवश्यक है कि कैमरे और चित्र-नली के इलैक्ट्रोनों का आवेग बिलकुल समान हो । इस काम के लिए दृश्य-तरंगों के साथ ऐसी तरंगें भी प्रसारित की जाती हैं, जिनकी सहायता से यह क्रिया ठीक रूप में हो सके ।

टेलीविजन में चित्रों के साथ-साथ इनसे सम्बन्धित ध्वनि को भी प्रसारित करना होता है । ध्वनि एक दूसरे ट्रान्समीटर से प्रसारित की जाती है । ध्वनि और चित्र प्रसारित करने

वाले ट्रान्समीटरों की तरंगों में निश्चित अन्तर रखा जाता है।

रेडियो के समान टेलीविजन में भी एरियल होता है। शब्दावली में इसी एरियल को एटेना कहते हैं। मशीनों आदि के चलने तथा तेज रोशनी के कारण टेलीविजन सेट के पर्दे पर चमकदार रेखाएँ खिंच जाती हैं और चित्र साफ-साफ दिखाई नहीं पड़ते। इस बाधा को आसानी से दूर नहीं किया जा सकता। कभी-कभी पर्दे पर एक बहुत बड़ा काला या सफेद धब्बा दिखाई पड़ता है। यह किसी चित्र के पहले या बाद में आता है। इसका कारण है कि किसी अन्य केन्द्र की तरंगें भी रिसीवर में आ गई हैं। इस बाधा को अच्छे किस्म के एटेना एरियल के द्वारा बहुत कुछ दूर किया जा सकता है।

अभ्यास

विषय

१. आकाशवाणी के टेलीविजन कार्यक्रम का उद्घाटन किसने और कब किया ?

२. टेलीविजन शब्द का क्या अर्थ है ?

भाषा

३. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—
दृश्य, उपस्थित, आकार, गति, स्थिति।

४. उक्त लेख के दूसरे पैराग्राफ की व्याख्या करो।

व्याकरण

५. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रिया-विशेषण कहते हैं। इस पाठ में क्रिया-विशेषण ढूँढो।

६. अपनी व्याकरण की पुस्तक से सर्वनाम के भेद याद करो।

: २२ :

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

[डा० हरिवंशराय 'बच्चन']

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

हो जाय न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं,
यह सोच थका दिन का पन्थी भी जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों में झाँक रहे होंगे,
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल !
यह प्रश्न शिथिल करता पद को भरता उर में विह्वलता है !

अभ्यास

विषय

१. थका हुआ पन्थी जल्दी-जल्दी क्यों चलता है ?

२. इन पंक्तियों की व्याख्या करो :—

"बच्चे प्रत्याशा में होंगे, नीड़ों में भाँक रहे होंगे,
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !"

३. अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो :—
प्रत्याशी, नीड़, चंचलता, विकल, हित, शिथिल, उर, विह्वलता ।

४. पथ, पन्थी, विह्वलता—इन शब्दों के पर्यायवाची बताओ ।

व्याकरण

५. इस कविता में से भाववाचक संज्ञा शब्द ढूँढ़ो ।

६. यह, किसके, कौन, कितनी—इन शब्दों के सर्वनाम-भेद बताओ ।

७. तो, भी—व्याकरण के अनुसार ये कैसे शब्द हैं ?

८. पथमें, दिनका, बच्चे, परोंमें, मुझसे, किसके, पदको—इन शब्दों के कारक-भेद बताओ ।

रचना

९. शहर के सायंकाल का वर्णन करो ।

: २३ :

खनिज तेल की खोज

[केशवदेव मालवीय]

तेल दो प्रकार का होता है—एक तो खाने वाला तेल होता है, जैसे सरसों, जैतून, नारियल, मछली वगैरा का जो मौजूदा वनस्पति और जानवरों से मिलता है; और दूसरा तेल भूगर्भ में करोड़ों वर्ष पहले मरे हुए जानवरों और पेड़-पौधों के दबकर सड़ने से बनता है। संसार के सभी महाद्वीपों में ढूंढ़ने से खनिज तेल मिल जाता है। भूगर्भ में हजारों फुट नीचे दबे हुए तेल को हम खनिज तेल कहते हैं।

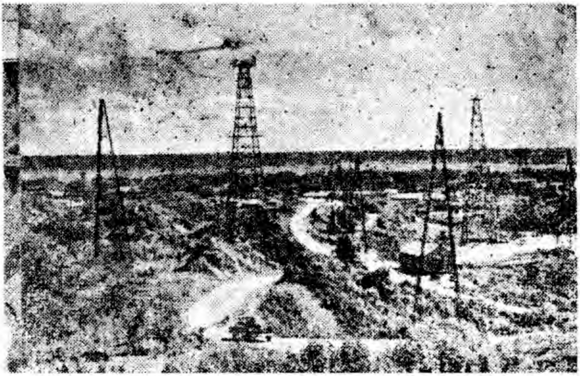

डिगबोई का एक तेल-क्षेत्र

खनिज तेल की तलाश की अद्‌भुत कहानी है। इससे बढ़कर रुचिकर या रहस्यमय कहानी शायद ही दूसरी कोई हो। लोग तो साधारणतः यह समझते हैं कि यह खनिज तेल

जिससे मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल तेल, सड़क बनाने वाला कोलतार और मोबिल आयल आदि निकलता है, बहुत आसानी से पृथ्वी में कुएँ खोदकर निकाला जा सकता है। परन्तु बात ऐसी नहीं है। इस तेल की तलाश में बहुत ज्यादा कठिनाइयाँ हैं। इसमें करोड़ों रुपये का व्यय है और तलाश करने के बाद भी तेल मिलने के मौके कम होते हैं। यह असम्भव है कि जमीन के ऊपर खड़े होकर कोई बता सके कि भूतल में तेल कहाँ छिपा होगा, पर तेल तलाश करने का विज्ञान अब बहुत आगे बढ़ गया है और हम यह जानते हैं कि अक्सर भूतल में एक मील से तीन मील तक नीचे पहाड़ों की तलहटियों और गुफाओं के अन्दर फैलकर यह तेल बालू में भरा पड़ा मिलता है। परन्तु जमीन के ऊपर से इसको बताना अत्यन्त कठिन है। इसे मालूम करने की कला अब काफी जानी जा चुकी है, पर फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

ठीक तरह से मालूम नहीं है कि करोड़ों वर्ष पहले यह तेल कैसे बना होगा, पर अधिकांश वैज्ञानिकों की यह धारणा है कि एक करोड़ वर्ष पहले से लेकर लगभग दस करोड़ वर्ष पहले तक की अवधि में भूगर्भ में पेड़-पल्लव और जन्तुओं के समुद्र के किनारे दब जाने से और सड़ने से ही तेल बना होगा। छिछले समुद्रों में अगाध जीव-जन्तुओं का संसार जब दब गया तो वहीं दबा पड़ा रह गया और उसके ऊपर पहाड़ों से बहकर मलबा उसको दबाता रहा, जिससे समुद्र पट गया और करोड़ों वर्ष में मलबे का पहाड़ बनता गया जो अब पत्थर की चट्टानों की तरह हमें दिखाई पड़ता है या जमीन के नीचे दबा है। यह याद रखना चाहिए कि पहाड़ से बहकर मैदान में मिट्टी जमा होने की क्रिया आदि-काल से आज तक बराबर जारी है। इन्हीं भूतल तलहटियों में

हजारों फुट नीचे चूने या बालू की पहाड़ वाली घाटियों में जीव-जन्तुओं के सड़ने से द्रव पदार्थ के रूप में खनिज तेल बालू के कणों में भरा पड़ा रहता है, जैसे शहद की मक्खियों के छत्ते में शहद भरा रहता है। लोग प्रायः समझा करते हैं कि भूतल में तेल की कोई नदी या झील होगी, पर ऐसा नहीं होता। छिछले समुद्र के पटने के बाद बालू के कणों में खनिज तेल बूँद-बूँद इकट्ठा होता है। बालू के कण ऊपर के दबाव से प्रायः पत्थर की चट्टान के समान हो जाया करते हैं। यदि ऊपर से दबाव का बोझ न पड़े तो तेल से भरे हुए यही बालू के कण मुलायम भी बने रहते हैं, जिन्हें अंग्रेजी में 'अनकनसोलीडेटेड सैंड' भी कहते हैं। तेल के बूँद अत्यन्त सूक्ष्म बालू के कणों में जकड़बन्द रहते हैं। तेल वाली पथरीली बालू की चट्टानों के ऊपर हजारों फुट दूसरी किस्म की चिकनी मिट्टी का मलबा भी आ जाया करता है जिसकी वजह से यह तेल अपनी जगह पड़ा रहता है और ऊपर नहीं भागता। याद रखिए कि तेल पानी से हलका होता है, इसलिए नीचे से ऊपर जाने के लिए मार्ग ढूँढ़ा करता है। यह हजारों फुट चिकनी मिट्टी की तहें तेल को दबाये रखने में ठीक उसी तरह काम देती हैं जैसे सोडा वाटर की बोतल का गोली वाला कार्क बोतल के अन्दर के सोडा पानी को दबाये रहता है। जितनी ही मोटी चिकनी मिट्टी वाली चट्टानें सतह से नीचे तक तेल की बालुई चट्टानों को दबाये रहती हैं, उतनी ही अधिक सम्भावना तेल पाने की उस जगह हुआ करती है।

समुद्री पानी से तेल का बड़ा सम्बन्ध रहता है क्योंकि पहले-पहल किनारे के छिछले समुद्र में ही पहाड़ों और दरियाओं से मलबा आकर लाशों को दबाता और सड़ाता है। यह हमारा विश्वास है कि करोड़ों वर्ष पहले जहाँ छिछला समुद्र था, वहाँ ही

यह तेल मिलता है, दूसरी जगह नहीं मिलता। यह समुद्र धीरे-धीरे पटता जाता है क्योंकि पहाड़ से आया हुआ मलबा उसको बराबर नीचे ढकेलता रहता है और दो-चार करोड़ वर्ष में तो समुद्र पहाड़ के मलबे से ढिकलकर मीलों नीचे चला जाता है। उदाहरण के लिए खम्भात की खाड़ी का समुद्र लीजिए जो आज कैम्बे के पास बहुत छिछली गहराई में पाया जाता है। अनुमान है कि किसी समय ६०-७० मील ऊपर अहमदाबाद के उत्तर में यह समुद्र रहा होगा। नदियों से मलबा आकर इस छिछले समुद्र को करोड़ों वर्ष तक पाटता गया, जीव-जन्तुओं को दबाता गया और इस तरह समुद्र के किनारे को नीचे ठेलता गया। इस प्रकार उन बालुई चट्टानों और जीव-जन्तुओं तथा पेड़-पल्लवों पर तह की तह जमती गई। इसी तरह लगभग छः-सात हजार फुट मलबा खम्भात की खाड़ी के ऊपर सैकड़ों वर्ग मील में जम गया जिसके नीचे तेल की सम्भावना पाई जाती है।

दुनिया में जितना भी तेल पाया जाता है, उसका अधिकांश इसी तरह प्राचीन काल के छिछले समुद्री किनारों में बना था। इस तरह के स्थानों को तेल के वैज्ञानिक 'काण्टीनेन्टल शैल्फ' के क्षेत्र कहते हैं। भूतत्ववेत्ताओं या जिओलोजिस्ट्स का यह अनुमान है कि असम से कश्मीर तक फैले हुए हिमालय पर्वत के दक्षिण और विन्ध्याचल के उत्तरी क्षेत्र में करोड़ों वर्ष पहले समुद्र बहता था, और इस समुद्र के किनारे उसी काल के जीव-जन्तु हिमालय और विन्ध्याचल से लाये हुए मलबों से दबकर तेल में परिवर्तित हो गये हैं। हिमालय से मलबा आकर इस छिछले सागर को पाटता गया, समुद्र पीछे हटता गया और साथ ही भूगर्भ के अन्दर भी ऐसे परिवर्तन होते गये जिनसे समुद्र जगह छोड़कर आज की जगह पर पहुँच गया। यह परिवर्तन बड़े-बड़े भूकम्पों और

पाताल की उथल-पुथल से हुआ करते थे। आज भी खम्भात की खाड़ी भारतवर्ष के पश्चिम के समुद्री किनारों से नीचे हटती जाती है। करोड़ों वर्ष के बाद हमारे देश का आज का किनारा और बढ़ जायगा और मीलों जमीन समुद्र हटने के कारण हमको मिल जायगी। अतीत काल से जीव-जन्तु नदियों ग्रौर पहाड़ों से बहकर समुद्र-तट को पाटते जाते हैं, ग्रौर इसी पटी हुई जमीन में नीचे तलहटियों में जीव-जन्तु सड़कर तेल बनाते हैं।

तेल की खोज के तीन मुख्य तरीके होते हैं :—

१. जिओलोजिस्ट लोग ग्रपने औजारों और भूमि-निरीक्षण-यन्त्रों द्वारा यह बताते हैं कि कहाँ छिछले समुद्रों में ऊपर से मलबे आकर तह पर तह बनाते गये होंगे।

२. जिओफिजिस्ट लोग आजकल की सतह के नीचे की इन तहों की गहराइयों को मालूम करते हैं और यह भी जानने का यत्न करते हैं कि अतीत काल में तेल बनकर कहीं बन्द हो गया है या नहीं। याद रखिए, जब तक ऊपर की चिकनी चट्टानें बने हुए तेल को भाप बनकर उड़ जाने से नहीं रोकेंगी, तब तक तेल का खजाना नहीं बनेगा। जिग्रोफिजिस्ट इन तेल के खजानों की गहराई ग्रौर स्थान पकड़ने के लिए कई प्रकार के यन्त्रों की सहायता लेते हैं ग्रौर पृथ्वी के ग्रन्दर बारूद से धमाका करके देखते हैं कि उसका शब्द नीचे कहाँ जाकर पथरीली चट्टानों से टक्कर खाकर वापस ग्राता है। इस तरह ग्रावाज की रफ्तार से नीचे पड़े हुए तेल ग्रौर बालू की चट्टानों की गहराई मापी जाती है। फिर भी इस तरह से गहराई का अन्दाजा भर ही किया जा सकता है।

३. आखिरी ग्रौर सबसे निश्चित तलाश करने का तरीका जमीन में कुआँ खोदने का होता है। ऊपर बताये गये तरीकों

से जिओलोजिस्ट और जिम्रोफिजिस्ट इंजीनियरों को कुआँ खोदने की जगह बताते हैं। तब वहाँ गहरा कुआँ खोदने वाले इंजीनियर ५ या १० या १५ हजार फुट की गहराई तक इन तेल-बालू की चट्टानों को ढूँढ़ने के लिए कुश्राँ खोदते हैं। ऐसा कुश्राँ खोदने में बहुत रुपया लगता है। कभी-कभी तो पहले कुएँ में एक-दो करोड़ रुपया तक खर्च हो जाता है और एक या दो साल का समय भी लग जाता है। फिर दूसरे कुएँ के खोदने में इतना खर्च तो नहीं होता, पर जैसी चट्टानें होती हैं उसी प्रकार का खर्च होता है। कभी-कभी कई कुएँ खोदने पर भी हजारों फुट नीचे के वे बालू के पहाड़ नहीं मिलते जिनमें तेल दबाव से पड़ा रहता है, और कुएँ खोदने पर जितना रुपया खर्च होता है वह सभी बेकार जाता है। पहले कुएँ को खोदने के बाद तेल के दर्शन हो जाने पर भी बहुधा तेल नहीं निकलता। फिर कई कुएँ खोदने पर वह जगह मिल पाती है जहाँ काफी मात्रा में तेल होता है। जब तक इतना तेल न मिले कि सब रुपया वसूल हो जाय और दस-बीस गुना ज्यादा मूल्य का तेल न मिल जाय, तब तक बराबर प्रयत्न होता रहता है। आधुनिक विज्ञान तेल की तलाश की इस विद्या को इतना सफल नहीं कर सका है कि तेल के कुएँ बेकार न खोदे जाय और पहले ही प्रयत्न में नीचे का छिपा हुश्रा तेल मिल जाय। बहुधा तेल-क्षेत्रों में अरबों रुपये लग जाने पर भी कभी तेल नहीं मिलता, परन्तु सावधानी और अच्छे इत्तिफाक की वजह से कभी पहले ही कुएँ में तेल मिल जाता है। इसलिए तेल पाने का कोई ठीक वैज्ञानिक नक्शा अभी मालूम नहीं है।

यह बड़े हर्ष की बात है कि कैम्बे और ज्वालामुखी में पहले ही कुएँ में तेल का प्रमाण मिल गया। अब यह जानने

के लिए काफी कुएँ खोदने पड़ेंगे कि तेल काफी क्षेत्र में है य. नहीं। इसमें एक या दो वर्ष और लग सकते हैं, तभी निश्चित रूप से तेल की मात्रा का अन्दाजा होगा। अगर कई कुएँ खोदने के बाद भी तेल की मात्रा काफी न मिली तो दूसरी

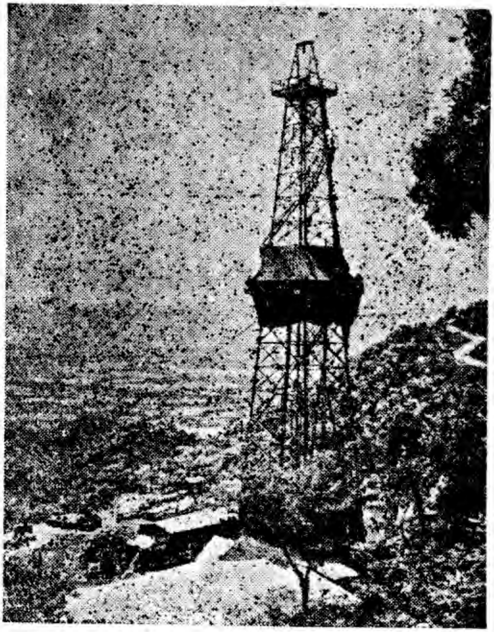

ज्वालामुखी में तेल-कूप की खुदाई

जगह हटकर तेल की खोज की जायगी, पर इस प्रयत्न को सरकार तब तक जारी रखेगी जब तक कि नीचे छिपा हुआ तेल का खजाना देश के लाभ के लिए न मिल जायगा।

—**'प्रसारिका' से साभार**

अभ्यास

विषय

१. तेल के मुख्य भेद कितने हैं ?

२. खनिज तेल किन-किन चीजों से और कसे बनता है ?

३. खनिज तेल से कौन-कौन सी चीजें बनती हैं ?

४. समुद्र से खनिज तेल का क्या सम्बन्ध है ?

५. खनिज तेल का पता कैसे लगाया जाता है ?

६. भारत में खनिज तेल के कुएँ कहाँ हैं और कहाँ-कहाँ तेल की खोज हो रही है ?

भाषा

७. भूगर्भ, भूतत्ववेत्ता, वैज्ञानिक, आधुनिक, परिवर्तित, परिवर्तन—इन शब्दों के अर्थ कोश में से देखकर लिखो।

८. वाक्यों में प्रयोग करो :—

तलहटी, छिछला, बालुई, पथरीली, खाड़ी।

व्याकरण

९. विशेषण किसे कहते हैं ? इस पाठ के अन्तिम पैराग्राफ में से विशेषण शब्द ढूँढ़ो।

१०. अविकारी शब्द किसे कहते हैं ? इस, जो, सभी, बहुत, फिर भी—इन शब्दों के अव्यय-भेद बताओ।

रचना

११. सभी तरह के तेलों के नामों की सूची बनाओ।

: २४ :

चन्द्रलोक की यात्रा

[सुशील कुमार]

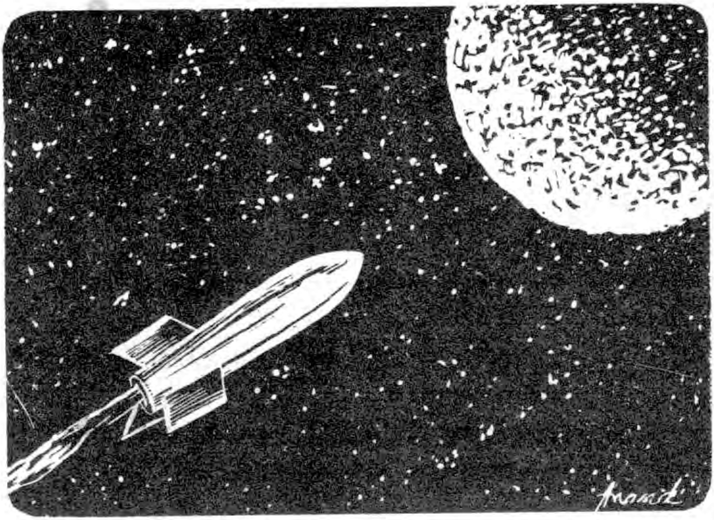

लगभग दो साल पहले तुमने सुना था कि एक बाल चन्द्र आसमान पर पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काट रहा है। उसे रूस के वैज्ञानिकों ने बनाया था। उसका कुल वजन लगभग सवा दो मन था। उसे 'स्पूतनिक प्रथम' कहते थे। इसके बाद रूस ने दूसरा उपग्रह भी छोड़ा जो लगभग १४ मन भारी था। अमेरिका ने भी ऐसे उपग्रह तैयार किये और चन्द्रमा की ओर फेंके। इन सभी उपग्रहों में ऐसी मशीनें लगी हुई थीं, जिनसे बहुत ऊपर आकाश में कैसी हवा है, कितना दबाव

है, कितनी गर्मी या सर्दी है, आदि बातों की सूचना मिलती थी।

बाद में रूस ने ऐसे राकेट छोड़े जिनमें कुत्ते, खरगोश और चूहे ऊपर भेजे गये। उनके साथ अपने आप फोटो लेने वाले कैमरे भी लगे हुए थे। कई बातों के बारे में जानकारी पाने के लिए ही इन जानवरों को भेजा गया था—इतने ऊपर जाकर इन जीवों पर क्या असर पड़ता है ? ये राकेट बहुत तेजी से ऊपर जाते हैं। यहाँ तक कि राकेटों की चाल कभी-कभी एक घण्टे में २५,२०० मील तक हो गई है, इससे गहरा झटका लगता है, सो यह झटका जीव सह सकते हैं या नहीं ? रूस ने जानवरों को रखकर जो राकेट भेजे, उन्हें धरती पर उतार भी लिया। फिर जानवरों की परीक्षा की गई और फोटो से भी देखा गया कि उन पर क्या असर पड़ा। वे जानवर आज भी जीवित और खुश हैं।

रूस ने जनवरी, १९५९ को 'लूनिक प्रथम' नाम का राकेट चन्द्रमा की ओर भेजा, पर वह चन्द्रमा के क्षेत्र को भी पार करके ऊपर चला गया और पृथ्वी की तरह सूर्य का चक्कर काटने लगा।

पर पिछले दिनों १२ सितम्बर, १९५९ को तीसरे पहर रूस ने 'लूनिक-२' नाम का राकेट चन्द्रलोक भेजा। इसमें ऐसी मशीनें लगी थीं कि उसे पृथ्वी पर से ही सीधा-टेढ़ा घुमाया जा सकता था। यह राकेट १३ सितम्बर को २ बजकर ३२ मिनट पर चन्द्रमा से टकराया और शान्तिसागर, निर्मलसागर तथा धनुषकोटि की खाड़ी के पास गिर गया। ये सागर चन्द्रलोक के बहुत बड़े-बड़े समुद्री खड्डे हैं, पर सूखे पड़े हैं। इनका नाम रूस ने रखा है। इस राकेट में रूस का

राजचिह्न झण्डा भी रखा हुआ था। उस पर लिखा था 'सोवियत संघ—१६५६'।

चन्द्रलोक के बारे में बहुत-सी बातें मालूम हो चुकी हैं और दिनोंदिन नई बातों का पता लग रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जल्दी ही चन्द्रलोक पर मनुष्यों की यात्रा ग्रासान हो जायगी, फिर तो लोग वहाँ रहने भी लगेंगे।

अब वह दिन दूर नहीं कि इस दुनिया के लोग चन्द्रलोक ही नहीं, बल्कि मंगल ग्रह तक भी यात्रा करने लगेंगे और हो सकता है कि लोग वहाँ पर जाकर बस भी जायें।

ग्रभ्यास

विषय

१. 'उपग्रह' से क्या समझते हो, बताओ।

२. उपग्रहों में लगी मशीनों से हमें क्या-क्या पता लगता है?

३. उपग्रह में जानवरों को क्यों भेजा गया?

४. किन-किन देशों ने उपग्रह छोड़े हैं और उनमें से किस देश का उपग्रह चन्द्रमा पर पहुँचा है?

भाषा

५. आसमान, पृथ्वी, वजन, हवा, सर्दी, समुद्र—इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताओ।

व्याकरण

६. नीचे लिखे शब्द व्याकरण के अनुसार कैसे हैं:—
अपना, इन, खरगोश, मिलती है, रूस।

७. कारक कितने और कौन-कौन से होते हैं?

८. सम्प्रदान कारक की परिभाषा और उसके विभक्ति प्रत्यय बताओ।

रचना

६. चन्द्रमा घटता-बढ़ता रहता है, इसका कारण लिखो।

: २५ :

बापू

['स्वर्ण सहोदर']

वीर थे तुम धीर थे तुम,
सिन्धु से गम्भीर थे तुम;
सरल बापू ! शान्त बापू !
पीड़ितों के पीर थे तुम।

सत्य के सरदार थे तुम,
सरलता साकार थे तुम;
हे अहिंसा के पुजारी !
धर्म के आधार थे तुम।

प्रेम के शुचि गान थे तुम,
एकता की तान थे तुम;
विश्व के कल्याण-पथ में,
पुण्य के वरदान थे तुम।

देश के रखवार थे तुम,
देश के पतवार थे तुम;
कोटि-कोटि प्रपीड़ितों के,
भाग्य के कर्तार थे तुम।

पतित जन के त्राण थे तुम,
दलित जन के प्राण थे तुम;
दीन जन का भुखमरों का,
कर रहे कल्याण थे तुम।

शान्ति थे अनुराग थे तुम,
लोकहित के मार्ग थे तुम;
है हमारे पथ-प्रदर्शक !
साधना, तप, त्याग थे तुम।

दनुजता के काल थे तुम,
मनुजता की ढाल थे तुम;
भाल माँ का जो उठा दे,
वह जननि के लाल थे तुम।

विश्व के मृदु प्यार थे तुम,
विश्व के गल-हार थे तुम;
हे मुहम्मद ! बुद्ध ! ईसा !
ईश के अवतार थे तुम !

देश के अभिमान थे तुम,
पूज्य और महान थे तुम,
युग-पुरुष ! हे युग-प्रणेता !
नर नहीं भगवान् थे तुम।

अभ्यास

विषय

१. इस कविता में 'तुम' शब्द से किसे सम्बोधित किया गया है ?

२. 'पीड़ितों के पीर थे तुम'—इसका भाव स्पष्ट करो।

भाषा

३. धीर, पीड़ित, साकार, शुचि, दलित, बाण—इन शब्दों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

४. इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :—
वीर, सत्य, प्रेम, पुण्य।

व्याकरण

५. इस कविता में बापू के लिए जिन-जिन विशेषणों का प्रयोग हुआ है, उन्हें लिखो।

६. हे युग-प्रणेता ! हे मुहम्मद ! हे अहिंसा के पुजारी !—इनमें कारक बताओ।

रचना

७. मुहम्मद, बुद्ध और ईसा के बारे में तुम क्या जानते हो, लिखो।

८. बापू की जीवनी पढ़कर उनके बचपन की कोई घटना लिखो।

: २६ :

क्रिकेट

[संकलित]

इस खेल में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ियों की दो टोलियाँ या टीमें होती हैं। दोनों टीमें बारी-बारी से खेलती हैं। यह खेल गेंद और बल्ले से खेला जाता है।

मैदान में बीचोंबीच एक चटाई सी बिछी रहती है। इसके दोनों छोरों पर तीन-तीन डण्डे गड़े रहते हैं, जिन्हें विकेट कहते हैं।

खेलने वाली टीम के दो खिलाड़ी एक-एक विकेट के सामने हाथ में बल्ला लेकर खड़े हो जाते हैं। अब दूसरी टीम का कप्तान अपने साथियों को खड़ा करता है। एक खिलाड़ी विकेट के पीछे गेंद पकड़ने के लिए खड़ा किया जाता है। दो खिलाड़ी दोनों विकेटों के पास गेंद फेंकने के लिए खड़े होते हैं।

बाकी आठ मैदान में इधर-उधर खड़े हो जाते हैं। इनका काम भी गेंद पकड़ना है।

गेंद फेंकने वाला एक तरफ के विकेट के पास से सामने के विकेट को गिराने के लिए गेंद फेंकता है। खेलने वाली टीम का जो खिलाड़ी उस विकेट के पास रहता है, वह अपने बल्ले से गेंद को मारकर दूर कर देता है। अगर वह गेंद को हटा न सके और गेंद जाकर विकेट से छू जाय, तो वह खिलाड़ी खेल से बाहर हो जाता है। इसे 'आउट होना' कहते हैं। तब खेलने वाली टीम का कप्तान उसकी जगह बैठे हुए खिलाड़ियों में से एक को भेजता है।

गेंद मारते ही खेलने वाली टीम के दोनों खिलाड़ी दौड़कर एक दूसरे की जगह पर पहुँच जाते हैं। अगर एक बार दोनों खिलाड़ी एक दूसरे के विकेट तक पहुँच जायँ, तो एक दौड़ या रन माना जाता है। इसी प्रकार वे जितनी बार दौड़ सकें, उतने ही रन बनेंगे। गेंद फेंकने वालों की टीम बल्ला मारने वालों के रन बनाने में रुकावट डालती है। गेंद पर बल्ले की चोट पड़ते ही वे लपककर गेंद को पकड़ लेते हैं और विकेट से छुआने की कोशिश करते हैं। अगर दौड़ने वाला विकेट तक न पहुँचा हो और गेंद विकेट से छुआ दी जाय, तो वह खिलाड़ी आउट हो जाता है।

आउट करने का एक ढंग और भी है। बल्ले से मारने पर यदि गेंद उछल जाय और उसे दूसरी टीम का खिलाड़ी लपककर हाथ में पकड़ ले, तो खिलाड़ी आउट हो जाता है।

यदि खिलाड़ी गेंद को इतनी जोर से मारे कि वह मैदान के छोर तक पहुँच जाय, तो बिना दौड़े चार रन मान लिये जाते हैं। यदि गेंद मैदान से बाहर निकल जाय, तो छः रन माने जाते हैं।

एक छोर से छः बार गेंद फेंकने के बाद छः बार दूसरे छोर से फेंकी जाती है। दूसरे छोर से फेंकने के लिए दूसरा खिलाड़ी रहता है।

गेंद फेंकने वाले बहुत होशियार होते हैं। वे कुछ ऐसे ढंग से गेंद फेंकते हैं कि अनाड़ी खिलाड़ी तो एक ही बार में आउट हो जाय। गेंद फेंकने वाले की हमेशा यह कोशिश रहती है कि दूसरी टीम का खिलाड़ी गेंद को मार न पाय, और गेंद जाकर विकेट को छू ले। कभी-कभी गेंद इतने धीरे आती है कि खिलाड़ी उसकी तेजी का गलत अन्दाजा कर लेता है और गेंद विकेट को उड़ा देती है। वह कभी दाहिनी ओर टप्पा खाकर विकेटों की ओर आती है और कभी बाईं ओर टप्पा खाकर उछलती और विकेटों को जा लगती है। गेंद फेंकने वाला कभी घूमती हुई गेंद फेंकता है जो ऐसी दिखाई देती है कि इधर-उधर जा गिरेगी, पर वह ठीक स्थान पर टप्पा खाकर विकेट को उड़ा देती है।

उधर बल्लेबाज भी प्रत्येक प्रकार की गेंद को मारने में चतुर होते हैं। वे गेंद फेंकने वाले को ऐसा छकाते हैं कि वह पसीने-पसीने हो जाता है, पर उन्हें आउट नहीं कर पाता। कभी दन से चौका और कभी छक्का जमाते हैं। देखने वालों को उस समय बड़ा आनन्द आता है जब इधर गेंद फेंकने वाला गेंद को पूरी चतुराई से फेंकता है और उधर बल्लेबाज रन पर रन बनाते जाते हैं।

जब एक-एक कर सभी खिलाड़ी आउट हो जाते हैं, तब दूसरी ओर के खिलाड़ी खेलते और पहले खेलने वाले खिलाते हैं। दो-दो बार खेल चुकने पर जिस टीम के रन अधिक होते हैं, उसकी जीत होती है।

क्रिकेट में विकेट के पीछे गेंद रोकने वाला बड़े काम का होता है। वह गेंद को इधर-उधर निकलने से रोककर लपक लेता है। यदि वह खिलाड़ी होशियार हो तो बहुत-से रन बचा देता है और कभी-कभी आँख झपकते गेंद को विकेटों से छुआकर उन्हें गिरा देता है और चिल्लाता है "आउट"।

खेल ठीक से खेला जा रहा है या नहीं, इसकी देखरेख के लिए एक आदमी होता है। वह 'अम्पायर' कहलाता है। अम्पायर ऐसा व्यक्ति होता है जो क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी हो और खेल की बारीकियों को समझ सके। वह किसी भी टीम का पक्ष नहीं लेता।

क्रिकेट में इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, भारत, वेस्ट इंडीज और पाकिस्तान ने बहुत नाम किया है। भारत के लाला अमरनाथ, वीनू मनकड, हजारे, उम्रीगर, मुश्ताक संसार के श्रेष्ठ खिलाड़ियों में माने जाते हैं। प्रिंस दिलीपसिंह ने क्रिकेट खेलने में नाम कमाया था और उनकी बड़ी धाक थी।

अभ्यास

विषय

१. क्रिकेट के खेल में प्रत्येक टोली में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
२. क्रिकेट के खेल में किस-किस चीज की जरूरत होती है ?
३. खिलाड़ी आउट किन-किन बातों से माना जाता है ?
४. किस-किस देश के खिलाड़ी क्रिकेट के खेल में निपुण हैं ?
५. अम्पायर और कप्तान क्या करते हैं ?

भाषा

६. विकेट, टीम, गेंद, बल्ला, चटाई, खिलाड़ी—इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।
७. 'नाम कमाना'—इस मुहावरे का अर्थ बताओ।

व्याकरण

८. इस पाठ में से विशेषण शब्दों को छाँटकर उनको अपने-अपने खाने में लिखो :—

गुणवाचक	परिमाणवाचक	संख्यावाचक

रचना

९. बताओ हमारे देश के प्रमुख क्रिकेट खिलाड़ी कौन-कौन हैं ?

: २७ :

महाराणा प्रतापसिंह और भामाशा

[संकलित]

(स्थान—**मेवाड़ का सीमाप्रान्त**)

[आगे-आगे घोड़े पर सवार राणा प्रतापसिंह, पीछे-पीछे घोड़े पर कुछ सरदार लोग]

राणा—मेरी विपत्ति के सहायक भाइयो, मेरे साथ तुम लोगों ने बड़े-बड़े दु:ख उठाए हैं और अन्त में अब यह दिन आया कि मुझ भाग्यहीन के साथ तुम्हें भी अपनी प्यारी जन्मभूमि को छोड़ना पड़ा है। आहा ! सच है "जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी !"

एक सरदार—अन्नदाता ! यह आपके कहने की बात है ! क्या आप अपने लिए यह कष्ट उठा रहे हैं ? जिस जन्म-भूमि की रक्षा में आप इतने दु:ख सह रहे हैं वह क्या हमारी नहीं है ? उसकी रक्षा करना क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है ?

राणा—पर भाई, इस अधम प्रताप के लिए जन्म-भूमि की रक्षा भी तो नहीं हुई ? अब तो वह जन्म-भूमि को भी शत्रुओं के हाथ में छोड़कर अज्ञातवास करने चला है।

सरदार—क्या हुआ पृथ्वीनाथ, कोई यह तो न कहेगा कि राणा प्रतापसिंह ने सुख की चाह में अपनी जननी जन्म-भूमि को यवनों के हाथ बेच दिया। परमेश्वर की लीला कौन जानता है, क्या आश्चर्य कि फिर ऐसा समय आवे जब कि श्रीमान् अपने देश को शत्रुओं से लौटा सकें ? धर्मावतार, उस समय कलंकित हाथ से तो इस राजसिंहासन को न छूएँगे।

राणा—इसमें तो सन्देह नहीं, और फिर अपनी आँखों से अपने देश की यह दुर्दशा देखते हुए जीते रहने से तो अनजान विदेश में मरना अच्छा है। क्योंकि—

"मरनो भलो विदेश को जहाँ न अपनो कोय।
माटी खाय जनावरां महा महोच्छव होय॥"

एक सरदार—ठीक है—

राणा—सच है। अच्छा, चलो भाइयो, चलो। अब इस स्थान की मोह-माया छोड़ो (**आँखों में आँसू भरकर**)—

"जेहि रच्छी इक्ष्वाकु सों अब लों रविकुल राज।
हाय अधम परताप तू तजत ताहि है आज॥
तजत ताहि है आज प्राण सम प्यारी जोही।
है मिवाड़ सुखसार कृपा करि छमियो मोही॥
रह्यो सदा करि भार काज आयो तुम्हरे केहि।
बिदा दीजिये हमैं भार हलकाय आजु जेहि॥"

[सब लोग सजल नेत्रों से बेर-बेर पीछे की ओर देखते-देखते घोड़ा बढ़ाते हैं और दूर से घोड़ा दौड़ाते, हाथ उठाकर, इन लोगों को रोकते हुए भामाशा दिखाई देते हैं।]

भामाशा—(**पुकार कर**) ओ मेवाड़ के मुकुट! ओ हिन्दू नाम के आश्रयदाता! तनिक ठहरो, इस दास की एक विनती सुनते जाओ। भामाशा को अकेले छोड़कर मत जाओ।

राणा—(**घोड़ा रोककर**) भामाशा ऐसे घबराये हुए क्यों आ रहे हैं? (**भामाशा पास जाते हैं और घोड़े से कूदकर राणा के पैरों पर रोते हुए गिरते हैं। राणा घोड़े से कूदकर भामाशा को उठाकर छाती से लगाते हैं। दोनों खूब रोते हैं।**)

राणा—मन्त्रिवर, तुम ऐसे धीर-वीर होकर आज ऐसे अधीर क्यों हो रहे हो?

भामाशा—प्रभो, मेरे अधैर्य का कारण ग्राप पूछते हैं ?

धिक् सेवक जो स्वामि काज तजि जीवन धारै।
धिक् जीवन जो जीवन हित जिय नाहिं विचारै।
धिक् सरीर जो निज कर्त्तव्य विमुख ह्वै बंचै।
धिक् जन जो तजि स्वामि काज स्वारथ हित संचै।
धिक् देश शत्रु किरतघन यह भामा जीवित नहिं लजत।
जेहि अछत वीर परताप बर असहायक देसहिं तजत।

राणा—परन्तु इसमें तुम्हारा क्या दोष है ? तुमने तो अपने साध्य भर कोई बात उठा नहीं रखी ?

भामाशा—अन्नदाता, यह ग्राप क्या कहते हैं ? परम स्वार्थी भामाशा ने ग्रापके लिए क्या किया ? ग्ररे ! आपके अन्न से पला हुआ यह शरीर सुख से कालक्षेप करे और आप वन-वन की लकड़ी चुनें ग्रौर पहाड़-पहाड़ टकराएँ। प्रतापसिंह स्वाधीनता-रक्षा के लिए, हिन्दू नाम अकलंकित करने के लिए देशत्यागी हों और भामाशा अपनी जन्म-भूमि-निवास का स्वर्गोपम सुख भोगे ! जिस राणा की जूतियों के कारण भामाशा भामाशा बना है, वही राणा पैसे को मुहताज हों, सहायताहीन होने के कारण निज देशोद्धार में असमर्थ हों, प्राणोपम जन्मभूमि को छोड़ मरुभूमि की शरण लें और भामाशा धनी-मानी बनकर, ऐसे उपकारी स्वामी की सेवा छोड़कर अन्य राजा की प्रजा बनकर सुखपूर्वक काल-यापन करे ! धिक्कार है ऐसे धन पर ! धिक्कार है ऐसे सुख पर !! धिक्कार है ऐसे जीवन पर !!!

राणा—पर भामाशा, तुम इसको क्या करोगे ? जो भाग्य में होता है वही होता है। ग्रब तुम क्या चाहते हो ?

भामाशा—धर्मावतार, आज मेरी एक विनती स्वीकार कीजिए। यही मेरी ग्रन्तिम प्रार्थना है।

राणा—क्या प्रतापसिंह ने तुम्हारी बात टाली है।

भामाशा—तो अन्नदाता, एक बेर फिर मेवाड़ की ओर घोड़े की बाग मोड़ी जाय। इस दास के पास जो पचीसों लाख रुपये की सम्पत्ति दरबार की दी हुई है उसी से फिर एक बेर

सेना एकत्रित की जाय और एक बेर फिर मेवाड़ की रक्षा का उद्योग किया जाय। जो इसमें कृतकार्य हुए तो भी ठीक ही है और नहीं तो फिर जहाँ स्वामी वहाँ सेवक, जहाँ राजा वहीं प्रजा।

[राणा सरदारों की ओर देखते हैं।]

भामाशा—आप इधर-उधर क्या देखते हैं ? अरे, यह धन मेरा या मेरे बाप का है ? यह सभी इन चरणों के प्रताप से है।

कविराज—धन्य मन्त्रिवर, धन्य ! यह तुम्हारा ही काम था—

जेहि धन हित संसार बन्यो बौरो सो डोलै।
जेहि हित बेचत लोग धर्म अपुने अनुमोलै॥

जो अनर्थ को मूल सूल हिय में उपजावै।
पिता पुत्र, पति पत्नि, अनुज सों अनुज छुड़ावै॥
सो सात पुरुष संचित धनहिं तृण समान तुम तजत हो।
धन स्वामि भक्त मन्त्री प्रवर ताहूँ पै तुम लजत हो॥

[बहुत से राजपूत और भीलों का कोलाहल करते हुए प्रवेश]

सब—महाराज, हम लोगों को छोड़कर आप कहाँ जा रहे हैं ? चलिए, एक बेर और लौट चलिये। जब सब कट मरें तब आपका जिधर जी चाहे, पधारें।

राणा—जो आप लोगों की यही इच्छा है तो और चाहिए क्या ?

[चारों ओर से "महाराणा की जय", "हिन्दू-पति की जय" आदि पुकारते हुए लोग उमंगपूर्वक कूदते-उछलते हैं।]

अभ्यास

विषय

१. राणा प्रताप मेवाड़ को छोड़कर क्यों जा रहे थे ?
२. भामाशा ने राणा प्रताप से क्या कहा ?
३. कविराज ने भामाशा के बारे में जो कविता कही, उसका भावार्थ लिखो।

भाषा

४. इन शब्दों के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो :—
   यवन, अज्ञातवास, कलंकित, राजसिंहासन, दुर्दशा, अधीर, विमुख, कृतकार्य।
५. इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :—
   शत्रु, पास, अच्छा, जीव।

व्याकरण

६. प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोध चिह्नों वाले आठ वाक्य इस पाठ में से लिखो।

७. व्याकरण के अनुसार शब्द-भेद बताओ :—
'इसमें तुम्हारा क्या दोष है ?'

रचना

८. "जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है।" इस विषय पर बीस पंक्तियाँ लिखो।

९. इस नाटक की कथा को अपनी भाषा में लिखो।

: २८ :

राखी

[सुभद्राकुमारी चौहान]

भैया कृष्ण ! भेजती हूँ मैं
राखी अपनी, यह लो आज,
कई बार जिसको भेजा है
सजा-सजा कर नूतन-साज,
लो ! आओ ! भुजदंड उठाओ,
इस राखी में बँध जाओ,
भरत-भूमि-सी जन्म-भूमि को
एक बार फिर दिखलाओ ।

(२)

वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान,
पढ़ते-पढ़ते आँखों में छा
जाता राखी का आख्यान,
मैंने पढ़ा शत्रुओं को भी
जब जब राखी भिजवाई,
रक्षा करने दौड़ पड़े वे
राखी - बन्द शत्रु - भाई

(३)

किन्तु देखना है, यह मेरी,
राखी क्या दिखलाती है ?

क्या निस्तेज कलाई पर ही
बँधकर यह रह जाती है ?
देखो भैया भेज रही हूँ
तुमको-तुमको राखी आज,
राखी राजस्थान बना कर
रख लेना राखी की लाज ।

(४)

बोलो सोच-समझकर बोलो,
क्या राखी बँधवाओगे ?
भीर पड़ेगी, क्या तुम रक्षा
करने दौड़े आओगे ?
यदि हाँ, तो यह लो ! मेरी इस
राखी को स्वीकार करो,
आकर भैया, बहन "सुभद्रा"
के कष्टों का भार हरो ।

अभ्यास

विषय

१. बहिन सुभद्रा कृष्ण भैया को राखी भेजते समय क्या कहती है ?

२. राखी का त्यौहार कब और कैसे मनाया जाता है ?

भाषा

३. निम्न शब्दों का दो-दो वाक्यों में प्रयोग करो :—
नूतन, आख्यान, निस्तेज, राखी, भुजदण्ड ।

४. 'राखी-बन्द शत्रु-भाई'—इस पद्यांश की व्याख्या करो ।

व्याकरण

५. कर्तृवाच्य से क्या समझते हो ? इस पाठ में से उदाहरण देकर बताओ ।

६. 'मैं भेजती हूँ' । इस वाक्य में कर्तृवाच्य है । इस वाक्य को कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलो ।

रचना

७. राखी के त्यौहार का वर्णन करो ।

: २६ :

हमारा पड़ोसी : नेपाल

[संकलित]

भारत के उत्तर में, कुमायूँ और सिक्किम के बीच, पहाड़ों, जंगलों और उपजाऊ घाटियों की एक पट्टी है। वह कोई सवा पाँच सौ मील लम्बी है। इसकी चौड़ाई कहीं १४० मील है और कहीं ६० मील। इसी का नाम नेपाल है। नेपाल के उत्तर में तिब्बत और दक्षिण में हमारे देश के उत्तर प्रदेश और बिहार के इलाके हैं। नेपाल के दक्षिणी भाग में जंगल और खेती के योग्य जमीन है। इसे तराई का इलाका कहते हैं। उत्तरी भाग पहाड़ी और ऊँचा-नीचा है। यह उत्तर में तिब्बत की सीमा से मिला हुआ है। धौलगिरि, कंचनचंगा और एवरेस्ट की ऊँची-ऊँची चोटियाँ इसी भाग में हैं। एवरेस्ट दुनिया की सबसे ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई समुद्र की सतह से २६००२ फुट या लगभग साढ़े पाँच मील है।

नेपाल की उपजाऊ घाटियों में कपास, चावल, गेहूँ, गन्ना और तम्बाकू की अच्छी खेती होती है। कई तरह की दालें भी बोई जाती हैं। फल और तरकारियाँ भी खूब होती हैं। साल और शीशम के घने जंगल नेपाल की बड़ी दौलत हैं। तरह-तरह के बाँस भी यहाँ पाये जाते हैं। दो हजार फुट से चार हजार फुट तक की ऊँचाई वाले भागों में चाय भी पैदा होती है।

भारत की तरह नेपाल में भी तीन मौसम होते हैं—सर्दी, गर्मी और बरसात। पर यहाँ गर्मी ज्यादा नहीं पड़ती। हाँ, वर्षा खूब होती है। जंगल अधिक होने का एक कारण यह

वर्षा भी है। इन जंगलों में बड़े-बड़े जानवर, जैसे शेर, चीते, हाथी, भेड़िये और लकड़बग्घे बहुत हैं। कस्तूरी यानी मुश्क वाला हिरन नेपाल ही के पहाड़ों पर पाया जाता है। पालतू जानवरों में भैंसों की संख्या अधिक है।

नेपाल की धरती में ताँबा, जस्ता, सीसा आदि का खजाना भरा पड़ा है। वहाँ भूरे रंग का कोयला और चूने का पत्थर भी काफी मिलता है। कहीं-कहीं संगमरमर भी पाया जाता है।

नेपाल की आबादी कोई ८०-९० लाख है। अधिकतर नेपाली मंगोल जाति के हैं। उत्तर में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की गोद में रहने वाले लोग या तो तिब्बती हैं, या मिली-जुली नस्ल के। ये "भोटिये" कहलाते हैं। दक्षिण की ओर ब्राह्मणों और क्षत्रियों के परिवार हैं। इनके पुरखे किसी समय भारत से गये थे। नेपाल वालों पर बौद्ध और हिन्दू, दोनों धर्मों का असर है, इसीलिए ये लोग इन दोनों धर्मों में विश्वास रखते हैं। नेपाल में २,७०० से अधिक मंदिर हैं। उनमें पशुपति-नाथ महादेव का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। वहाँ हर साल शिवरात्रि के दिन बड़ा भारी मेला होता है। इस मेले में भारत से भी हजारों यात्री जाते हैं।

नेपाल में पशुपतिनाथ का मन्दिर

नेपाल की तराई में अधिकतर गोरखाली रहते हैं। यही वह गोरखा जाति है, जिसकी बहादुरी और वफादारी की कहानियाँ संसार के कोने-कोने में कही जाती हैं।

यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें "परबतिया" या पहाड़ी भाषा का अधिक प्रचार है। यह हिन्दी से बहुत मिलती-जुलती है। भोटिये तिब्बती भाषा बोलते हैं और लिखने में भी उसी भाषा की लिपि काम में लाते हैं।

काठमाँडू नेपाल की राजधानी है। यहीं नेपाल के महाराजा रहते है। पहाड़ों की गोद में बसा यह सुन्दर नगर नेपाल के राजनीतिक और सामाजिक जीवन का केन्द्र है। १९५० ई० तक नेपाल में एक ऐसा राजतन्त्र था जिसमें सारा अधिकार प्रधान मन्त्री के हाथ में ही होता था। न केवल जनता की आवाज ही अनसुनी की जाती थी, बल्कि प्रधान मन्त्री के सामने महाराजाधिराज की कोई ताकत भी न थी। प्रधान मन्त्री का पद खानदानी था और उन्हीं को सब अधिकार हासिल थे। वे राणा कहलाते थे और राणाशाही तानाशाही का दूसरा नाम बन गया था।

एक तरफ जनता बेचैन थी और दूसरी तरफ महाराजा। फल यह हुआ कि राणाशाही के विरुद्ध जनता के आन्दोलन उठ खड़े हुए। तभी नवम्बर, सन् १९५० ई० में एक दिन महाराजा चुपके से दिल्ली चले आये। भारत की सरकार और प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें बड़े आदर के साथ अपना मेहमान बनाकर रखा। महाराजा का काठमाँडू से चला आना जनता के आन्दोलनों के लिए एक बहुत बड़ा संकेत बन गया। जनता के आन्दोलन खूब तेजी से चलने लगे। अन्त में राणाशाही को घुटने टेकने पड़े और महाराजा फिर काठमाँडू वापस आ गये। जनता की लोक-राज्य की माँग उन्होंने मान ली और १८ फरवरी, १९५१ को नेपाल में एक नये शासन का ऐलान हुआ। उस ऐलान के अनुसार राजतन्त्र कायम रहा, पर महाराजा ने जनता

के प्रतिनिधियों की सलाह से ही राजकाज चलाने का इत्मीनान दिलाया। अब नेपाल लोक-राज्य के सिद्धान्तों पर आगे बढ़ रहा है।

नेपाल में उद्योग-धन्धे अधिक नहीं हैं। विराट नगर में दो जूट मिलें, एक शक्कर मिल, एक दियासलाई का कारखाना और एक सूती मिल है। वीरगंज नेपाल का दूसरा कारोबारी नगर है। यहाँ एक दियासलाई का कारखाना और एक सिगरेट बनाने का कारखाना है। धान कूटने वाली मिलें तो तराई में कई जगह हैं।

शिक्षा का प्रसार कम हुआ है। स्कूलों की संख्या अधिक नहीं है। कालेज काठमाँडू और वीरगंज में हैं। अभी कोई विश्वविद्यालय नहीं खुला है। यहाँ के कालेजों का सम्बन्ध पटना विश्वविद्यालय से है। नेपाल के विद्यार्थी ऊँची शिक्षा लेने भारत भी आते हैं। हमारे देश के साथ नेपाल का दोस्ती का सम्बन्ध बहुत पुराना है। आजकल एक विश्वविद्यालय खोलने की योजना बन गई है। राणा-राज में नेपाल में कोई अखबार नहीं था। पर अब कई अखबार निकलने लगे हैं। जुलाई १९५६ ई० से अंग्रेजी का एक दैनिक अखबार भी शुरू हुआ है।

कुछ समय पहले तक नेपाल के बारे में लोगों की जानकारी बहुत कम थी। अब भारत से काठमाँडू तक अच्छी सड़क बन गई है और यात्रियों के लिए बड़ी सुविधा हो गई है। नेपाल-वासी अब भारत और अन्य देशों को आसानी से आ-जा सकते हैं। सिंचाई और बिजली की एक योजना भी यहाँ आरम्भ हो चुकी है। इसके सफल होने पर नेपाल उन्नति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ेगा।

अभ्यास

विषय

१. नेपाल भारत के किस ओर है और उसकी सीमा भारत के किस-किस प्रदेश के साथ लगती है ?

२. राणाशाही शासन से क्या समझते हो ?

३. नेपाल की खनिज सम्पत्ति और उपज के बारे में बताओ।

४. नेपाल में अधिकतर किस जाति के लोग रहते हैं और उनकी क्या विशेषता है ?

भाषा

५. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताओ :—
असर, बहादुरी, नस्ल, ऐलान, कायम।

६. 'घुटने टेकना'—इस मुहावरे का भावार्थ बताओ।

व्याकरण

७. इस पाठ में से कर्म और करण कारक के नमूने ढूंढ़ो।

८. 'अच्छी खेती होती है।' इस वाक्य को भूत और भविष्य काल में बदलो।

रचना

९. दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत-शिखर एवरेस्ट नेपाल में है। तुम उसके बारे में क्या जानते हो, बताओ।

: ३० :

झाँसी वाली रानी

[सुभद्राकुमारी चौहान]

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नई जवानी थी।
गुमी हुई आजादी की कीमत सब ने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठानी थी।

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कानपूर के 'नाना' की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी।
'नाना' के संग पढ़ती थी वह, 'नाना' के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, उसकी यही सहेली थी।

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद जबानी थीं।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार।
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार।
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आयी लक्ष्मीबाई झाँसी में।
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,
सुभट बुन्देलों की बिरुदावलि-सी वह आई झाँसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया
शिव से मिली भवानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब बड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

उदित हुग्रा सौभाग्य-मुदित महलों में उजियाली छायी,
किन्तु काल-गति चुपके-चुपके काली घटा घेर लायी।
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भायीं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आयी।
निःसतान मरे राजाजी
रानी शोक-समानी थी।

बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया।
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।

अभ्यास

विषय

१. फिरंगी कौन थे और उन्हें दूर भगाने की सब ने मन में क्यों ठानी थी ?

२. निम्न पंक्तियों की व्याख्या करो :—

नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार।
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवाड़॥

भाषा

३. इन शब्दों के अर्थ बताओ :—

भृकुटि, दुर्ग, गाथाएँ, आराध्य, वैभव, नि:सन्तान।

४. मरदानी, फिरंगी, मुँहबोली, अवतार—इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करो।

: ३१ :

एक साथ पूरी, दूसरी अधूरी

[पद्मश्री आरती साहा]

तब मैं बहुत छोटी केवल चार वर्ष की थी, जब मेरे चाचा मेरी उँगली पकड़कर मुझे तैरना सिखाने के लिए हुगली के किनारे ले गये। यही था मेरे तैराकी-जीवन का श्रीगणेश। इसके बाद वर्षों तक, मैं इस नदी में गोते लगा-लगाकर उसकी चंचल लहरों से खेलती रही। होश सम्हालने पर मेरी केवल एक ही लालसा थी—इंगलिश चैनेल तैरकर पार करने की। इस महत्वाकांक्षा ने मुझे कठिन परीक्षा के समय भी विचलित नहीं होने दिया।

इंगलैंड जाने से पहले मेरा दैनिक जीवन बहुत ही व्यस्त रहा। रोज सवेरे कालेज जाती और वहीं से सीधे स्विमिंग पूल। दो घंटे तैरने का अभ्यास करती और जैसे-तैसे भोजन कर दक्षिण-पूर्व रेलवे के कार्यालय में अपने काम पर हाजिर होती। शाम को घर लौटते ही पाठ्य-पुस्तकों में डूब जाती। छुट्टी के दिनों में भी आराम करने का कोई मोह नहीं था। फुरसत मिलते ही मैं अपने ध्येय की पूर्ति के लिए आर्थिक साधन जुटाने में लग जाती थी।

रेलवे के जनरल मैनेजर, मेरे विशिष्ट पदाधिकारियों और कार्यालय के साथियों—सभी ने तैरने का नियमित अभ्यास करने में मेरी पूरी सहायता की और इस बीच मेरे लिए निरन्तर ८ घण्टे तैरने के अभ्यास की व्यवस्था हो गयी। इस प्रकार जब मुझे सफलता मिल गयी, तो कलकत्ता विश्वविद्यालय ने भारत सरकार से इंगलिश चैनेल की तैराकी-प्रतियोगिता के लिए मेरे नाम की सिफारिश की।

इस तरह एक दिन मैं आशा और उमंग-भरे मन से अपने मैनेजर के साथ विमान में बैठकर लन्दन और वहाँ से डोवर पहुँच गयी, जहाँ मुझे इंगलिश चैनेल को चुनौती देने की तैयारी करनी थी। दिन आते और चले जाते, लेकिन मैं घण्टों पानी में तैरती रहती। यहाँ तैराकी का जो प्रशिक्षण दिया जाता है, उसके अन्तर्गत ज्वार-भाटे के समय पानी के खिचाव के बारे में प्रारम्भिक जानकारी दी जाती है। यह भी बताया जाता है कि चैनेल पार करने में वास्तव में कितने मील तैरना पड़ता है। ब्रिटेन और फ्रान्स के बीच चैनेल का सबसे संकीर्ण भाग २१ मील लम्बा है। यदि मनुष्य के पंख होते, तो वह सरलतापूर्वक इस पार से उस पार उड़कर चला जाता। किन्तु ज्वार-भाटे के समय पानी के खिचाव में फँसने के कारण ४२ मील तैरे बिना काम नहीं बन सकता। यदि मौसम साफ हो, तो पानी के उतार के समय चैनेल पार करना कुछ सरल हो जाता है; लेकिन पानी के खिचाव अथवा लहरों के बारे में कोई यह नहीं बता सकता कि वे मित्र बनकर स्वागत करेंगी या शत्रु बनकर विरोध। यों लम्बे फासले के तैराक के लिए बीस से तीस मील तैरना कोई बड़ी बात नहीं; किन्तु इन

बाधाओं के कारण चैनेल की छाती चीरकर आगे बढ़ना उसके लिए बड़ा कठिन हो जाता है।

२७ अगस्त १९५९ को चैनेल तैराकी-प्रतियोगिता थी। एक दिन पहले, मैं अपने साथियों के साथ, विमान से कैले और वहाँ से बस द्वारा मध्य-रात्रि के पहले, फ्रान्सीसी तट पर केप ग्रिस नेज़ पहुँच गयी। वहाँ सागर-तट पर प्रतियोगिता का श्रीगणेश देखने के लिए पहले से ही पत्रकारों और लोगों का जमघट लगा हुआ था। एक तरफ भारी भीड़ थी और दूसरी तरफ सागर की उत्ताल तरंगें। पिछले दिन साफ मौसम देख मैं बड़ी प्रफुल्लित थी; लेकिन आज तो जैसे सागर भी सावधान हो चुका था और जोर-जोर से गरज रहा था।

हमारे साथ जो डोंगियाँ जाने वाली थीं, उनमें से कई का अब तक भी कोई पता नहीं था। अशान्त लहरों ने यन्त्र-चालित नावों को किनारे नहीं लगने दिया। हम सोच ही रहे थे कि आज प्रतियोगिता नहीं होगी; किन्तु यह क्या ! तभी हमें प्रतियोगिता शुरू होने का संकेत दे दिया गया। जिन प्रतिस्पर्धियों की डोंगियाँ आ चुकी थीं, वे पानी में उतर गये और उनकी डोंगियाँ भी उनके पीछे-पीछे चलने लगीं। देखते-देखते दस मिनट बीत गये। बिना डोंगी वाले प्रतिस्पर्धी अभी उनकी प्रतीक्षा मे खड़े हुए थे। मैंने यह सोचकर कि मेरी डोंगी बाद में मुझे खोज लेगी पानी में छलाँग मारनी चाही; लेकिन रोक दी गयी। इस तरह दस मिनट और निकल गये। मेरे मन की स्थिति जड़ से उखड़कर गिरने वाले वृक्ष की भाँति होने लगी। हमारा एक-एक क्षण एक-एक युग-सा बीत रहा था। बीस मिनट बाद दूर से मेरी नाव आती हुई दिखाई दी। खारे पानी से त्वचा की रक्षा के लिए मैं अपने शरीर पर पहले ही

ग्रीस मल चुकी थी। नाव के किनारे पर लगते ही मैं पानी में कूद पड़ी।

मैं ४० मिनट पिछड़ चुकी थी। सो आगे बढ़ने के लिए मैंने तेजी से हाथ चलाने शुरू किये; लेकिन यह समझने में देर नहीं लगी कि ऐसा करने से तो मैं बहुत जल्दी थक जाऊँगी। तभी मैंने देखा कि मेरी नाव आस-पास कहीं नहीं है। और एक चिन्ता ने आ घेरा! फिर भी मैं बराबर आगे की ओर तैरती रही। बाद में मुझे पता लगा कि मेरी नाव तेज लहरों के कारण उलट गयी थी; पर मेरे मैनेजर-सहित नाविक दल ने अन्धकार में ही लहरों का सामना कर नाव को वापस पलटा, उसमें से पानी उलीचकर बाहर फेंका और मेरी खोज में आगे बढ़े। सौभाग्य की ही बात थी कि उन्होंने मेरा पता लगा लिया। अब वे मुझ से आगे बढ़ चुके थे और मैं एक चमकती हुई छोटी-सी बत्ती की सीध में तैरती चली जा रही थी।

मेरे चारों ओर अथाह जल-राशि और घने अन्धकार का साम्राज्य था। तैरते-तैरते बचपन की कई स्मृतियाँ सजीव होने लगीं। मैं दो वर्ष की थी कि मेरी माँ चल बसी। पिताजी ने कितने लाड़-प्यार से पाला-पोसा। उन्हीं ने मुझे इंगलिश चैनेल तैरकर पार करने अथवा उसी की गोद में विलीन हो जाने की प्रेरणा दी थी। मेरे चाचा जी और भाई साहब आदि ने कितनी लगन के साथ मुझ छोटी बच्ची को तैरने के गुर सिखाये थे। सभी मेरी सफलता की कामना करते थे।

उन स्मृतियों में मैं ऐसी खोई कि क्षितिज पर सूर्योदय की सूचना देने वाली लालिमा को ही मेरा ध्यान भंग करना पड़ा। प्रकाश होने पर मुझे यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ कि ग्रेटा एंडरसन और मैं दोनों पास-पास ही तैर रही थीं। मैं

काफी कष्ट का अनुभव कर रही थी। खारे पानी ने मेरी जिह्वा को सुजाकर 'डबल' कर दिया था। सुवह १० बजे डोवर कैसल दिखाई दिया। बस, अब तट पर पहुँचने के लिए केवल ५ मील का फासला तय करना शेष रह गया था; लेकिन भाग्य तो परीक्षा लेने पर उतारू था। मेरी डोंगी के मुखिया ने अपना रास्ता वदला और मुझे डोवर कैसल की सीध में आगे बढ़ने के लिए कहा। मैंने वैसा ही किया; पर यही मेरी भारी भूल हुई, जिसके लिए बाद में मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। समुद्र में भाटे का समय था। पानी के उतार के कारण प्रवाह बिलकुल मेरे विपरीत था। पहले वाला रास्ता भी नहीं पकड़ा जा सकता था; क्योंकि तब तक वहाँ का प्रवाह भी विपरीत हो चुका था। लहरों से सहारा मिलने की आशा में आगे की ओर बढ़ना ही सही प्रतीत हुआ; किन्तु ५ घण्टे में केवल दो मील आगे तैर सकी। थोड़ी देर तो हवा शान्त रही; लेकिन फिर उसमें तेजी आ गयी और लहरों की ऊँचाई बढ़ गयी। नाव के मुखिया ने तो अनुकूल दिशा की आशा छोड़ मैनेजर को मुझे पानी से बाहर खींच लेने की ही सलाह दे दी। नाव में बैठे डा० गुप्ता ने भी अवरुद्ध कण्ठ से मुझे अपना प्रयास छोड़ देने को कहा।

सफलता के इतने निकट आकर प्रयास छोड़ दूँ? भला मेरे देशवासी क्या कहेंगे? मैं जी-जान से अपने प्रण पर डटी रही। अब उन लोगों ने मुझ से बलपूर्वक कहना शुरू किया और मुझे यह भी बताया गया कि मैं पिछले पन्द्रह मिनट से आगे तैरने की बजाय लहरों के प्रवाह में पीछे की ओर ही खिंची चली जा रही हूँ। अब क्या चारा था? मुझे हार मान लेनी पड़ी। आत्मग्लानि के मारे गोता लगाकर जल-समाधि

लेना ही मुझे श्रेयस्कर लगा; लेकिन इतने में नाव के मुखिया ने मुझे पानी से ऊपर खींच लिया। मैं फूट-फूटकर रो पड़ी। मेरी नाव किनारे से सिर्फ तीन मील दूर थी—सिर्फ तीन मील ! कैसा दुर्भाग्य था !

मैं भग्न हृदय लेकर मार्गेट लौटी, जहाँ इस घोषणा ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया कि महिला-प्रतिस्पर्धियों में मुझे तृतीय पुरस्कार दिया गया है। मेरा खोया हुआ साहस फिर लौट आया।

इससे प्रोत्साहित होकर मैंने अगली बार फिर समुद्र में तैरने का अभ्यास शुरू किया; लेकिन अस्वस्थता के कारण उस दिन डाक्टरों ने मुझे आराम करने की सलाह दी। अन्ततः मेरे प्रयास की अगली तारीख निश्चित की गयी। इस बीच मेरे मैनेजर को अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। पर अस्वस्थ होते हुए भी मेरे दूसरे प्रयास के समय वे मेरे सामने आ खड़े हुए। उनके मीठे शब्दों ने मेरा उत्साह दूना कर दिया।

२६ सितम्बर का दिन, सुबह साढ़े पाँच का समय, केप ग्रिस नेज़ के सामने फ्रान्सीसी तट। थोड़ी दूर पर डोंगी खड़ी थी। तभी मैंने लहरों का आलिङ्गन किया। एक घण्टे तक तो मौसम साफ रहा और सागर भी शान्त; पर इसके बाद हवा ने तेजी पकड़ ली। लहरें मनमाने ढंग से मुझे भुलाने पर आमादा हो गयीं। सामने की हवा के कारण मुझे श्वास लेने में कठिनाई होने लगी। मैंने डोंगी पर बैठे हुए लोगों को बताया कि मुझे तैरने में कष्ट हो रहा है। बाद में पता चला कि मौसम अच्छा नहीं था। मैनेजर ने 'करो या मरो' का मन्त्र सुनाकर मुझे साहस बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित

किया। इधर लगातार एक-के-बाद-एक लहर की टक्कर के कारण मुझे अंग-संचालन की गति में परिवर्तन करना पड़ा। कड़ाके की ठण्ड से मेरी हड्डी-हड्डी टूटने लगी और जब मैंने नाव के लोगों को कम्बल ओढ़े देखा तब तो मेरा मन भी आराम के लिए तड़प उठा। उन्हें सैंडविच खाते देख मुझे भी भूख महसूस होने लगी।

मैं अपने चारों ओर फैले अथाह जल में तैरती जा रही थी। इतने में मेरी आँखों के सामने डोवर कैसल नाच उठा। एक-बारगी मैं काँप उठी; सर्दी के कारण नहीं वरन् इसलिए कि पिछली बार भी इसी प्रकार यह कैसल दिखाई पड़ा था। मुझे अंग-संचालन की गति के बारे में फिर सावधान किया गया। शाम के ७ बजे थे और अन्धकार बढ़ता जा रहा था। एक तरफ तो लहरों का उपद्रव बढ़ता जा रहा था, और दूसरी तरफ शीत के मारे मेरा रक्त जम-सा गया था। हिम्मत टूटने लगी। तभी मेरी नाव के मुखिया कप्तान हचिनसन ने प्रोत्साहित किया—"घबराओ मत, जीत तुम्हारी ही है।" उनके ये शब्द सुनते ही मेरी सारी थकावट भाग गयी और मैंने अपनी गति और भी तेज कर दी।

अब मुझे अपना लक्ष्य—किनारा—साफ नजर आ रहा था। वहाँ खड़ी भीड़ हर्ष-ध्वनि कर रही थी। मैं चट्टानों की ओर जाने के बजाय बालू-तट पर आ लगी। हाथ-पैर में बुरी तरह खरोंचें थीं और उनसे खून टपक रहा था। मुझे भय होने लगा कि, नियम के अनुसार, पानी से बाहर निकलते ही मैं ६ गज चल भी सकूँगी या नहीं। लेकिन लक्ष्य-प्राप्ति की उमंग में थकावट तो पहले ही नदारद हो चुकी थी। ६ गज आसानी से चल आयी और ऐसा लगा कि अभी भी वापस

फ्रान्स तक चलकर जा सकती हूँ। चैनेल पार करने में मुझे १६ घण्टे २० मिनट लगे। इस तरह मेरा एक चिर-अभिलाषित स्वप्न साकार हो गया।

एक सफलता दूसरी सफलता की चाह बढ़ा रही है। अब मैं फ्रान्स से इंगलैंड और इंगलैंड से फ्रान्स तक चैनेल को तैरकर पार करना चाहती हूँ। यदि मैं यह कर सकी, तो मुझे फ्रान्स से इंगलैंड और इंगलैंड से फ्रान्स तैरकर चैनेल पार करने वाली विश्व की प्रथम नारी होने का गौरव प्राप्त हो जायेगा और मेरी दूसरी अधूरी साध भी पूरी हो जायेगी।

अभ्यास

विषय

१. कुमारी आरती साहा ने तैरना सीखना कब और कहाँ शुरू किया ?

२. इंगलिश चैनेल कहाँ है और उसकी कम से कम चौड़ाई कितनी है ?

३. 'एक साध पूरी, दूसरी अधूरी'—इसका भाव स्पष्ट करो।

भाषा

४. 'श्रीगणेश करना'—इस मुहावरे का भाव स्पष्ट करो.

५. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—

क्षितिज, स्मृतियाँ, प्रेरणा, पश्चात्ताप, प्रवाह।

व्याकरण

६. निम्न वाक्य में आये हुये शब्दों के भेद बताओ :—

"पिता जी ने कितने लाड़-प्यार से पाला-पोसा।"

७. विशेषण और क्रिया-विशेषण में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर बताओ।

रचना

८. इस पाठ के आधार पर एक लेख लिखो जिसमें यह बताओ कि साहस से ही सफलता मिलती है।

: ३२ :

तब याद तुम्हारी आती है

[रामनरेश त्रिपाठी]

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर
कुछ गीत खुशी के गाती हैं।
कलियाँ दरवाजे खोल-खोल
जब दुनिया पर मुसकाती हैं।
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं।
हे जग के सिरजनहार प्रभो, तब याद तुम्हारी आती है ! ॥१॥

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती है।
मैदानों में, वन-बागों में,
जब हरियाली लहराती है।
जब ठण्डी-ठण्डी हवा कहीं से,
मस्ती ढोकर लाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो, तब याद तुम्हारी आती है ! ॥२॥

चुपचाप चमकते तारों की
महफिल जब रात सजाती है।
जब चाँद शान से उठता है,
दिल की दुनिया जग जाती है।

कुछ पता नहीं, लेकिन जरूर,
वह संदेशा कुछ पाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो, तब याद तुम्हारी आती है ! ॥३॥

हम देख रहे हैं, नदी रात-दिन,
हरदम बहती जाती है।
जाड़ा, गरमी, ऊँचा-नीचा,
सब कुछ वह सहती जाती है।
हम सुनते नहीं, समझते हैं,
वह जो कुछ कहती जाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो, तब याद तुम्हारी आती है ! ॥४॥

अभ्यास

विषय

१. इस पाठ के आधार पर बताओ कि भगवान् की याद कब-कब आती है ?

२. निम्न पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करो :—

हम सुनते नहीं, समझते हैं,
वह जो कुछ कहती जाती है।

भाषा

३. नीचे लिखे शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :—

सुबह, खुशी, खुशबू।

व्याकरण

४. 'चिड़िया' शब्द के करण कारक के एकवचन और बहुवचन के रूप लिखो।

५. इस कविता की पहली आठ पंक्तियों में वर्तमान काल के स्थान पर भविष्य काल का प्रयोग करो।

६. अन्तिम आठ पंक्तियों में वर्तमान काल के स्थान पर भूत काल का प्रयोग करो।

रचना

७. प्रातःकाल, वर्षाकाल और सायंकाल प्रत्येक का वर्णन एक-एक पैरे में करो ।

: ३३ :

समाचार-पत्र

[संकलित]

समाचार-पत्र सभ्यता के सूचक हैं। जिस देश में समाचार-पत्रों का प्रचार नहीं, उसकी गणना सभ्य देशों की कोटि में नहीं हो सकती। प्राचीन काल में समाचार मिलने में बड़ी कठिनाई होती थी और समय भी बहुत लगता था। एक ही देश में एक प्रान्त के निवासी बहुधा दूसरे प्रान्तों के लोगों का

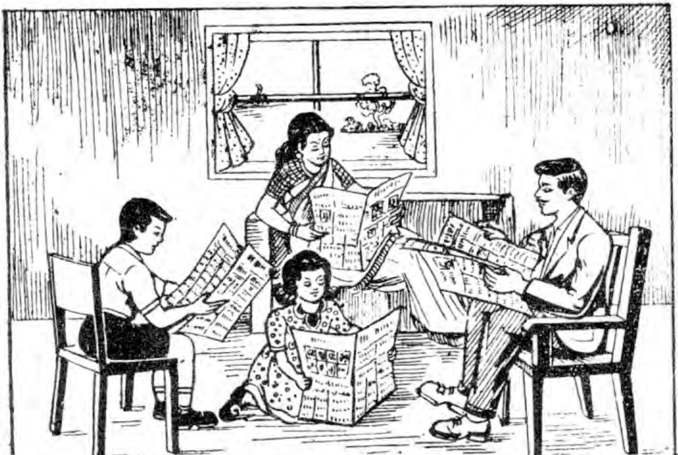

हाल न जान पाते थे। ऐसी दशा में विदेशों के समाचार मिलना तो बहुत ही कठिन था। एक देश से दूसरे देश तक बहुधा व्यापारी और यात्री ही समाचार ले जाया करते थे। वर्तमान समय में समाचार-पत्रों द्वारा हम घर बैठे दो-चार

पैसे देकर संसार-भर की ताजी-ताजी खबरें पढ़ सकते हैं। यह कोई साधारण सुविधा नहीं है।

दो सौ वर्ष पहले भारतवर्ष में एक भी समाचार-पत्र न था, पर अब इस देश में भी अंग्रेजी तथा प्रान्तीय भाषाओं में सैकड़ों समाचार-पत्र प्रकाशित होने लगे हैं। जहाँ दस-पन्द्रह वर्ष पहले समाचार-पत्र पढ़ने वालों की संख्या नगण्य थी, वहाँ आज मजदूर और किसान के हाथ में भी पत्र देखा जा सकता है। देश में इधर जो राजनीतिक ग्रान्दोलन हुए हैं, उन्होंने पत्रों की माँग और बढ़ा दी है।

आरम्भ में समाचार-पत्र सप्ताह में केवल एक बार प्रकाशित होते थे, परन्तु अब सभी उन्नत देशों में प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्रों की संख्या बढ़ गई है। बल्कि कुछ पत्रों के एक ही दिन में दो अंक निकलते हैं। दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों को प्रकाशित करने के लिए मुद्रणालयों ग्रौर संवाददाताओं का विशेष प्रबन्ध करना पड़ता है। कितनी ही कम्पनियाँ ऐसी खुली हैं, जो समाचार-पत्रों को तार या बेतार के तार द्वारा संवाद पहुँचाती हैं।

समाचार-पत्र के प्रकाशन का भार जिस मनुष्य पर होता है उसे सम्पादक कहते हैं। समाचार-पत्र की उन्नति बहुधा सम्पादक की योग्यता पर निर्भर करती है। सरकार और जनता के बीच में सम्पक रखना भी समाचार-पत्रों का एक काम है।

पत्र पढ़ने से जो मनोरजन होता है, उसकी बात का तो कहना ही क्या। जो सदा पत्र पढ़ते हैं वे जानते हैं कि यह कितना बड़ा नशा है। खाट से उठो, जो पत्र न मिले तो तबियत बेचैन है। चौबीस घण्टे में क्या नहीं हो सकता! विशेषत: आज के दिनों में, जब क्षण-क्षण संसार का मानचित्र

बदलता जा रहा है। मनोविनोद के सिवा समाचार-पत्र शिक्षा के अनेक आवश्यक अंगों की भी पूर्ति करता है।

समाचार-पत्र वह सबसे बड़ा साधन है जिसके द्वारा जनता को एक विशेष मत की पुष्टि और सहयोग के लिए तैयार किया जा सकता है अथवा जिसके द्वारा जनता का मत जाना जा सकता है। समाचार-पत्र को कई महत्त्वपूर्ण काम करने पड़ते हैं। वह जनता के विचारों का दर्पण है। वह प्रत्येक सदुपदेश का सहायक है। वह अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाला सूर्य है। वह नागरिक-जीवन के अधिकारों की रक्षा करने वाला है। समाचार-पत्र शोषण का विरोध कर सकता है और अफवाहों और झूठी खबरों का खण्डन करके जनता को सत्य के दर्शन करा सकता है। सारांश यह कि समाचार-पत्र प्रजातन्त्र की सबसे बड़ी शक्ति है।

किसी समय उपन्यासों और कथा-कहानियों का युग था। आज इन सब मनोरंजनों का नागरिक-जीवन में वह स्थान नहीं जो समाचार-पत्र का है। उसका कारण यह है कि आज किसी को इतना अवकाश नहीं कि वह बड़ी-बड़ी रचनाओं को सन्तोषपूर्वक पढ़ सके। दूसरी बात यह है कि समाचार-पत्र में मनोरंजन की भी काफी सामग्री रहती है। उसमें धारावाही उपन्यास भी रह रहता है और कहानियाँ भी। प्रसिद्ध-प्रसिद्ध विद्वानों के लेख भी उसमें रहते हैं, जिनके नवीन विचारों से अवगत होकर हम लोग अपने विचारों को उन्नत कर सकते हैं। समाचार तो मिलते ही हैं। जब देश के किसी भाग में अकाल पड़ जाता है, महामारी फैल जाती है अथवा और कोई आपत्ति आ जाती है, तब समाचार-पत्र तुरन्त ही हमको उसकी सूचना देते हैं और हमको इस योग्य बनाते

हैं कि हम अपने क्लेश-पीड़ित भाइयों की सहायता कर सकें। समाचार-पत्रों से हमको दूसरे देशों की उन्नति और नये-नये आविष्कारों का हाल मालूम होता है। उनमें बहुधा महान् पुरुषों के कार्यों का विवरण होता है। दूसरों की उन्नति को देखकर और उनकी उत्तम कार्यावली का हाल पढ़कर हमारे चित्त में भी वैसे ही काम करने की इच्छा उत्पन्न होती है। न्यायालय में दुराचारियों को जो दण्ड दिये जाते हैं उनका वृत्तान्त पढ़कर हम बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं

समाचार-पत्रों का एक काम सामाजिक कुरीतियों पर कुठार चलाना है। समाज-सुधारक किसी नगर या ग्राम में जाकर अपने व्याख्यानों द्वारा इतना कल्याण नहीं कर सकते, जितना समाचार-पत्रों में लेख लिखकर। व्याख्यानदाता थोड़े मनुष्यों को एकत्र करके घण्टे-दो-घण्टे ही व्याख्या दे सकते हैं, परन्तु समाचार-पत्र अपने लेखों से सम्पूर्ण देश में हलचल मचा सकते हैं।

समाचार-पत्रों में नई-नई पुस्तकों के सम्बन्ध में सम्पादकों तथा अन्य विद्वानों की समालोचना भी प्रकट की जाती है। इन समालोचनाओं से लेखकों को अपनी पुस्तकों के गुण और दोषों का पता लगता है। उससे साहित्य की उन्नति में बड़ी सहायता मिलती है।

समाचार-पत्रों में व्यापार की वस्तुओं के भाव और विज्ञापन भी प्रकाशित होते हैं। विज्ञापनों से व्यापार की वृद्धि होती है और माल के क्रय-विक्रय में बड़ा सुभीता भी हो जाता है। समाचार-पत्रों में नौकरियों के विज्ञापन निकलते हैं। इससे यह लाभ होता है कि स्वामियों को नौकरों की खोज में भटकना नहीं पड़ता और नौकरी करने वालों को भी नौकरी

ढूँढ़ने में कठिनाई नहीं होती। विवाह-सम्बन्धी तथा अन्य प्रकार के विज्ञापन भी समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते हैं।

आज हमारे यहाँ समाचार-पत्रों की उन्नति के लिए ही पत्र-सम्पादक-कला, संवाददाता आदि की परीक्षाएँ होती हैं। इससे बड़ा लाभ हुआ है। पत्रों का सम्पादन वैज्ञानिक हो गया है। चुने हुए समाचार इस ढंग से सजाये जाते हैं कि पहली नजर में ही आप उन्हें पा जायेंगे। विदेशों में तो विद्यार्थियों को समाचार-पत्रों का पढ़ना भी सिखाया जाता है।

विदेशों में सम्पादक और पाठक अनेक रीतियों से परस्पर पास जाकर नई स्फूर्ति पाते रहते हैं। परन्तु हमारे देश की दशा ही विचित्र है। यहाँ के सम्पादक जनता से दूर रहने में ही अपनी भलाई और प्रतिष्ठा समझते हैं। उनके पास पहुँचना लाट साहब के पास पहुँचना है। उन्हें न जनता से सहानुभूति है, न उसके दृष्टिकोण को समझने की चिन्ता। इसका परिणाम यह हुआ है कि जहाँ एक ओर जनता में उदासीन भावना की वृद्धि हुई है, वहाँ समाचार-पत्र के सम्पादकों और व्यवस्थापकों में आत्मविश्वास का नाम नहीं।

वर्तमान सभ्य संसार में समाचार-पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, भविष्य में इसका महत्त्व और भी बढ़ेगा। अपनी एक पुस्तक में समाचार-पत्रों के भविष्य के सम्बन्ध में लिखते हुए मिस्टर एच० जी० वेल्स कहते हैं :—

"सम्भव है, निकट भविष्य में समाचार-पत्र के रूप-रंग और आशय में महान् परिवर्तन हो जाय, परन्तु यह सत्य है कि जितना राजनीतिक महत्त्व उसका आज है उससे अधिक कभी भी नहीं हो सकता। प्रचार की दृष्टि से आवागमन के साधनों की सुगमता के कारण यह सम्भव हो जायगा कि कुछ

दैनिक ऐसे निकलें जो संसार-भर को समाचार दे सकें और उनके प्रत्येक घण्टे के नये-नये संस्करण छपें। उस समय प्रान्तीयता और एकदेशीयता की भावना का लोप हो जायगा।"

अभ्यास

विषय

१. पुराने समय में समाचार किन-किन साधनों से मिलते थे ?

२. आजकल समाचार किन-किन साधनों द्वारा मिलते हैं ?

३. 'संवाददाता' से क्या समझते हो ?

४. समाचार-पत्रों से क्या लाभ हैं ?

५. अपने नगर से प्रकाशित होने वाले हिन्दी समाचार-पत्रों के नाम लिखो।

भाषा

६. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ कोश में देखकर लिखो :—
संवाद, संवाददाता, सम्पादक, मुद्रणालय, रचना।

७. वाक्यों में प्रयोग करो :—
नागरिक, अधिकार, शोषण, मनोरंजन।

८. इस पाठ में प्रयुक्त विराम-चिह्नों को ध्यान से देखो और अपने लेखों में उनका उचित प्रयोग करो।

व्याकरण

९. इस पाठ के अन्तिम पैराग्राफ से अव्यय शब्दों को छाँटो।

१०. समुच्चयबोध किसे कहते हैं ? इस पाठ में से उदाहरण देकर समझाओ।

रचना

११. समाचार-पत्र देखकर लिखो कि उसमें किस-किस प्रकार के समाचार, लेख और विज्ञापन होते हैं।

: ३४ :

सर जमशेद्जी नसरवानजी ताता

[परिपूर्णानन्द वर्मा]

इतिहास साक्षी है कि किसी देश की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि वह पूर्णतः औद्योगिक तथा व्यावसायिक भी हो। बड़े-बड़े राष्ट्रों का उत्थान उद्योग और व्यवसाय में प्रगति के कारण ही होता है। आज भारत की दुरावस्था का बहुत बड़ा कारण यह भी है कि यह एक कृषि-प्रधान देश है और अपनी साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे बाहर वालों का मुँह देखना पड़ता है।

अब हम इस बात को अच्छी तरह से समझ गये हैं और इसीलिए हमारे देश में विशद औद्योगिक प्रयत्न हो रहे हैं। पर, एक जमाना ऐसा भी था जब इधर किसी का ध्यान भी नहीं जाता था और लोग औद्योगिक उन्नति की सोचते भी नहीं थे। किसी ने यह ध्यान भी नहीं दिया कि जो प्राचीन भारत संसार के उद्योग-व्यवसाय का केन्द्र था, वही इतना गिर गया है कि अपने लिए लिखने की स्याही तक नहीं बना सकता। ऐसे समय में एक व्यक्ति ने जन्म लिया जिसने नीति के इस वाक्य को अक्षरशः सिद्ध कर दिया—

उद्योगिन पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी

अर्थात् उद्योग से ही पुरुष सिंह लक्ष्मी को प्राप्त करता है। इस मन्त्र के ज्ञाता तथा इसकी सत्यता को प्रमाणित करने वाले और भारत में उद्योग-व्यवसाय की लहर फैला देने वाले, साथ ही आज भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक व्यावसायिक संस्था के जन्मदाता, का नाम जमशेदजी नसरवानजी ताता था।

वे पारसी थे। सैकड़ों वर्ष पहले फारस से आकर पारसी लोग बम्बई के तट पर बस गये थे तथा हमारे देश की सभ्यता में घुल-मिल गये। पारसियों का धर्म भी हमारे हिन्दू धर्म से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। वे अग्नि के पूजक हैं, पंचतत्व के उपासक हैं। हम अपने देवता को सुर कहते हैं, वे असुर कहते हैं। अब तो यह प्रमाणित हो गया है कि पारसी धर्म प्राचीन आर्य धर्म की ही एक शाखा है।

पारसियों में नया जोश था। नये देश में नई सत्ता स्थापित करनी थी। वे बड़े कुशल व्यवसायी थे तथा धीरे-धीरे उन्होंने अपना रोजगार चीन, जापान तक बढ़ा लिया था। यह शिक्षित समुदाय था और अंग्रेजी शिक्षा को बम्बई में सबसे पहले इसी समुदाय ने अपनाया था। जमशेदजी का जन्म इसी समुदाय में सन् १८३९ में हुआ था। यह व्यवसायी परिवार था। इसका सम्बन्ध प्रसिद्ध रोजगारी प्रेमचन्द रायचन्द से था। इस फर्म ने जमशेदजी को अपनी शाखा खोलने के लिए थोड़ी उम्र में ही चीन भेज दिया था। इसके बाद तो उस फर्म की ओर से वे बराबर विदेश जाते रहे।

शंघाई में अपने फर्म की शाखा खोलने में जिस योग्यता का परिचय उन्होंने दिया था, उससे प्रसन्न होकर इनको इंगलैंड भेजा गया था। उन दिनों अमेरिका में गृह-युद्ध चल रहा था, अतएव रुई के रोजगार में इनके फर्म को काफी मुनाफा रहा। पर लाभ के बाद हानि का भी दौरा आता रहा। इन सब व्यापारिक अनुभवों ने जमशेदजी की आँखें खोल दी थीं। वे यह समझ गये थे कि केवल आयात-निर्यात का रोजगार करने, विदेशी माल को भारत लाने और भारतीय माल विदेश पहुँचाने से देश की तथा उनके फर्म की वास्तविक औद्योगिक

उन्नति नहीं होगी। हिन्दुस्तान को अपना खुद का कल-कारखाना चालू करना चाहिए।

उस समय भारत में कल-कारखाने के नाम पर केवल सूती कपड़े के कारखानों को जन्म मिल चुका था, पर इन कारखानों का माल इतना रद्दी और मोटा था कि विश्व के बाजार में उसकी कोई वकत नहीं हो सकती थी। जमशेदजी ऐसी चीजें बनाना चाहते थे जो विदेशियों से मुकाबिला कर सकें, ग्रौर इसलिए उन्होंने रुई-उत्पादन के केन्द्र नागपुर में एम्प्रेस मिल की स्थापना की। इस मिल ने इतनी उन्नति की ग्रौर इतना अच्छा माल बनाने लगी कि सन् १९२० से यह अपने हिस्सेदारों को ३६० प्रतिशत तक मुनाफा देने लगी।

जमशेदजी की बुद्धि बड़ी उर्वर तथा तीक्ष्ण थी। वे समय की गति को अच्छी तरह पहचान गये थे। उनके सामने देश की दुरावस्था को सुधारने के लिए विशद कार्यक्रम था पर उचित समय पर ही उद्देश्य पूरा हो सकता है। भारत के औद्योगिक विकास का इतिहास भारत सरकार की आर्थिक नीति का इतिहास है। यदि सरकारी सहायता अधिक होती तथा देश के हित में नीति बरती जाती तो भारत का ग्रौद्योगिक उत्थान बहुत शीघ्र होता। पर ऐसा न हुआ ग्रौर महापुरुषों को अपने बल पर ही सब कार्य करने पड़े।

जमशेदजी ने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि पुरानी लकीर पीटने से कोई लाभ नहीं। नये उद्योग खोलना कहीं ग्रच्छा है बनिस्वत इसके कि पुराने कारखानों को खरीदकर उनको ठीक रास्ते पर लाया जाये। दो-एक पुराने कारोबार खरीदकर वे पछता चुके थे। नये औद्योगिक विकास के लिए उन्होंने ग्रपने पास से व्यय कर अपने कार्यकर्ताओं को विलायत भेजा

था। इनके एक उत्कट कार्यकर्ता तथा देशभक्त श्री बी० जे० पादशाह थे जिन्होंने अपने स्वामी की ओर से विश्व-भ्रमण किया था।

आज ताता आयरन एण्ड स्टील वर्क्स का बड़ा नाम है। जमशेदपुर का तातानगर एक आदर्श औद्योगिक नगर है। लोहे तथा फौलाद का कारखाना खोलने की बात जमशेदजी के दिमाग में सन् १८६६ में आई। तुरन्तु वे इसके पीछे पड़ गये। उपयुक्त स्थान तथा कोयले की खान के पास ही यह बड़ा कारोबार खुल सकता था। झरिया के कोयले के कारखानों के पास छोटा नागपुर में एक स्थान चुना गया। यही स्थान जमशेदपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्थान चुनने के बाद लिमिटेड कम्पनी बना दी गई तथा उसके शेयर बेचने का सवाल सामने आया। भारत में ऐसे शेयर बिकना सम्भव मालूम न पड़ा। इसलिए यूरोप तथा अमेरिका के बाजारों की शरण ली गई, पर काम न चला। अन्त में जमशेदजी के पुत्र ने बम्बई तथा कलकत्ता के बाजार में ही अपने शेयर रखे। स्वदेशी आन्दोलन के उस जमाने में हमारे देश में ही यह चालू पूंजी हाथों-हाथ बिक गई और १०,४७,००,००० रुपये की पूंजी से ताता स्टील वर्क्स खड़ा हो गया। आज इसमें ४४००० व्यक्ति काम करते हैं और करोड़ों का माल तैयार होता । गत महायुद्ध में ताता स्टील वर्क्स से मित्र-राष्ट्रों को बड़ी सहायता मिली। किन्तु, यह विशाल कार्य जमशेदजी के जीवन में पूरा न हो सका था। इस कार्य की पूर्ति उनके सुयोग्य पुत्र सर दोराबजी ताता ने की थी।

मैसूर राज्य को कावेरी नदी के जल से बिजली पैदा करते देखकर जमशेदजी ने भारत की बड़ी नदियों के जल का उपयोग करने का संकल्प किया और ताता हाइड्रो-इलैक्ट्रिक वर्क्स की

योजना की। लौनावाला की छिछली भील में किस प्रकार पानी इकट्ठा करके, कई पेचीदा रास्तों से पानी में अत्यधिक प्रभाव उत्पन्न करके, उसमें २,४४,००० घोड़े की शक्ति की बिजली प्राप्त की जाती है तथा बम्बई के तमाम कल-कारखानों को पहुँचाई जाती है, इसका रोचक वर्णन एक विद्वान इलैक्ट्रिकल इन्जीनियर ही कर सकता है। इस कारखाने द्वारा रेलवे-लाइन तथा पूना तक बिजली पहुँचाई जाती है। इस कम्पनी की चालू पूँजी ६०,५०,००० रुपये है।

जमशेदजी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। इनका सबसे बड़ा काम औद्योगिक क्षेत्र में था जिसमें उन्होंने एक नई भावना का संचार कर दिया था। नई खोज तथा नये उद्योग की जो प्रवृत्ति इन्होंने उत्पन्न की थी, वह आज भारत का पथ-प्रदर्शन कर रही है। आज भारत में बड़े-बड़े रोजगार ताता ने चालू कर रखे हैं। तेल-साबुन तक वे बनाते हैं। उनका बनाया सूती माल जितना अच्छा होता है उतना ही लोहा तथा फौलाद का माल। पर, केवल मशीन लगा देने से ही रोजगार नहीं चल निकलता। बड़ी छानबीन, खोज तथा कठिनाइयों को पार करना तथा विपत्तियाँ भेलनी पड़ती हैं। जमशेदनगर का इतिहास ही यदि ध्यानपूर्वक पढ़ा जाये तो इतना अनुभव हो जायेगा कि आदमी बड़े-बड़े कारोबार चला ले जाये। पर, जमशेद जी को इन अनुभवों की कठिनता से नहीं गुजरना पड़ा। यह कार्य उनके सुयोग्य पुत्र दोराबजी ताता ने किया। दोराबजी ऐसा पुत्र न होता तो जमशेदजी अपनी महत्वाकांक्षा को अपने मरने के बाद भी पूरी होते न देख सकते थे। वे अपना सभी काम अधूरा छोड़कर मरे थे। यहाँ तक कि बंगलौर में वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए उन्होंने जो संस्था

बनाई थी, उसका काम भी उनके मरने के बाद ही पूरा हुआ। इसलिए सर दोराबजी ताता का सदैव आदर के साथ हमें स्मरण रखना चाहिए।

जमशेदजी ने केवल रुपया ही नहीं कमाया, उसका सदुपयोग भी किया। वे केवल व्यवसायी ही नहीं थे, बहुत बड़े समाजसेवी भी थे। आज बम्बई की इतनी उन्नति का श्रेय भी उन्हीं को है। बम्बई की सुन्दरता में उनका बड़ा हाथ है। एशिया का सबसे अच्छा होटल ताजमहल उन्हीं के संकल्प का फल है। शिक्षा के कार्य में उन्होंने लाखों रुपया दान दिया। ताता की फर्म हर वर्ष लाखों रुपयों की छात्रवृत्ति देकर भारतीय छात्रों को विदेश भेज कर विशिष्ट शिक्षा दिलाती है। सामाजिक सेवा की शिक्षा के लिए भी इनकी एक संस्था है।

इस महापुरुष की तथा ताता परिवार की कथा बड़े महत्त्व की है। एक से एक धुरन्धर व्यक्ति एक के बाद एक आते और महान कार्य करते गये। जमशेदजी की मृत्यु सन् १९०४ में हुई थी। बम्बई में इनकी यादगार में जो इनकी विशाल मूर्ति खड़ी है, वह हमें सदैव देश की औद्योगिक सेवा के लिए प्रेरित करती रहेगी।

अभ्यास

विषय

१. ताता कम्पनी की स्थापना किसने और कब की ?
२. ताता कम्पनी क्या-क्या चीजें बनाती है।
३. छात्रों के लिए ताता कम्पनी क्या करती है ?
४. जमशेदपुर किस प्रदेश में है ?
५. ताता के कारखाने के लिए लोहा और कोयला कहाँ से आता है ?

भाषा

६. निम्न शब्दों के अर्थ बताओ :—

औद्योगिक, व्यावसायिक, उत्थान, प्रगति, दुरावस्था ।

७. निम्न शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :—

उन्नति, साधारण, कायर, नया, देश ।

व्याकरण

८. इस पाठ में से दस विशेषण शब्द छाँटो और उनके भेद बताओ ।

९. प्रश्नवाचक चिह्न कैसा होता है ? एक ऐसा वाक्य लिखो जिसके अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न लगता हो ।

१०. (" ") कोष्ठक के भीतर दिये चिह्नों को अवतरण चिह्न कहते हैं । इनका प्रयोग किसी दूसरे के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करते समय उसके आदि और अन्त में होता है । जैसे महात्मा बुद्ध ने कहा है, "किसी को दुःख मत दो ।"

: ३५ :

जमीन दो

[रामधारीसिंह 'दिनकर']

सुरम्य शान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो,
महान् क्रान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो।

जमीन दो कि देश का अभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि द्वेष का प्रभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि भूमिहीन लोग काम पा सकें,
उठा कुदाल बाजुओं का जोर आजमा सकें !

महा विकास के लिए जमीन दो, जमीन दो,
नये प्रकाश के लिए जमीन दो, जमीन दो।

जमीन दो, समाज से कड़ी पुकार आ रही,
जमीन दो कि एक माँग बार-बार आ रही।
जमीन मातृरूपिणी पुनीत है, पवित्र है,
जमीन, वारि, वायु का समान ही चरित्र है।

पुनीत कर्म के लिए जमीन दो, जमीन दो,
नवीन धर्म के लिए जमीन दो, जमीन दो।

जमीन चाहिए समाज के समत्व के लिए,
स्वराज्य के लिए स्वदेश के महत्व के लिए।
मनुष्यता के मन्त्र के लिए जमीन चाहिए,
बहुत दुखी किसान के लिए जमीन चाहिए।

विपन्न निःस्व के लिए जमीन दो, जमीन दो,
क्षुधार्त विश्व के लिए जमीन दो, जमीन दो।

जमीन दो कि शान्ति से नया समाज ला सकें,
जमीन दो कि राह विश्व को नयी दिखा सकें।
जमीन दो कि प्रेम से समत्व, सिद्धि पा सकें,
जमीन दो कि दान से कृपाण को लजा सकें।

सुरम्य शान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो,
महान् क्रान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो।

अभ्यास

विषय

१. इस कविता में किन-किन बातों के लिए जमीन माँगी है ?

२. निम्न पंक्तियों की व्याख्या करो :—

जमीन दो कि भूमिहीन लोग काम पा सकें,
उठा कुदाल बाजुओं का जोर आजमा सकें।

३. जमीन किससे माँगी गई है ?

भाषा

४. अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो :—

शान्ति, क्रान्ति, अभाव, द्वेष, पुनीत, नवीन, समत्व, स्वराज्य, स्वदेश, कृपाण।

५. 'जोर आजमाना', 'राह दिखाना'—इन मुहावरों का भावार्थ बताओ।

व्याकरण

६. कारक बताओ :—

शान्ति के लिए, देशका, समाजसे, कृपाणको।

७. विस्मयादिबोध चिह्न वाले दो वाक्य बनाओ।

८. इस पाठ में किन-किन चिह्नों का प्रयोग हुआ है ?

रचना

९. आचार्य विनोबा के भूदान आन्दोलन के सम्बन्ध में अध्यापकजी से पूछो और फिर इस कविता के भाव को समझकर बीस पंक्तियों में लिखो।

: ३६ :

रूस में पंचायती खेती

[राहुल सांकृत्यायन]

आधुनिक रूसी समाज का निर्माण बिलकुल नये ढंग से हुआ है। फलतः वहाँ का किसान दिन-पर-दिन खुशी और सम्पन्न होता जा रहा है। यह निर्माण सहयोग समितियों एवं पंचायतों द्वारा हुआ है। रूस भर में खेती-बारी का काम भी पंचायतों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार की जाने वाली खेती को "कोल्खोज्" कहते हैं।

गाँव में आसपास के किसान स्वेच्छा से एकत्र होते हैं और एक केन्द्रीय स्थान चुनकर वहाँ अपनी खेती को पंचायती रूप देते हैं। वे एक समिति की स्थापना करते हैं जिसके नियम बने हुए हैं। उन नियमों के अनुसार पदाधिकारियों का चुनाव होता है। एक अध्यक्ष, एक खेतों का प्रबन्धक और एक बहीखाता रखने वाला होता है। किसान आपस में से सौ-सौ, डेढ़-डेढ़-सौ काम करने वाले स्त्री-पुरुषों की सम्मिलित या अलग-अलग टोलियाँ बनाते हैं। प्रत्येक टोली का एक नायक चुना जाता है। इसका काम अपनी टोली की देखभाल करना होता है। इसके पश्चात् रसोइया और लड़कों की देखभाल के लिए दाई, धोबी, बढ़ई, लुहार आदि चुने जाते हैं। गाय, सुअर, घोड़े और मुर्गियों के अलग-अलग रखवाले चुने जाते हैं। फिर इन टोलियों को छोटी-छोटी टुकड़ियों में बाँट देते हैं। इन टुकड़ियों के भीतर भी सरदार या सरदारिनें होते हैं। टोली का नायक तो निरीक्षण के काम की अधिकता के कारण स्वयं काम नहीं करता, परन्तु छोटी

टुकड़ियों के सरदार अपने साथियों के साथ कुदाल लेकर स्वयं भी काम में जुट जाते हैं । उन्हें काम के अनुसार वेतन मिलता है ।

कोल्खोज् के अधिकारियों में अध्यक्ष, प्रबन्धक, बहीखाता रखने वाला और नायक निश्चित वेतन पाने वाले होते हैं ।

कोल्खोज् (पंचायती खेती) के संचालन के सबसे पहले नियम सन् १६३० में बने थे । पाँच वर्ष के काम के अनुभव के बाद सन् १६३५ में एक नया विधान बनाया गया। यह विधान रूस भर के कोल्खोजों के प्रतिनिधियों ने मास्को में एकत्रित होकर बनाया था ।

एक गाँव के कोल्खोज् के किसान सदस्यों ने एक सुयोग्य महिला को जिसका नाम मारिया था, अपनी प्रतिनिधि चुनकर मास्को की वैठक में भेजा था । उस महिला के द्वारा उन्होंने साथी स्टालिन के पास प्रेम और सम्मान का एक सन्देश भेजा था और लेनिन की समाधि पर चढ़ाने के लिए फूलों का एक गुच्छा । किसानों ने अपने सन्देश में जनता के युद्ध-मन्त्री से कहा था—

"हम अपनी महान् जन्म-भूमि की रक्षा के लिए तब तक तैयार हैं जब तक कि हमारे शरीर में रक्त की एक बूँद भी रहेगी ।"

उस सभा में आये हुए अन्य प्रतिनिधियों का अभिनन्दन करते हुए उस महिला प्रतिनिधि ने कहा था—

"हम तब तक दम नहीं लेंगे जब तक कि हमारे जिले में एक भी कोल्खोज् पिछड़ा रहेगा। हमें तभी सन्तोष होगा जब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण सोवियत संघ पर समृद्ध कोल्खोज् फैले हैं ।"

यह महिला अपने साथ अपनी पंचायत के काम का ब्यौरा भी ले गई थी । उस ब्यौरे के अनुसार मारिया के कोल्खोज्

ने उस साल २४,७११ एकड़ भूमि में प्रति एकड़ २ मन २६ सेर २ छटाँक के हिसाब से चुकन्दर पैदा किया था। स्टालिन ने उस महिला से कहा—

"पिछले वर्ष तुमने प्रति एकड़ जितना चुकन्दर पैदा किया था, क्या वचन दोगी कि इस वर्ष तुम उससे अधिक पैदा करोगी ?"

यह काम साधारण नहीं था परन्तु सामूहिक शक्ति के सामने कठिन-से-कठिन काम भी आसान हो जाता है। उस महिला को अपनी और अपने साथियों की इच्छा-शक्ति और उसके अनुसार कार्य-शक्ति पर पूरा भरोसा था। उसने उत्तर दिया—

"अच्छा, मैं वचन देती हूँ कि इस वर्ष चुकन्दर की पैदावार पिछले वर्ष से अधिक होगी।"

मारिया ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके दिखा दी। पंचायती खेती करने वाले किसान श्रमजीवियों से भी घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। उनका दावा है कि रूस के गाँव ऐसे उन्नत हो जायँगे कि गाँव और नगरों का सांस्कृतिक भेद बिल्कुल दूर हो जायेगा।

प्रत्येक कोल्खोज् में एक प्रयोगशाला होती है जिसका काम है वैज्ञानिक खोजों और उपायों द्वारा कोल्खोज् की उपज बढ़ाना तथा मिट्टी और हानिकारक कीड़ों आदि की समस्या को हल करना। कृषि और पशुपालन के ज्ञान को व्याख्यानों, स्वाध्याय-केन्द्रों और प्रदर्शनियों द्वारा बढ़ाना, अकाल, पौधों की बीमारी और हानिकारक घासों के दूर करने का उपाय सोचना, बीज, मिट्टी, खाद और कृषि की उपज की परीक्षा करना, मौसम की खराबी या टिड्डी आदि के खतरे से लोगों को सजग

करना, ढोरों के खिलाने के ढंग और नस्ल अच्छी बनाने के उपायों पर विचार करना आदि प्रयोगशाला के महत्त्वपूर्ण काम हैं।

पशुओं के चारे के प्रबन्ध और उनके स्वास्थ्य की देखभाल में बालक भी सहायता देते हैं। एक-एक बालक को एक-एक गाय की देखभाल का भार सौंप दिया जाता है। वह प्रतिदिन सुबह-शाम अपनी गाय को देखने जाता है। यदि गाय को कभी दुबली और बीमार पाता है और दूध कम देती है तो उस पर नियुक्त किये गये आदमी से पूछताछ करता है और गाँव के बाहर प्रयोगशाला में जाकर खबर देता है जहाँ उसकी चिकित्सा पर विचार किया जाता है। जिस लड़के की गाय दूध और स्वास्थ्य में अच्छी उन्नति करती है उसे इनाम भी मिलता है।

पंचायत की प्रथा ने सोवियत रूस के गाँवों के जीवन और आकार-प्रकार में भारी परिवर्तन किया है। ऐसा कोई भी गाँव नहीं है जहाँ स्कूल, अस्पताल, वाचनालय, क्रीड़ा-क्षेत्र, प्रसूति-ग्रह और स्नानागार न हों। बहुत-से कोल्खोजी गाँवों में टेलीफोन और डाकखाने भी हैं। ऐसा गाँव तो मिलेगा ही नहीं, जहाँ रेडियो न लगा हो।

पुराने गाँवों में जहाँ बीचों-बीच गिर्जा, उसके बगल में पुलिस, पुरोहितों के सबसे अच्छे घर, उनके पीछे खण्डहर तथा फूस की झोपड़ियों वाले किसानों के घर थे, वहाँ अब सार्वजनिक भवन, क्लब, रेडियो, सिनेमा, स्कूल, डाकखाना और मोटरें दीख पड़ती हैं।

बहुत-से कोल्खोजी गाँव तो इतने सुन्दर, स्वच्छ और समुन्नत हैं कि उनका मुकाबला पिछले जमाने के कितने ही शहर भी नहीं कर सकते।

अभ्यास

विषय

१. रूस में पंचायती खेती कब से शुरू हुई है ?

२. सहकारिता का रूसियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

३. पंचायती खेती के प्रबन्ध के बारे में बताओ।

४. प्रत्येक पंचायत की प्रयोगशाला किसानों के लिए क्या काम करती है ?

५. रूसी गाँवों की उन्नति और प्रति एकड़ पैदावार बढ़ने का क्या कारण है ?

भाषा

६. अर्थ बताओ और वाक्य बनाओ :—

सम्पन्न, स्वेच्छा, एकत्र, समिति, केन्द्र, सम्मिलित, निरीक्षण।

व्याकरण

७. समुच्चयबोध किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर बताओ।

रचना

८. 'मिल-जुलकर करने से कठिन काम भी आसान हो जाता है।' इस विषय पर बीस पंक्तियाँ लिखो।

दोहा मानसरोवर

[संकलित]

कबीर

कबिरा सङ्गत साधु की, हरे और की व्याधि ।
सङ्गत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि ।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप ।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ।।

कबिरा सोई पीर है, जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर ।।

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय ।।

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष को लोय ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ।।

गारी ही सों ऊपजै, कलह, कष्ट और मीच ।
हारि चलै सो साधु है, लागि चलै सो नीच ।।

मधुर वचन है औषधी, कटुक बचन है तीर ।
स्रवन द्वार ह्वै संच है, सालै सकल सरीर ।।

मारग चलते जो गिरे, ताको नाहीं दोस ।
कह कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस ।।

वृक्ष कबहूँ न फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर।।

रहीम

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती पर ही परत है, शीत, घाम और मेह।।

रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसत परोस।।

तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति सँचहि सुजान।।

सर सूखे पंछी उड़ैं, औरे सरन समाहिं।
दीन मीन बिन पछ के, कहु रहीम कहँ जाहिं।।

राम न जाते हिरन संग, सीय न रावण साथ।
जो रहीम भावी कतहुँ, होती आपन हाथ।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाइ।
टूटे से फिर ना मिले, मिलै गाँठि परि जाइ।।

अभ्यास

विषय

१. क्रमशः अच्छी और बुरी संगत के लाभ और हानियाँ बताओ।

२. 'कथनी और करनी' से क्या समझते हो ?

३. निम्न दोहों की व्याख्या करो :—

"अति का भला न……"

"रहिमन देखि बड़ेन……"

भाषा

४. नीचे लिखे शब्दों के खड़ी बोली के रूप बताओ :—

मारग, दोस, परमारथ, सरीर।

रचना

५. इस पाठ के पहले पाँच दोहों के भावार्थ लिखो।

: ३८ :

हार की जीत

[सुदर्शन]

(१)

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर होता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े के अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था और बड़ा बलवान्। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। ऐसी लगन, ऐसे आदर, ऐसे स्नेह से कोई व्यक्ति अपने सच्चे प्रेमी और हितैषी को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था—रुपया, माल, असबाब, जमीन—यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब एक गाँव से बाहर छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान् का भजन करते थे, परन्तु 'सुलतान' से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसा चलता है जैसे मोर घन-घटा को देखकर नाच रहा हो। गाँवों के लोग इस मोहमाया को देखकर चकित थे; कभी-कभी कनखियों से देख कर इशारे भी करते थे, परन्तु बाबा भारती को इसकी परवाह न थी। जब तक सन्ध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते तब तक उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा—"खड्गसिंह, क्या हाल है ?

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आये ?"

"सुल्तान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है ! देखोगे, तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।"

"क्या कहना। जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छबि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो गया हूँ।"

बाबा और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमण्ड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या मतलब ? कुछ देर आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल होने लगी, बालकों की-सी अधीरता से बोला—"परन्तु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा ?"

(२)

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचक कर सवार हो गये। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देखकर, खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द आ जाय, उस पर अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहु-बल था, रुपया था और आदमी भी थे। जाते-जाते बोला—"बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूंगा।"

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति-क्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये, और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

सन्ध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई—"ओ बाबा! इस कंगले की बात भी सुनते जाना।"

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले—"क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा—"बाबा, मैं दुखिया हूँ; मुझ पर दया करो। रामाँवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है ?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम तो आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया, और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है, तो उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले—"जरा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया, और उसकी गर्दन पर हाथ फेरते हुए कहा—

"बाबाजी यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परन्तु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा—"यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह !

एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना; नहीं तो मेरा दिल टूट जायगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ; केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमको इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे इस घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हार कर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा—"बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

बाबा भारती ने उत्तर दिया—"लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।"

और यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई सम्बन्ध ही न था। बाबा भारती चले गये; परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहे थे। सोचता था, कैसे उच्च विचार हैं? कैसा पवित्र भाव है? उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूँगा। इसकी रखवाली में वह कई रातें सोये नहीं। भजन-भक्ति के बदले रखवाली करते रहे। परन्तु आज उनके मुख पर चिन्ता की रेखा तक न दीख पड़ती

थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्यौछावर कर दिया। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

(३)

रात्रि के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भोंकते थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी या किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की ओर से बेपरवाह कर दिया था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया, और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में पश्चात्ताप के आँसू थे।

अन्धकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया। चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठण्डे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े, परन्तु फाटक पर पहुँच कर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई, साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और वह जोर से हिनहिनाया।

बाबा भारती दौड़ते हुए अन्दर घुसे। अपने घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिलकर रोता है। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते थे। बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते थे और कहते थे—"अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

थोड़ी देर के बाद जब वे अस्तबल के बाहर निकले तब उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था।

दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।

अभ्यास

विषय

१. 'सुल्तान' किसका नाम था? उसकी क्या विशेषता थी?
२. बाबा भारती कहाँ रहते थे और क्या करते थे?
३. खड्गसिंह कौन था? उसने बाबा भारती से क्या कहा?
४. अपाहिज को बाबा भारती ने घोड़े पर क्यों बिठाया और उसने क्या किया?
५. घोड़ा लेकर भागते खड्गसिंह को रोककर बाबा भारती ने क्या कहा?
६. "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।" इसकी व्याख्या करो।
७. डाकू खड्गसिंह घोड़े को वापस क्यों छोड़ गया?

भाषा

८. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो:—
आदर, स्नेह, हितैषी, वेदना, कीर्ति, सहसा, अपाहिज।

व्याकरण

९. 'अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा।' इस वाक्य में से संज्ञा, कारक, क्रिया-विशेषण, लिंग, वचन और काल बताओ :

१०. 'बाबा मैं दुखिया हूँ।' इस वाक्य में से संज्ञा, सर्वनाम, पुरुष और काल बताओ।

रचना

११. "दुखियों की सहायता करनी चाहिए।" इस विषय पर दो पैरे लिखो।

: ३६ :

भिखारी

[सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला']

वह आता,
पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों हैं मिलकर एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी-भर दाने को, भूख मिटाने को,
मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।
भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता भाग्य विधाता से क्या पाते।
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
ठहरो अहा, मेरे हृदय में है अमृत मैं सींच लूँगा,
अभिमन्यु-जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

अभ्यास

विषय

१. 'पेट पीठ दोनों हैं मिलकर एक।' भाव स्पष्ट करो।

भाषा

२. इनके लिए एक शब्द बताओ :—

दान देने वाला, भाग्य बनाने वाला, भीख माँगने वाला।

व्याकरण

३. इस पाठ में आये सर्वनाम शब्दों के स्थान पर संज्ञा शब्दों का प्रयोग करो।

४. दानेको, बाएँसे, पेटको, आँसुओंके, हृदयमें—इनके कारक-भेद बताओ।

रचना

५. इस कविता के आधार पर भिखारी का वर्णन अपनी भाषा में करो।

दो चीनी यात्री

[मन्मथनाथ गुप्त]

चीन हमारा पड़ोसी देश है। चीन ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, तब स्वाभाविक रूप से वहाँ के धार्मिक नेता बौद्ध पुस्तकों की खोज में भारत आये, और उन्होंने लौटकर जो कुछ लिखा, वह भारतीय इतिहास के लिए बड़े महत्त्व की वस्तु है। भारतीयों में इतिहास लिखने की परिपाटी कम थी, इस कारण इन वर्णनों से उस समय कैसी राज्य-पद्धति थी, लोगों के विचार तथा रहन-सहन कैसे थे, इसे जानने में बड़ी सहायता मिली है। दो सबसे प्रसिद्ध चीनी यात्री हो गये हैं—फाहियान और ह्य ूनसांग। फाहियान चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में, और ह्य ूनसांग हर्षवर्धन के समय में भारत आये थे।

फाहियान

फाहियान अपने घर चांगआन से, जिसे आजकल सियानफ कहते हैं, भारत के लिए रवाना हुए। यह ३९९ ई० यानी आज से साढ़े पन्द्रह सौ वर्ष पहले की बात है। आज जो कोई चीन से आता है, उसके लिए तो रास्ता साफ है। वह चीन के किसी बन्दरगाह से जहाज द्वारा सिंगापुर होता हुआ किसी भी भारतीय बन्दरगाह में आ सकता है। इसके अतिरिक्त हवाई जहाज में बैठकर थोड़े समय में हांगकांग, सिंगापुर, रंगून होता हुआ कलकत्ता पहुँच सकता है।

फाहियान ने सारे मध्य एशिया की पैदल यात्रा की, और वे छः साल में भारत पहुँचे। उनके साथ उनके पाँच और मित्र

थे। इनमें से दो रास्ते में मर गये और दो रास्ते की कठिनाइयों से घबड़ाकर वापस चले गये। इस प्रकार दो ही मित्र यानी फाहियान और उनके एक मित्र ही भारत पहुँचे। इन दो में से एक तो भारत में ही बस गया और अपने देश को वापस नहीं लौटा। फाहियान ही ऐसे निकले जिन्होंने अपनी यात्रा के सारे उद्देश्यों को छः साल में पूरा करके घर का रास्ता लिया।

फाहियान ने भारत में रहकर संस्कृत सीखी। उन्होंने बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। जब वे देश लौटे तो चीनी भाषा में जो पुस्तक उन्होंने लिखी, उसी से हम फाहियान तथा उस समय के भारत के विषय में बहुत कुछ जान पाते हैं। सबसे मजे की बात यह है कि फाहियान ने अपनी यात्रा का जो वर्णन लिखा, उसमें यहाँ के राजा चन्द्रगुप्त या अन्य किसी भी जीवित राजा का उल्लेख नहीं किया। इसकी उन्होंने जरूरत ही नहीं समझी। वे तो यहाँ की संस्कृति और साहित्य के विषय में जानने के लिए आये थे। यहाँ कैसी सरकार थी तथा यहाँ के लोग कैसे थे—इस सम्बन्ध में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है।

उन्होंने लिखा है कि यहाँ के लोग खुशहाल और सुखी थे। उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनके देश में आम लोगों पर जिस तरह के बन्धन थे, यहाँ भारत में उनका पूर्ण रूप से अभाव था। उन्होंने यह भी लिखा कि यहाँ टैक्स कम थे। जो लोग राजा की जमीन जोतते थे, उन्हें अपनी आय में से एक अंश देना पड़ता था। किसान आनन्द में थे। लोगों के साथ न्याय किया जाता था। दोनों पक्षों को सुनने का तरीका था। बहुत कम मामलों में शारीरिक सजा दी जाती थी। अपराधों के अनुसार लोगों पर जुर्माने किये जाते

थे। यदि कोई व्यक्ति राजद्रोह भी करता तो उसे मामूली सजा दी जाती थी। पर यदि कोई बार-बार राजद्रोह करता था तो उसका दाहिना हाथ काट लिया जाता था।

यदि फाहियान की बात मानी जाय तो उस समय भारत में कोई माँसाहारी नहीं था। यहाँ तक कि लोग प्याज, लहसुन भी नहीं खाते थे और न कोई शराब पीता था।

बौद्ध धर्म का बड़ा जोर था। सर्वत्र बौद्ध मठ बने हुए थे, जहाँ हजारों की संख्या में भिक्षु रहते थे। बौद्धों और ब्राह्मणों में कोई झगड़ा नहीं था, और दोनों एक-दूसरे के उत्सवों में शरीक होते थे। विदेशी होने के कारण किसी ने फाहियान के साथ किसी प्रकार का बुरा सलूक नहीं किया, बल्कि वे जहाँ भी गये, उनका स्वागत हुआ।

फाहियान ने मगध के निवासियों को बहुत दान देते हुए पाया। उन्होंने वहाँ सर्वत्र मुफ्त इलाज करने के लिए अस्पताल देखे। यहाँ पर यह बात भी बता दी जाय कि यूरोप में पहला निःशुल्क अस्पताल इसके पाँच सौ वर्ष बाद स्थापित हुआ। जानवरों के लिए भी अस्पताल थे। राहगीरों के लिए सरायें बनी हुई थीं। जब वे पाटलिपुत्र पहुँचे, तो उस समय तक अशोक महान् का राजमहल ज्यों का त्यों मौजूद था। इस राजमहल को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह बड़े-बड़े पत्थरों से बना हुआ था तथा उसमें तरह-तरह के काम थे। फाहियान इस महल को देखकर इतने आश्चर्य में पड़ गये कि उन्होंने लिखा है कि यह महल मनुष्यों द्वारा नहीं बनाया हुआ हो सकता। उन्हें यह देखकर दुःख हुआ कि भगवान् बुद्ध का जन्म-स्थान कपिलवस्तु जंगल बन चुका है और गया जहाँ पर बोधि-वृक्ष है वीरान-सा था।

पाटलिपुत्र में फाहियान को जो धर्म-ग्रन्थ चाहिए थे, वे मिले। इस प्रकार वे छः साल तक भ्रमण करने के बाद बंगाल के ताम्रलिप्ति नामक बन्दरगाह से सिंहल (लंका) पहुँचे। वहाँ दो साल रहने के बाद वे समुद्र की गड़बड़ियों के कारण बहुत दिनों तक भटकते-भटकाते ४१४ ई० में चीन पहुँच गये।

ह्यूनसांग

फाहियान के सवा दो सौ साल बाद ह्यूनसांग या यू-आन-चांग भारत में बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आये। वे ६२९ ई० में चीन से चले। उस समय उनकी उम्र २६ साल की थी, और वे उसी उम्र में एक विद्वान् के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। वे भी घूमकर मध्य एशिया के रास्ते से भारत में आये। जब वे कश्मीर पहुँचे, और कश्मीर के राजा को उनके आने का पता चला तो सड़कों पर फूलों और सुगन्ध का छिड़काव किया गया। वहीं पर ह्यूनसांग ने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही साथ शास्त्रों का भी अध्ययन किया। जब कश्मीर के राजा को यह ज्ञात हुआ कि वे यहाँ के संस्कृत ग्रन्थों की नकल साथ ले जाना चाहते हैं, तो उन्होंने ह्यूनसांग को बीस पंडित दिये और कहा कि इनसे आप नकल कराने का काम लीजिए।

कश्मीर में अपना काम समाप्त करने के बाद वे भारत में पूर्व की ओर बढ़े। नालन्दा विश्वविद्यालय में उनका स्वागत हुआ और वे पाँच साल तक नालन्दा में रहे। राजा हर्ष ने उन्हें बार-बार बुलाकर उनके मुख से धर्म की बातें सुननी चाहीं, पर वे उस समय गम्भीर अध्ययन में लगे हुए थे, इसलिए उन्होंने नम्रता के साथ इस निमन्त्रण को अस्वीकार किया।

कामरूप के राजा कुमार की तरफ से भी इसी प्रकार का एक निमन्त्रण आया, पर उन्होंने उसे भी अस्वीकार किया। जब तीसरी बार निमन्त्रण आया तो उसके साथ धमकी भी थी कि यदि वे नहीं गये तो उन्हें राजा कुमार अपनी फौज भेज कर पकड़वा ले जायेंगे। इस पर नालन्दा विश्वविद्यालय के शीलभद्र ने उन्हें सलाह दी कि वे कामरूप जायें।

जब हर्ष को पता लगा कि उनके अधीन कुमार ने इस प्रकार उन्हें जबदस्ती बुलवाया है, तब उन्होंने हुक्म दिया कि फौरन चीनी यात्री का मेरे पास भेज दो। इस पर कुमार ने कहा कि वह अपना सिर दे सकता है पर अपने अतिथि को नहीं भेज सकता। तब सम्राट् हर्ष की ओर से आज्ञा हुई कि सिर ही भेज दो। तब कुमार को अक्ल आई और उसने ह्यूनसांग को जाने दिया और घोड़ा, हाथी, फौज आदि लेकर उनके पीछे-पीछे चला। ह्यूनसांग को इतना सम्मान दिया गया कि उनके सभापतित्व में धर्म-विषयक सभा हुई।

ह्यूनसांग सारे भारत में घूमे, और जहाँ भी गये, वहाँ के लोगों से बहुत खुश रहे। उन्होंने यहाँ लोगों को खुशहाल और सुखी पाया, पर उनके सम्बन्ध में जो ब्यौरे मिलते हैं, उनसे ऐसा मालूम होता है कि उन दिनों भारत में धार्मिक झगड़े बहुत बढ़ रहे थे। बौद्ध धर्म की दो मुख्य शाखाएँ हीनयान और महायान आपस में लड़ रही थीं। बाद को इन्हीं झगड़ों के कारण देश कमजोर हो गया और परतन्त्र हो गया।

ह्यूनसांग ६४५ ई० में वापस लौटे। हर्ष ने बहुत चेष्टा की कि उन्हें रोकें, पर वे जिस काम के लिए आये थे, उसे पूरा करके भारत से विदा हुए। वे अपने साथ ६५७ संस्कृत पुस्तकें ले गये। बारम्बार हर्ष और कुमार ने उनसे विदाई

माँगी, और घोड़े दौड़ा-दौड़ाकर पीछे से उनसे जाकर मिले। एक विद्वान् के लिए यह सम्मान उचित ही था।

—'प्रसारिका' से साभार

अभ्यास

विषय

१. चीन के दो प्रसिद्ध यात्रिओं के नाम बताओ।

२. वे यात्री कब और किस लिए भारत आये ?

३. उनकी लिखी पुस्तकों में से हमें क्या पता लगता है ?

४. फाहियान को भारत पहुँचने में कितना समय लगा था और वह कैसे आया था ?

भाषा

५. निम्न शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—

परिपाटी, अतिरिक्त, सर्वत्र, ख्याति।

व्याकरण

६. 'चीन हमारा पड़ोसी देश है।' इस वाक्य में शब्द-भेद बताओ।

७. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :—

(क) विशेषण के——भेद होते हैं।

(ख) कारक——हैं।

(ग) क्रिया के मुख्य भेद——हैं।

रचना

८. पुराने जमाने में आने-जाने की कठिनाइयों और आजकल के यात्रा के साधनों पर दो पैरे लिखो।

हमारे राष्ट्र के उद्देश्य

[इन्द्र, एम० ए०]

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारतीय राष्ट्र के सम्मुख चार उद्देश्य स्थापित किये गये हैं। इन उद्देश्यों तक राष्ट्र को ले जाने का प्रयत्न करना हमारे शासन-कर्ताओं का कर्त्तव्य होगा। इन उद्देश्यों से विचलित होना महान् अपराध होगा। विशेषतया, भारत के राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री को जागरूक रहकर देखना होगा कि अपना राष्ट्र प्रतिक्षण इन उद्देश्यों की तरफ बढ़ता जा रहा है या नहीं। ये चार उद्देश्य निम्नलिखित होंगे—

१. **न्याय**—सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक। इन तीनों प्रकार के न्याय की अपने राष्ट्र में स्थापना करना शासन-विधान का प्रथम उद्देश्य होगा।

सामाजिक न्याय का अभिप्राय है प्रत्येक नागरिक को समाज में समान अधिकार प्राप्त होना तथा किसी ऊँच-नीच का भेद-भाव न होना। आर्थिक न्याय का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को दरिद्रता से रहित होकर सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करने के अधिकार प्राप्त होना। बहुत व्यक्तियों को निर्धन रखकर कुछ अल्प व्यक्तियों का धनवान

हो जाना आर्थिक अन्याय होगा। हमारा शासन-विधान देश में निर्धनता को समाप्त करेगा। सब को भरपेट खाना मिलेगा, स्वस्थ और सुन्दर मकान रहने को मिलेंगे, और अच्छे कपड़े पहनने को मिलेंगे। सब के लिए राष्ट्र द्वारा निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा और चिकित्सा का प्रबन्ध होगा। यह सब आर्थिक न्याय के अन्तर्गत होगा। राजनीतिक न्याय द्वारा प्रत्येक भारतीय नागरिक को शासन में भाग लेने का अधिकार दिया जायगा। प्रत्येक २१ वर्ष से ऊपर के व्यक्ति—स्त्री या पुरुष—को अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार होगा, जो उनकी तरफ से देश का शासन-प्रबन्ध करेंगे। प्रत्येक भारतीय नागरिक को किसी ऊँचे से ऊँचे पद तक पहुँचने और उस पर अपनी योग्यतानुसार नियुक्त होने का अधिकार होगा।

२. **स्वतन्त्रता**—विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और धर्म की। स्वतन्त्रता जीवन है—परतन्त्रता मृत्यु। हमारे राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक को वैयक्तिक स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। राष्ट्र की क्षति न करते हुए किन्हीं विचारों को वह धारण कर सकेगा, और उन्हें अभिव्यक्त कर सकेगा। वह किसी धर्म पर विश्वास रख सकेगा, उस पर आचरण कर सकेगा और उसका प्रचार कर सकेगा।

धर्म व्यक्ति का अपना ही विषय माना जायगा। राष्ट्र किसी व्यक्ति के धार्मिक विश्वास, आचरण व प्रचार में कोई हस्तक्षेप न करेगा। वह स्वयं धर्मनिरक्षेप रहेगा—जिसका अर्थ है कि वह किसी विशेष धर्म से पक्षपात न करेगा, परन्तु सब को समान रूप से धर्म की सुविधाएँ तथा स्वतन्त्रता प्रदान करेगा। राष्ट्र का यह धर्मनिरक्षेप स्वरूप यूरोप के देशों में, अनेक धार्मिक युद्धों तथा रुधिर-प्रवाहों के बाद, अनुभव के आधार

पर, स्थापित हुआ। भारतीय संविधान-सभा ने देश के अधिकतम कल्याण की दृष्टि से इस धर्म-निरक्षेप राष्ट्र के स्वरूप को स्वीकार किया है। तदनुसार धर्म को सर्वथा वैयक्तिक विषय निश्चय किया गया है और इस सम्बन्ध में प्रत्येक नागरिक को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करने का उद्देश्य निर्धारित किया है।

३. **समता**—प्रतिष्ठा और अवसर की। हमारे नवीन राष्ट्र में सब की समान प्रतिष्ठा होगी अर्थात् किसी को छोटा अथवा बड़ा नहीं माना जायगा। श्रमिकों और विद्वानों को बराबर माना जायगा। राष्ट्र के लिए उपयोगी श्रम—शारीरिक अथवा मस्तिष्क-सम्बन्धी—करने वाले सब व्यक्ति आदर के पात्र होंगे। प्रत्येक भारतीय को अवसर की समानता प्राप्त होगी। योग्यतानुसार किसी पद तक कोई पहुँच सकेगा। धर्म, जाति, लिंग अथवा जन्म-स्थान आदि के विवेक से किसी व्यक्ति पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होगा। सब को उन्नति के समान अवसर और अधिकार दिये जायेंगे।

४. **बन्धुता**—व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता निश्चित करने वाली। यह हमारे राष्ट्र का चरम उद्देश्य होगा। बन्धुत्व की मधुर भावना से ओत-प्रोत भारतीय एक राष्ट्र-परिवार में संगठित होंगे। सब परस्पर भाई-भाई अनुभव करेंगे और एक-दूसरे के दुःख को अपना दुःख मानेंगे। कोई व्यक्ति स्वार्थान्ध होकर परार्थ की हानि न करेगा। राष्ट्र-शरीर के प्रत्येक अंग को

समान रूप से स्वस्थ एवं सुखी रखना प्रत्येक व्यक्ति अपना

धर्म समझेगा। किसी को अस्पृश्य, अन्त्यज व शूद्र कहकर पतित नहीं माना जायगा। प्रत्येक उचित उपाय से व्यक्ति की गरिमा अथवा गौरव को उन्नत किया जायगा। व्यक्ति को आत्म-सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जायगा।

राष्ट्र को, इस तरह, एकता के सूत्र में ग्रथित करने का यत्न किया जायेगा। एक भाषा, एक संस्कृति, एक विधि-विधान एवं एक जातीयता द्वारा परस्पर बन्धुत्व की भावना को दृढ़ करते हुए, राष्ट्र को शक्तिशाली, समुन्नत तथा विश्वाग्रणी बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा।

किसी राष्ट्र के नागरिक ही उसे महान् एवं गौरवान्वित बना सकते हैं, या उसे अवनति के गढ़े में गिरा सकते हैं। केवल सुन्दर संविधान का बन जाना पर्याप्त नहीं, केवल उच्च उद्देश्यों की घोषणा हो जाना देश को आगे नहीं ले जा सकता। यदि इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रगति के मार्ग पर एक पग भी उठाया नहीं जाता, तो इन उद्देश्यों का संविधान में अंकित करना निरर्थक है।

हम ही इस राष्ट्र के नागरिक हैं। संविधान-सभा द्वारा निश्चित इन उद्देश्यों की पूर्ति करना हमारे ही हाथ में है। हमें अपने आचरण द्वारा इन न्याय, स्वतन्त्रता, समता और बन्धुता के महान् आदर्शों को पूरा करना है। यदि हम ऐसा न करेंगे, तो हम अपने नागरिक धर्म से पतित होंगे। अतः हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध करते हुए, संविधान में घोषित किये गये, इन उद्देश्यों को सफल बनाने के लिए और इन महान् आदर्शों को क्रियात्मक रूप देने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

अभ्यास

विषय

१. हमारे राष्ट्र के चार उद्देश्य कौन-कौन से हैं ?

२. सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय से क्या समझते हो ?

३. हमारे देश के नागरिकों को किस-किस बात की स्वतन्त्रता है ?

४. इस पाठ में 'समता' से क्या अभिप्राय है ?

५. 'बन्धुता' से क्या समझते हो ?

भाषा

६. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—

शासनकर्त्ता, जागरूक, भेद-भाव, नि:शुल्क, प्रतिनिधि, शासन-प्रबन्ध, शासन-विधान ।

व्याकरण

७. सर्वनाम किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं ?

८. इस पाठ के अन्तिम पैराग्राफ में आये संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों को छाँटो ।

रचना

९. 'प्रजातन्त्र' का अर्थ है प्रजा का तन्त्र अर्थात् ऐसा शासन-प्रबन्ध जिसमें प्रजा अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजती है ।

प्रजातन्त्र के सम्बन्ध में दस पंक्तियाँ लिखो ।

: ४२ :

मेरा गाँव

[शंभूनाथसिंह]

धन्य मेरा गाँव,
मेरा गाँव है यह ।
मैं जहाँ पैदा हुआ
खेला बढ़ा जिसकी धरा पर
पी नयन से अमर छवि जिसकी
न मैं हो तृप्त पाया;
खेत, बाग, नदी, तलैया, ताल, ऊपर,
पोखर, गड़हे, कुएँ
हैं एक-एक अनेक स्मृतियाँ ले पड़े ।
यह गाँव का बाजार, यह है मदरसा
यह सामने का वही बरगद वृद्ध
यह पीपल, कुआँ वह स्कूल का
जो स्कूल की कतवार से अब भर चुका है
पर जगत उसकी अभी स्थिर है
कि जिस पर बैठ पण्डितजी
नहाते और पूजा-पाठ करते थे,
उसी पर आज बन्दर खेलते हैं बैठकर,
बाजार के दिन डाकमुंशी भी
उसी पर बैठकर हैं बाँटते
अखबार, चिट्ठी या 'मनीआर्डर' ।

वहीं बाजार की उस छोर पर
है एक वह खंडहर,
कभी जो पुस्तकालय का भवन था ।
और ये पगडंडियाँ परिचिता मेरी,
यह सड़क, वह पुल कि जिस पर
बैठ कितनी बार थीं तुकबन्दियाँ कीं
मधुर सपनों से रँगा संसार को
मृदु कल्पना के पंख पर चढ़
विश्व-भर में घूम आया ।

*   *   *

घूमकर दुनिया बहुत कुछ
आज इनके बीच मैं फिर आ गया हूँ ।
गाँव मेरा है वही
फिर भी न जाने क्यों न अपना लग रहा है ।
हैं बदल कितने गये ये आदमी
किसने बदलने के लिए
मजबूर इनको कर दिया है ?

अभ्यास

विषय

१ 'हैं एक-एक अनेक स्मृतियाँ ले पड़े' की व्याख्या करो ।

२. इस पाठ में पण्डितजी, डाकमुंशी और पुल के बारे में क्या कहा है ?

भाषा

३. इनके अर्थ बताओ :—

धरा, धन्य, तृप्त, स्थिर, मजबूर ।

व्याकरण

४. इस पाठ में आये संज्ञा शब्दों को उनके भेद के अनुसार लिखो :

५. तीसरी पंक्ति में क्रिया का काल बताओ।

रचना

६. गाँव का वर्णन इस पाठ के आधार पर करो।

: ४३ :

मेरी कैलाश यात्रा

[स्वामी सत्यदेव परिव्राजक]

२० जुलाई की सवेरे हम श्री कैलाश के नीचे सिन्धु नदी के किनारे पहुँच गये। यहीं से कैलाश जी का मार्ग जाता है। सिन्धु नदी कैलाश पर्वतमाला से निकल कर आती है। इसी के किनारे-किनारे कैलाश जी की ओर हमको जाना था। सामने पर्वतों के बीच मार्ग कटा हुआ है। सिन्धु नदी ने इस मार्ग को पर्वत फोड़कर बनाया है। इसी में हम सब घुसे। यहीं से कैलाश-परिक्रमा का आरम्भ होता है।

परिक्रमा के पाँच-छः मील चलने पर मुख-मन्दिर मिलता है। यह भी गुफा खोदकर बनाया गया है। यह नदी की घाटी में पाँच-छः सौ फुट ऊँचे टीले पर बना अच्छा मन्दिर है। उसके अन्दर एक कोने में जहाँ जानवरों की हड्डियाँ पड़ी हुई थीं, हम लोगों को ठहरने का स्थान मिला। उसी को साफ करके वहीं रोटी बनाई और पेट-पूजा की। इसके बाद मन्दिर देखने गये। यहाँ एक अच्छा बड़ा पुस्तकालय है। इसमें तिब्बती भाषा के बहुत से ग्रन्थ देखने में आये। उनको कपड़े में लपेटकर सावधानी से रखते हैं। लामा लोग हर समय "ओम् माने पदमे हुँ" का जाप करते हैं। स्त्रियाँ भी संन्यासियों की तरह इन मठों में रहती हैं और अपने समय को बुद्ध भगवान् की सेवा में लगाती हैं।

कैलाश जी की प्रदक्षिणा करने का घेरा २५ मील का है और इसमें तीन दिन लगते हैं। कई यात्री दो दिन ही में मार्ग पूरा कर लेते हैं। तिब्बती लामा तो रात-दिन चलकर इसे पूरा कर

सकते हैं । जैसे जिसे सुविधा होती है, वैसा ही वह करता है। जो अमीर यात्री हैं, जिनके साथ नौकर और खेमे हैं, वे आनन्द से पाँच-चार दिन में अपने सुभीते के अनुसार यात्रा का आनन्द लूटते हैं । जिनके पास नौकर नहीं हैं वे जहाँ तक जल्दी हो सकती है करते हैं, क्योंकि सामान पीठ पर लादकर इन पहाड़ों की यात्रा नहीं हो सकती । जिनको अभ्यास है वे कर भी सकते हैं । मेरे लिए तो पाँच सेर बोझा लेकर चलना भी कठिन था । इसी कारण यहाँ मुख-मन्दिर से दूसरा कुली दरचन तक के लिए किया । मेरे पास बोझा अधिक था। इसलिए अपना कुछ सामान कपड़े-लत्तों के साथ एक गठरी बना मुख-मन्दिर के लामा के सुपुर्द कर दिया । गठरी को अच्छी तरह सींकर उस पर लाख की मुहरें लगा दीं जिससे लामा के गुरुभाई रात को सामान निकालकर हजम न कर जायँ । दरचन चौथा और आखिरी पड़ाव है। परिक्रमा करने वाले दरचन से शुरू करके दरचन ही लौट आते हैं, यही पूरी पच्चीस मील की परिक्रमा है ।

३१ जुलाई शनिवार—सवेरे पाँच मील तक सिन्धु के किनारे-किनारे चले गये । रास्ते में कई जगह बनैले कबूतरों को देखा, बड़ा आश्चर्य हुआ कि इन बर्फीले पर्वतों में यह भोलाभाला पक्षी कहाँ से आ गया ! रास्ते में दोनों ओर झरने देखे । कैलाश जी की चोटी मेरे दाहिने हाथ थी और बायें हाथ दूसरी पहाड़ियाँ । दोनों ओर से हिम ढल-ढलकर आ रही थी । आगे बढ़े, सामने कैलाश जी के भव्य दर्शन हुए ।

क्या ही अलौकिक दृश्य था ! यह अनुपम छटा ! श्री कैलाश जी का पर्वत सचमुच ईश्वरीय विभूति का अनोखा चमत्कार है । मैंने मन्दिर शिवालय बहुत-से देखे हैं, परन्तु

ऐसा प्राकृतिक शिवालय इस भूमण्डल पर कहीं नहीं है। जिस कुशल शिल्पी ने प्रथम शिवालय की रचना का नक्शा तैयार किया होगा, उसके हृदय में तिब्बत-स्थित इस नैसर्गिक शिवालय की मूर्ति अवश्य रही होगी, इसके बिना वह कदापि शिवालय नहीं बना सकता था। प्रकृति ने हिम द्वारा वही काट, वही छाँट, वही घेरा, वही चिकनाई, वही सजावट इस कैलाश पर्वत के निर्माण में की है। भारत में नकली शिवालय देखा करते थे, आज यहाँ शिवजी का स्थान देख लिया। २१८५० फुट ऊँचे इस कैलाश जी की महिमा का वर्णन कोई क्या कर सकता है ! किस गौरव के साथ यह चारों ओर देख रहा है ! उसकी दृष्टि अपने प्यारे भारत पर पड़ रही है, जहाँ उसकी प्रतिकृति बनाकर करोड़ों आत्माएँ "हर-हर महादेव !" की ध्वनि कर अपने को धन्य मानती हैं। चीन, जापान, श्याम, ब्रह्मा, लंका आदि देशों के बौद्ध इसकी परिक्रमा करने आते हैं।

अभ्यास

विषय

१. कैलाश जाने का मार्ग कैसा है और किसने बनाया है ?
२. कैलाश की परिक्रमा में कितना समय लगता है ?
३. 'ऐसा प्राकृतिक शिवालय इस भूमण्डल पर कहीं नहीं है।' इस वाक्य की व्याख्या करो।

भाषा

४. वाक्यों में प्रयोग करो :—
परिक्रमा, प्रदक्षिणा, भव्य, भूमण्डल, नैसर्गिक, निर्माण, गौरव।
५. पेट-पूजा करना, आनन्द लूटना, हजम कर जाना—इन मुहावरों का अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण

६. दो शब्दों के मेल से जो शब्द बनता है, उन दोनों शब्दों के बीच में संयोजक चिह्न (-) लगता है; जैसे इस पाठ में पाँच-छः, मुख-मन्दिर, पेट-पूजा आदि शब्दों में लगा हुआ है। ऐसे पाँच शब्द बनाओ जिनमें संयोजक चिह्न लगता हो।

रचना

७. अपने शहर या गाँव के किसी मन्दिर का वर्णन करो। घर से मन्दिर तक के रास्ते में क्या-क्या आता है, यह भी बताओ।

: ४४ :

वीर शिवाजी की चतुराई

[सुरेन्द्र शर्मा]

आज औरंगजेब का जन्म-दिन था। उसके उपलक्ष में आगरे के किले में दीवाने-आम का दरबार लग रहा था। लोगों की तरह-तरह की रंग-बिरंगी पोशाकें, रंगीन गलीचों और कमख्वाब की सजावट देखते ही बनती थी। मालूम पड़ता था मानो दीवाने-आम सचमुच रंगीन फूलों का बगीचा है। दरबारियों और राजाओं के शरीरों पर बहुमूल्य आभूषण सुशोभित थे। हीरा-पन्ना, मोती और विविध प्रकार के रत्नों की अद्भुत ज्योति जगमगा रही थी। बादशाह रत्नजटित सिंहासन पर बैठे हुए थे। दीवाने-आम की इस अनूठी सजावट के बीच, बादशाह औरंगजेब ऐसे मालूम पड़ रहे थे मानो स्वर्ग से भी सुन्दर इन्द्रपुरी के दरबार में राजा इन्द्र सिंहासन पर बैठे हों !

उसी समय अपने कुछ आदमियों के साथ रणशूर शिवाजी बादशाह के सामने पेश किये गये। मराठा राजा की ओर से औरंगजेब के पैरों के पास एक थाल में डेढ़ हजार सोने की मोहरें नजर की गईं और छः हजार रुपये निछावर में दिये गये। बादशाह खुशी के मारे फूला न समाया। वह बोला—"आओ, शिवाजी राजा !"

बादशाह का इशारा पाते ही शिवाजी पहले से निश्चित की हुई जगह पर खड़े कर दिये गये। उनकी जगह से बादशाह बहुत दूर थे। असल में उनका स्थान पाँचहजारी मनसबदारों

के बीच में था। अपमान की ज्वाला से शिवाजी का हृदय जल उठा। उन्होंने पूछा कि मेरे सामने वाला आदमी कौन है? उत्तर मिला—"महाराज यशवन्तसिंह।" इसी पर शिवाजी आग-बबूला होकर बोल उठे—"वही यशवन्तसिंह जो हमारी फौज के सामने से युद्ध में कई बार प्राण बचाकर भागे हैं? हमारी जगह उनसे भी नीचे रखी गई।"

क्रोध में भरकर शिवाजी शेर दरबार में गरज उठा—"मेरे हाथ में तलवार दे दो, अभी इस अपमान का मजा चखा दूँगा।" दरबार में खलबली मच गई। रामसिंह शिवाजी को तसल्ली देने लगे। औरंगजेब ने पूछा—"आखिर बात क्या है?"

रामसिंह ने उत्तर दिया—"शिवाजी बीमार हो गये हैं। वे दक्षिणी आदमी हैं, शाही सभा के अदब-कायदों से वाकिफ नहीं हैं।"

बादशाह ने हुक्म दिया—"बीमार राजा को बगल के कमरे में ले जाओ। उनके मुँह पर गुलाब-जल के छींटे दो, होश में आने पर वे अपने डेरे में चले जायें। दरबार खत्म होने तक उनके ठहरने की जरूरत नहीं है।"

दरबार के अपमान की ज्वाला से जले हुए शिवाजी अपने डेरे पर चले आये। उनका चेहरा तमतमा रहा था। उन्होंने सब लोगों से स्पष्ट कहा कि औरंगजेब ने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी। राजसभा का अपमान तो मेरे लिए मौत से भी बदतर है।

ये सब बातें बादशाह के कानों तक पहुँचीं। उनको शिवाजी पर सन्देह हो गया। इसलिए उन्होंने रामसिंह को हुक्म दिया कि आगरा शहर के बाहर, किले से ताजमहल जाने के रास्ते में, शिवाजी को नजरबन्द करके रखा जाय।

आज सम्मान की क्षुधा का भूखा शेर पिंजड़े में बन्द हो

गया। उसके कलेजे में आजाद होने के लिए एक टीस मारती थी। बहुत देर तक सोचने के बाद उसके दिमाग में आजाद होने का एक अजीब तरीका सूझा। शाही कर्मचारियों के पास शिवाजी ने एक आदमी भेजकर कहलवाया कि मैं बादशाह की राज-भक्त प्रजा हूँ। उनकी नाराजी के डर से काँपता हूँ। अगर बादशाह मेरा कसूर मुआफ कर दें तो मैं तहेदिल से शुक्रिया अदा करूँगा।

शिवाजी अपने साथ पल्टन की एक टुकड़ी लाये थे। उन्होंने बादशाह से प्रार्थना की कि मेरी फौज को देश वापस जाने की इजाजत दी जाय। शाही हुक्म से शिवाजी की पल्टन और संगी-साथी सभी महाराष्ट्र को लौट गये।

बीमारी का बहाना करके शिवाजी पलंग पर लेट गये। उन्होंने घर से बाहर निकलना बिलकुल बन्द कर दिया। बीमारी से छुटकारा पाने के लिए दान के रूप में वे ब्राह्मणों और साधुओं के यहाँ बड़ी-बड़ी टोकरियाँ भर-भरकर फल और मिठाइयाँ भेजने लगे। एक बाँस के एक डण्डे में दोनों ओर दो-दो टोकरियाँ लटका, बहंगी बनाकर कहार अपने कन्धों पर रख लेते थे। कई कहार दोपहर को फलों और मिठाइयों की बहंगियाँ शिवाजी के डेरे से मकान के बाहर ले जाते थे। कोतवाली के पहरेदारों ने कुछ दिन तक तो टोकरियों की जाँच की, बाद में बिना देखभाल किये ही फलों और मिठाइयों की टोकरियाँ बाहर जाने लगीं।

एक दिन दोपहर को शिवाजी ने बाहर पहरेदारों से कहला भेजा कि मेरी बीमारी बढ़ गई है, कोई मुझे तंग न करे। इधर घर के भीतर उनके सौतेले भाई हीराजी फर्जन्द उनके पलंग पर चादर ओढ़कर लेट रहे। उनका दायाँ हाथ

चादर के बाहर निकला हुआ था। उस हाथ में उन्होंने शिवाजी का सोने का कड़ा पहन लिया। यह कड़ा दूर से दिखाई देता था। शाम को शिवाजी और उनका लड़का शम्भाजी दो टोकरियों में मुर्दे की तरह लेट गये। वे पत्तों से ढक दिये गये। उनकी टोकरियों के आगे-पीछे चलने वाली कई टोकरियों में सचमुच फल और मिठाई भरी थी। सब कहार अपने कन्धों पर बहंगियाँ लिये एक लाइन में डेरे से बाहर निकले। पहरेदारों ने उन्हें बिलकुल नहीं रोका इसलिए कि यह तो रोज की बात थी, कोई नई बात थोड़े ही थी !

आगरा शहर के बाहर पहुँचकर कहारों ने एक सुनसान जंगल में मिठाई और फल की टोकरियाँ रख दीं। वे अपनी मजदूरी लेकर चले गये। अब तो सिंह पिंजड़े के बाहर था। शिवाजी और शम्भाजी टोकरियों से बाहर निकलकर तीन

कोस पैदल चले। वे एक गाँव में जा पहुँचे। उनके साथ दो मराठे नौकर थे। गाँव में शिवाजी के एक जज पहले ही से घोड़े लिये तैयार थे। शिवाजी ने संन्यासी का वेश बनाया और तुरन्त ही बालक शम्भाजी तथा कुछ और आदमियों को लेकर मथुरा को चल दिये। बाकी आदमी महाराष्ट्र को लौट गये।

शिवाजी के चले जाने के बाद एक रात भर तथा दूसरे दिन तीसरे पहर तक हीराजी उनके बिस्तर पर सोते रहे। सवेरे पहरेदारों ने खिड़की से देख लिया कि सोने का कड़ा पहने कैदी सो रहा है और नौकर उसके पैर दाब रहे हैं। दिन में तीन बजे हीराजी ने उठकर अपने कपड़े पहने और नौकर को साथ लेकर बाहर निकल गये। फाटक पर उन्होंने पहरे वालों से कहा—"शिवाजी के सिर में दर्द है, किसी को उनके कमरे में न जाने देना, हम दवा लेने जाते हैं।"

कई घंटे बीत गये। पहरेदारों को घर खाली-सा मालूम हुआ। घर में किसी के चलने-फिरने या बोलने-चालने की कोई आवाज नहीं आती थी। धीरे-धीरे उन्हें शक हुआ। वे सब के सब कमरे में घुस गये। कमरे में घुसते ही पहरेदारों के पैरों के नीचे से धरती निकल गई। उनके होश फाख्ता हो गये। चिड़ियाँ उड़ गईं! पिंजड़ा खाली पड़ा रह गया!

आगरे से चलकर शिवाजी मथुरा पहुँचे। अपने लड़के को कुछ मराठे ब्राह्मणों के यहाँ छोड़ दिया। दाढ़ी-मूँछ मुड़वाकर उन्होंने शरीर में भस्म लगाई और बिलकुल संन्यासी की-सी वेष-भूषा बना ली। एक लाठी को खोखला करके उसमें मोहरें और जवाहरात भर दी गईं। इस प्रकार उन्होंने रास्ते के खर्च का इन्तजाम कर लिया।

एक आदमी महन्त बना। बीच में एक बहुत साधारण चेले के रूप में शिवाजी चले। चालीस-पचास नौकर तीन दलों में बँटकर उनके आगे-पीछे चलने लगे। इन साधुओं का दल रात को राह चलता और दिन को कहीं एकान्त में आराम करता।

उधर शिवाजी के भागने की खबर बादशाह को मालूम हुई। चारों ओर धर-पकड़ की धूम मच गई। देश भर में तहलका मच गया। शाही फरमान दौड़ाया गया कि दक्षिण जाने वाले सब मुसाफिर पकड़ लिए जायँ। शिवाजी के जितने अनुचर आगरा के आस-पास थे, वे सब पकड़ लिये गये।

अलीकुली नाम के एक बादशाही फौजदार को शिवाजी के भागने की खबर मिल गई। शिवाजी अपनी टोली के साथ बनारस जा रहे थे। वे रास्ते में पकड़ लिये गये। आधी रात को वे गुप्त रूप से अलीकुली फौजदार के पास पहुँचे और उसे रिश्वत में एक लाख रुपये के मूल्य के हीरे-जवाहरात देकर अपनी रक्षा कर ली।

प्रयाग, काशी और गया की तीर्थयात्रा करके साधुओं की यह टोली आगरा छोड़ने के ठीक तीन महीने बाद अपनी राजधानी राजगढ़ में पहुँची। किले के फाटक पर पहुँचकर जीजाबाई को खबर की गई कि उत्तर से वैरागियों का एक दल आया है। जीजाबाई सामने आईं। साधुओं के महन्त ने आशीर्वाद दिया। पीछे वाले वैरागी ने अचानक जीजाबाई के पैरों पर सिर रख दिया। वे बड़ी विस्मित हुईं। यह माजरा उनकी समझ में न आया। तुरन्त ही छद्मवेश-धारी शिवाजी ने टोपी उतार कर अपना सिर माता की गोद में रख दिया। अचानक पुत्र को पहचानकर माँ के हृदय की कली खिल गई।

हर्ष के मारे उनकी आँखों में आँसू उमड़ आये। चारों ओर आनन्द के बाजे बजने लगे। राजगढ़ के किले से सलामी के लिए तोपें दगने लगीं। सब लोगों के हृदय में यह जानकर हर्ष का पारावार उमड़ उठा कि आज उनके हृदय-सम्राट् राजा शिवाजी सकुशल अपने देश में लौटकर आ गये हैं।

अभ्यास

विषय

१. औरंगजेब के दरबार में शिवाजी क्रुद्ध क्यों हुए ?

२. बादशाह को उन पर सन्देह क्यों हुआ ?

३. शिवाजी कैद में से कैसे निकल भागे ?

भाषा

४. नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखो :—
पैरों के नीचे से धरती निकलना, हृदय की कली खिलना, मजा चखाना।

व्याकरण

५. इस पाठ की अन्तिम चार पंक्तियों में से सर्वनाम और विशेषण छाँटो।

६. 'शिवाजी बादशाह के सामने पेश किये गये।' इस वाक्य में क्रिया का वाच्य बताओ।

रचना

७. प्रश्न नं० ४ में दिये गये मुहावरों का प्रयोग अपने बनाये वाक्यों में करो।

: ४५ :

ईमानदार लड़का

[विष्णु प्रभाकर]

पात्र

बसन्त—एक गरीब शरणार्थी लड़का

प्रताप—उसका छोटा भाई

पं० राजकिशोर—एक नेता

कृष्णकुमार—पं० राजकिशोर के परिचित

भीखू अहीर—बसन्त और प्रताप का संरक्षक

डाक्टर तथा दो राह चलते व्यक्ति

पहला दृश्य

[एक बड़े नगर का बाजार—स्टेज पर आने-जाने, लेने-देने का शोर, और भीड़ का दृश्य, फेरी वालों की पुकार। उन्हीं के बीच में एक लड़का, नंगे पैर, फटे कपड़े पहने, हाथ में तथा थैले में सामान सम्हाले भागता हुआ आता है। उसकी आयु लगभग बारह वर्ष की है। उसका नाम बसन्त है। वह कह रहा है—]

बसन्त—छलनी ले लो, बटन ले लो, दियासलाई ले लो।

[कोई उसकी बात नहीं सुनता। सब उसे देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। इसी समय एक खद्दरदारी व्यक्ति वहाँ से जाते दिखाई देते हैं। उन्होंने नोकदार गांधी टोपी लगाई हुई है। थैले में सामान भरा है। ये मजदूर नेता पं० राजकिशोर हैं। बसन्त उन्हें देखकर उनके पीछे भागता है। वे बाजार से घर लौट रहे हैं। वह भी उधर ही जाता है।]

बसन्त—साहब ! बटन लीजिए, देशी बटन, साहब ! दियासलाई लीजिए।

राजकिशोर—नही भाई ! मुझे कुछ नहीं चाहिए।

बसन्त—साहब ! एक तो लीजिए। देखिए बटन कितने सस्ते हैं।

राजकिशोर—भाई ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। जाओ, किसी और को दो।

बसन्त—साहब छलनी लीजिए। दूध छानिए, चाय छानिए…

राजकिशोर—मुझे नहीं चाहिए।

बसन्त—बटन…

राजकिशोर—नहीं।

बसन्त—दियासलाई…

राजकिशोर—नहीं, नहीं।

वसन्त (विनम्र स्वर में)—साहब ! एक छलनी ले लीजिए। दो आना ही तो कीमत है।

राजकिशोर–पर भाई ! मुझे नहीं चाहिए तो कैसे ले लूँ ?

वसन्त—अच्छा आप छः पैसे दे दीजिए।

राजकिशोर—भाई तुम तो···

वसन्त—साहब एक ले लीजिए; छः पैसे··· ।

राजकिशोर (तीव्र स्वर में)—परे हटो ! कह दिया मुझे नहीं चाहिए।

वसन्त (रुआँसा)—साहब ! अभी तक कुछ नहीं बिका। आप से आशा थी। साहब ! एक तो ले लीजिए।

राजकिशोर (नम्र होकर जेब से दो पैसे निकालते हैं)—अच्छा तुम्हें पैसे चाहिए। लो ये दो पैसे लो, और जाओ।

वसन्त (एकदम)—नहीं, साहब नहीं। ये पैसे नहीं लूँगा।

राजकिशोर—नहीं लोगे, क्यों ?

वसन्त—जी नहीं, आप छलनी खरीद लीजिए।

राजकिशोर—अच्छा ! एक छलनी में तुम्हें क्या बचेगा ?

वसन्त—दो पैसे।

राजकिशोर—तो दो पैसे ले लो, और समझ लो मैंने एक छलनी खरीद ली है।

वसन्त—नहीं साहब ! यह तो भीख है। मैं भीख नहीं लूँगा। आप छलनी ले लें।

[राजकिशोर पर इस बात का बड़ा असर होता है। वे जेब टटोलते हैं, पर और पैसे नहीं मिलते।]

राजकिशोर—भाई मेरे पास पैसे नहीं हैं। होते तो ले लेता। नोट है।

बसन्त (उदास होकर)—नोट है ? पैसे तो मेरे पास भी नहीं हैं। कुछ बिका ही नहीं।

राजकिशोर—तभी तो कहता था। अच्छा, कल ले लूँगा। या मेरे घर ले आना। किशनगंज में रहता हूँ।

बसन्त (एकदम)—नहीं साहब, आज ही लीजिए। आप नोट मुझे दीजिए, मैं अभी बाजार से भुना लाता हूँ।

राजकिशोर—भाई ! तुम तो···अच्छा लो, भुना लाओ। जल्दी आना।

बसन्त—अभी आया साहब। आप यहीं ठहरें, अभी पलक मारते ही आया।

[बसन्त भागकर बाजार जाता है। राजकिशोर वहीं खड़े रहते हैं। धीरे-धीरे पन्द्रह-बीस मिनट बीत जाते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है, वे उत्सुक होकर बाजार की ओर देखते हैं। तभी एक परिचित मनुष्य वहाँ आता है। उन्हें खड़े देखकर ठिठकता है।]

कृष्णकुमार—पंडित जी, जयहिन्द ! कहिए आप यहाँ कैसे खड़े हैं ?

पं० राजकिशोर (हँसकर)—भाई क्या बताऊँ, एक शरणार्थी लड़का चिपक गया था। एक छलनी दे गया है। पैसे थे नहीं, नोट भुनाने गया है।

कृष्णकुमार—वह लड़का गया है ?

राजकिशोर—जी।

कृष्णकुमार—कितनी देर हो गई ?

राजकिशोर—कोई पन्द्रह-बीस मिनट हो गये।

कृष्णकुमार—तब विश्वास रखिए, वह अब नहीं आयगा।

राजकिशोर—सच ?

कृष्णकुमार—अजी हर कोने पर आजकल ऐसे लड़के मिलते हैं, जिनका काम गिड़गिड़ाकर हम लोगों को ठगना है ।

राजकिशोर—ठगने का क्या है, एक रुपये की बात है !

कृष्णकुमार—श्रीमान् ! एक-एक करके अनेक होते हैं । पर हाँ, आपको क्या, आप तो गरीबों और मजदूरों के सेवक हैं । ले भी गया, तो घर में ही है ।

राजकिशोर (हँसकर)—निस्सन्देह सब उन्हीं का प्रताप है । पर भाई ! इसका यह मतलब नहीं है, वे इस तरह ठगी करते फिरें । बेईमानी करने से गरीबी नहीं जाती ।

कृष्णकुमार (हँसकर)—देख लीजिए ।

राजकिशोर—पर भाई ! वह लड़का मुझे तो भला लगता था । विश्वास नहीं होता । अच्छा चलो, कोई बात नहीं, समझेंगे एक रुपया देकर यह भी एक पाठ पढ़ा ।

कृष्णकुमार (और भी तेजी से हँसना)—पाठ सुन्दर है । भले लडके से पढ़ा है । अजी साहब ! भला न बने तो उसके जाल में कौन फँसे । अच्छा जयहिन्द, मैं तो चला ।

राजकिशोर—जयहिन्द !

[दोनों दो रास्तों पर बढ़ जाते हैं । परदा गिर जाता है ।]

दूसरा दृश्य

[नगर का वह भाग, जहाँ मध्यवर्ग के लोग रहते हैं । एक ओर किशनगंज का बोर्ड लगा है । हल्का शोर है । सन्ध्या हो गई है । लोग-बाग घरों की ओर लौट रहे हैं । उन्हीं के बीच में एक दुबला-पतला लड़का जल्दी-जल्दी आता है । वह नंगे पैर है । कपड़े फटे हैं । आयु लगभग नौ वर्ष है । उसकी शक्ल बसन्त से मिलती है । वह उसका छोटा भाई है । नाम प्रताप है । वह आते-जाते व्यक्तियों से कुछ पूछ रहा है । उसके मुख पर व्यग्रता है ।]

प्रताप—किशनगंज यही है ?

एक व्यक्ति—हाँ ।

प्रताप—राजकिशोर कहाँ रहते हैं ?

एक व्यक्ति—कौन राजकिशोर ?

प्रताप—जो लैक्चर देते हैं। मजदूरों की बस्ती में जाते हैं।

एक व्यक्ति—मैं नहीं जानता, आगे पूछो ।

[प्रताप आगे बढ़ जाता है और एक दूसरे व्यक्ति से पूछता है ।]

प्रताप—यहाँ राजकिशोर रहते हैं ?

दूसरा व्यक्ति—कौन ? पं० राजकिशोर ? वे जो मजदूरों के नेता हैं ।

प्रताप—हाँ, हाँ, वे ही ।

दूसरा व्यक्ति—उधर देखो । वह नीला परदा है न !

प्रताप—जी हाँ ।

दूसरा व्यक्ति—वहीं आवाज दो । ऊपर रहते हैं ।

[आगे बढ़ जाता है । प्रताप नीले परदे वाले मकान के नीचे जाकर पुकारता है—]

प्रताप—पं० राजकिशोर जी !

राजकिशोर—कौन ? (झाँककर देखते हैं) क्यों भाई क्या बात है ?

प्रताप—जी मुझे मेरे भाई ने भेजा है ।

राजकिशोर—तुम्हारा भाई ! ठहरो, मैं आता हूँ ।

राजकिशोर (नीचे आकर)—हाँ, तेरा भाई कौन है, बच्चे ?

प्रताप—आज दोपहर को उसने आपके हाथ एक छलनी बेची थी ।

राजकिशोर—हाँ, हाँ, आज मैंने एक लड़के से एक छलनी ली थी और उसे एक रुपये का नोट दिया था।

प्रताप—वह नोट भुनाने गया था, मगर जब भुनाकर लौट रहा था, तो मोटर की लपेट में आ गया। मोटर उसके ऊपर से निकल गई।

राजकिशोर (अचरज से)—क्या मोटर उसके ऊपर से निकल गई?

प्रताप (स्वर गिरता है)—उसके पैसे बिखर गये। सामान न जाने कहाँ गया? उसके दोनों पैर कुचल गये।

राजकिशोर (भय से)—पैर कुचल गये···

प्रताप (रुआँसा सा)—इसलिए वह आपके पास न आ सका। वह बेहोश हो गया था। बड़ी मुश्किल से उसे घर ले जाया गया। बड़ी देर में जब उसे होश आया, तो उसने मुझे आपके पैसे लौटाने को कहा। मैं आपके साढ़े चौदह आने लाया हूँ।

राजकिशोर (खोया हुआ सा)—मेरे साढ़े चौदह आने लाये हो! लाओ।

[पैसे ले लेते हैं। बालक प्रताप रोने लगता है।
वे एकदम चौंकते हैं।]

बच्चे! वह अब कहाँ है?

प्रताप—घर।

राजकिशोर—घर में और कौन है?

प्रताप—कोई नहीं।

राजकिशोर—कोई नहीं···!

प्रताप—मैं और मेरा भाई हम दोनों एक अहीर के घर रहते हैं। उसका नाम भीखू है।···

राजकिशोर—तुम्हारे माँ-बाप क्या···

प्रताप (रुदन बढ़ जाता है)—वे मारे गये। पारसाल भागते हुए उन्हें किसी ने मार डाला···।

राजकिशोर—उन्हें किसी ने मार डाला ? (एकदम जागकर) बच्चे ! रोओ मत। मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ। अभी···

प्रताप—आप चलेंगे ?

राजकिशोर—हाँ चलो। फिर देर हो जायगी। पर हाँ, तुम्हारा घर कहाँ है ?

प्रताप—अहीर टोले में।

राजकिशोर (पुकारकर)—अमरसिंह ! देखो मैं अहीर टोला जा रहा हूँ। तुम इसी वक्त डा० वर्मा को लेकर वहाँ आओ। कहना, एक लड़के की टाँगें मोटर के नीचे आकर कुचली गई हैं। जल्दी करो। भीखू अहीर का घर पूछ लेना। (मुड़कर) आओ बच्चे।

[प्रताप चकित विस्मित उन्हें देखता है, फिर ठगा-सा उनके आगे-आगे चलता है। क्षण-भर में वह भागने लगता है।]

तीसरा दृश्य

[अहीर टोले में एक कच्चा घर। स्टेज पर अन्दर ओसारे का दृश्य। जमीन पर फूस का ढेर। उस पर बसन्त लेटा है। गले तक कम्बल ढका है। वह रह-रह कर कराह उठता है। भीखू अहीर खाँस-खाँसकर क्रोध प्रकट करता है—]

भीखू अहीर—मैं कहता हूँ, तू देखकर नहीं चलता। आजकल के छोकरे हवा में उड़ते हैं। इतना बड़ा बाजार है, मोटर, ताँगे, साइकिल सभी कुछ हैं। कहते-कहते थक गया—आँख खोलकर चला करो। पर साहब बनने को जी चाहता है सभी का। भागेंगे···

बसन्त—चाचा ! गुस्सा न करो । बड़ा दर्द है ।

भीखू—दर्द तो होगा ही, और क्या आराम होगा ? अभी तो महीना भर पड़ा रहना पड़ेगा । कहता था, अस्पताल चला जा बेटा ! वहाँ जाते, तो आराम मिलता । दवा मिलती ।

बसन्त—चाचा बड़ा दर्द है । अब अस्पताल पहुँचा दो ।

भीखू—मैं पहुँचा दूँ ? मुझे बड़ी रकम सौंप रखी है ? कहाँ गया वह प्रताप ?

[प्रताप और राजकिशोर का प्रवेश]

प्रताप—यह रहा साहब !

राजकिशोर—क्या, यह तो जमीन पर लेटा है !

भीखू (एकदम चकित-सा)—नमस्ते साहब, जयहिन्द साहब, गरीब लड़का है । बेचारा मारा गया । टाँग टूट गई साहब…

बसन्त (चकित और भावावेश में)—आप ! आप आये हैं…

राजकिशोर—कहाँ चोट लगी है, बेटा ! देखूँ…

[राजकिशोर पास आकर टाँगें देखते हैं । किसी ने फर्स्ट एड दी है । पट्टी बँधी है । उसे छूते ही चीख निकल जाती है । रंग सफेद पड़ जाता है । बसन्त ओंठ भींचकर आह खींचता है ।]

बसन्त (दर्द से कराहते हुए)—मैं मोटर से टकरा गया था । इसलिए आपके पैसे न लौटा सका । आपने जाने क्या सोचा होगा ?

राजकिशोर—उस बात की चिन्ता न करो, बेटा ! मैंने डाक्टर बुलाया है । तुम ठीक हो जाओगे ।

[डाक्टर का प्रवेश]

भीखू (हर्ष से)—डाक्टर साहब आ गये ! डाक्टर साहब,

बसन्त यह रहा। डाक्टर साहब, मैंने उसे हल्दी डालकर दूध पिलाया है और हँ, हँ, हँ, शिलाजीत भी दी थी। तभी तो यह चुपचाप लेटा है। साहब गरीब लड़का है।

[डाक्टर पैर देखते हैं। बसन्त जोर से ओंठ भींचता है। प्रताप की आँखों से आँसू झरते हैं। वह कभी भाई को देखता है, कभी डाक्टर को। राजकिशोर उत्सुकता से पूछते हैं—]

राजकिशोर—क्यों डाक्टर ! ठीक हो जायगा न ?

डाक्टर—पंडित जी ! ऐसा लगता है एक पैर की हड्डी तो टूट गई है। स्क्रीन करके देखना होगा। दूसरा पैर ठीक है। पर इसे अभी अस्पताल ले जाना चाहिए, अभी। देर हो गई तो······

राजकिशोर—तो अभी ले चलो। मैं एम्बुलैन्स के लिए फोन करता हूँ।

डाक्टर—जी हाँ, कीजिए। मैं तब तक इन्जैक्शन लगाता हूँ।

बसन्त (आँख खोलकर)—आप ! आप क्या कर रहे हैं ? मैं गरीब हूँ न······

राजकिशोर—तुम गरीब हो बेटे ! तुम्हारे पास तो वह धन है, जिसके लिए दुनिया तड़पती है। (मुड़कर) डाक्टर साहब ! जब तक मैं नहीं आता, आप यहीं रहें, और देखिए पैसे की चिन्ता मत करिए। यह गरीब है पर इसमें एक गुण है, जो आजकल दुर्लभ है। यह ईमानदार है, और ईमानदार आदमी का जीवन कीमती है।

भीखू—हजूर ! आप ठीक कहते हैं। लड़का खरा सोना है। हजूर, तभी मैं इसे अपने घर में रखे हुए हूँ। इनके माँ-बाप को तो लड़ाई में किसी ने मार डाला। शरणार्थी है हजूर, डेढ़ साल से मेरे पास हैं। हजूर, दिन भर बाजार में मेहनत

करके कमाते हैं। हजूर बड़े ईमानदार हैं। ईमानदार की आखिर सुनी ही जाती है।

[भीखू अहीर बोलता-बोलता राजकिशोर के पीछे जाता है। डाक्टर, प्रताप की सहायता से इन्जैक्शन तैयार करते हैं। बसन्त आँखें बन्द कर लेता है। क्षण भर के लिए उसके मुख पर शान्ति और कृतज्ञता उभर आती है। परदा गिरने लगता है। फिर उठता है, डाक्टर सुई लगाते हैं, बसन्त ओंठ भींचता है। प्रताप भाई का सिर थामता है, और परदा गिर जाता है।]

अभ्यास

विषय

१. बसन्त ने दो पैसे लेने से क्यों इन्कार कर दिया ?

२. बसन्त रुपए का नोट भुनाकर वापस क्यों नहीं लौटा ?

३. "तुम्हारे पास तो वह धन है जिसके लिए दुनिया तड़पती है।" इस वाक्य का भाव स्पष्ट करो।

४. राजकिशोर का परिचय दो।

भाषा

५. वाक्यों में प्रयोग करो :—

परिचित, संरक्षक, खद्दरधारी, नम्र।

६. भावार्थ बताओ :—

(क) एक शरणार्थी लड़का चिपका गया था।

(ख) समझेंगे यह भी एक रुपया देकर एक पाठ पढ़ा।

(ग) भला न बने तो उसके जाल में कौन फँसे ?

रचना

७. इस नाटक की कहानी को अपनी भाषा में लिखो। इस नाटक को अपने अध्यापकों की सहायता से खेलो।

: ४६ :

हमारा राष्ट्रीय गान

जनगणमन-अधिनायक जय हे

भारत - भाग्यविधाता ।

पंजाब सिंधु गुजराट मराठा

द्राविड़ उत्कल वंग,

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधितरंग,

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिस माँगे,

गाहे तव जयगाथा ।

जनगण मंगलदायक जय हे

भारत - भाग्यविधाता ।

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय, जय हे ॥

★